अब वेब पर भी www.rashtriyaprastavana.com

उत्तर प्रदेश (लखनऊ व कानपुर) से एक साथ प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र

आर.एन.आई. नं.-यूपीएचआईएन/2011/37605

दैनिक राष्ट्रीय प्रस्तावना

गाँव से गवर्नेन्स तक

लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद,आजमगढ़, अयोध्या, झांसी,अम्बेडकरनगर, एटा,औरैया, अमेठी, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर,जौनपुर,श्रावस्ती,उरई,जालौन, फिरोजाबाद,हरदोई, मथुरा,कानपुर,ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर,सिद्धार्थनगर,सन्तकबीरनगर, नोयडा, सुलतानपुर, कासगंज सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

वर्ष : 15 अंक 57 लखनऊ, मंगलवार, 09 सितम्बर 2025 पृष्ठ: 8 मूल्य : 2.00

संक्षिप्त

कुलगाम मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया, जेसीओ समेत तीन सैन्यकर्मी घायल

कुलगाम। दक्षिण कश्मीर के कुलगाम ज़िले के गुड्डार इलाके में सोमवार को हुई मुठभेड़ में एक आतंकवादी मारा गया, जबकि एक जूनियर कमीशंड अधिकारी समेत तीन सैन्यकर्मी घायल हो गए। एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने बताया कि इलाके में कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया जानकारी मिलने के बाद गुड्डार इलाके में पुलिस, सेना और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई थी। मुठभेड़ के दौरान मारे गए आतंकवादी की पहचान नहीं हो सकी है, जबकि घायल हुए एक जेसीओ समेत तीन सैन्यकर्मियों में से एक की हालत गंभीर है। समाचार लिखे जाने तक अभियान जारी था।

ईडी ने उन्नति फॉर्च्यून होल्डिंग्स के प्रमोटर की 100.06 करोड़ संपत्ति कुर्क की

लखनऊ। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) लखनऊ जोनल कार्यालय ने मेसर्स उन्नति फॉर्च्यून होल्डिंग्स लिमिटेड (यूएफएचएल) और उसके प्रमोटर की 100.06 करोड़ रुपये की संपत्ति को अस्थायी रूप से कुर्क किया है। ईडी ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर यह जानकारी साधा करते हुए बताया कि मेसर्स उन्नति फॉर्च्यून होल्डिंग्स लिमिटेड (यूएफएचएल) की ओर से विकसित की जा रही 'द अरण्य परियोजना' में लगभग 100.06 करोड़ रुपये की संपत्ति को अस्थायी रूप से कुर्क किया है। यह संपत्ति मेसर्स यूएफएचएल के प्रमोटर अनिल मिठास एचयूएफ की है। इस संपत्ति को पीएमएलए, 2002 के तहत मेसर्स उन्नति फॉर्च्यून होल्डिंग्स लिमिटेड (यूएफएचएल) और उसके प्रमोटरों व निदेशकों के खिलाफ दर्ज मामले में जब्त की गई है।

आज पंजाब और हिमाचल प्रदेश के दौरे पर जायेंगे मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भीषण बाढ से जूझ रहे हिमाचल प्रदेश और पंजाब में हालात का जायजा लेने तथा राहत और पुनर्वास कार्यों की समीक्षा के लिए मंगलवार को इन दोनों राज्यों के दौरे पर जायेंगे। श्री मोदी पहले हिमाचल प्रदेश जायेंगे और बाढ तथा भूस्खलन से प्रभावित जिलों का हवाई सर्वेक्षण करेंगे। दोपहर को वह कांगड़ा पहुंचेंगे और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक में स्थिति की समीक्षा करेंगे। प्रधानमंत्री बाढ से प्रभावित लोगों तथा राहत और बचाव अभियानों में लगे राष्ट्रीय और राज्य आपदा मोचन के बलों तथा आपदा मित्रों के दलों के साथ भी बात करेंगे।

बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत सामग्री मानवीय संवेदना की महत्वपूर्ण कड़ी : योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बाढ़ प्रभावित राज्यों के लिए राहत सामग्री से भरे ट्रकों को दिखाई हरी झंडी

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

● योगी सरकार ने निभाई मानवीय जिम्मेदारी, उत्तराखंड, हिमाचल और पंजाब को 48 ट्रकों में भेजी राहत सामग्री

सहारनपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को सहारनपुर से उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और पंजाब के बाढ़ प्रभावित नागरिकों के लिए राहत सामग्री से लदे 48 ट्रकों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सरोवर पोर्टिको, अंबाला रोड पर आयोजित कार्यक्रम में सीएम योगी ने कहा कि राहत सामग्री मानवीय संवेदना की महत्वपूर्ण कड़ी है। संकट की इस घड़ी में उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता इन तीनों राज्यों के अपने बहन-भाइयों के साथ खड़ी है। इस दौरान सीएम योगी ने इस मौके पर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश को पांच-पांच करोड़ रुपये की अतिरिक्त सहायता राशि भी प्रदान की गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता की ओर से राहत सामग्री के रूप में उत्तराखंड, हिमाचल और पंजाब के नागरिकों के लिए भेजा जा रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में चल रहे 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के विजन का जिक्र करते हुए कहा कि विकास के नित नए प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं, साथ ही आपदा से निपटने के लिए सरकार के प्रयास अत्यंत प्रभावी साबित हो रहे हैं। एनडीआरएफ, आपदा मित्र और स्थानीय पुलिस जैसी संस्थाएं सक्रिय होकर राहत कार्य में अपनी भूमिका निभाती हैं। सीएम योगी ने कहा कि जब समाज और स्वयंसेवी संगठन पीड़ितों के साथ खड़े हो जाते हैं, तो सरकार के प्रयासों को और मजबूती मिलती है।

उत्तर प्रदेश में बाढ़ को सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए योगी ने कहा कि इस वर्ष अभी तक राज्य इस आपदा से बचा हुआ है, हालांकि निचले स्तर पर जल-भराव हुआ है। व्यापक पैमाने पर बाढ़ जैसी आपदाओं से निपटने के लिए समय पर किए गए प्रावधानों का परिणाम है कि आज हम इस आपदा को नियंत्रण के करीब पहुंच चुके हैं। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का जिक्र किया, जहां बाढ़ आई है, जैसे यमुना नदी का क्षेत्र–सहारनपुर, बागपत, गौतम बुद्ध नगर से लेकर प्रयागराज तक, जहां गंगा से मिलती है। साथ ही बिजनौर से बलिया तक गंगा के मुहाने, सरयू, घाघरा, रामगंगा और हिंडन नदी के इलाकों में पुख्ता व्यवस्था की गई है। इन नदियों में अगर जल ओवरफ्लो से जन-धन की हानि हुई, तो सरकार ने तत्काल राहत सामग्री पहुंचाई है। इस सहायता को पहुंचाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री कुंवर बृजेश सिंह उत्तराखंड जाएंगे, जबकि मंत्री जसवंत सैनी हिमाचल प्रदेश की राहत सामग्री और धनराशि लेकर जाएंगे। पंजाब के लिए सहारनपुर के नगर विधायक राजीव गुम्बर राहत सामग्री लेकर जाएंगे। सीएम ने कहा कि ये प्रतिनिधि वहां जाकर उत्तर प्रदेश वासियों की संवेदना प्रेषित करेंगे और सामग्री सौंपेंगे। जब पूरा देश संकट में एकजुट होता है, तो संकट, संकट नहीं रह जाता। उन्होंने कहा कि इन सभी के बावजूद, अगर अन्य सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी, तो उत्तर प्रदेश सरकार और 25 करोड़ की जनता हर पीड़ित के साथ खड़ी है और हर प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेगी।

इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य व प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी, राज्यमंत्री जसवंत सिंह सैनी, कुंवर बृजेश सिंह, विधायक कीरत सिंह, देवेन्द्र निम, महापौर डॉ. अजय कुमार, राजीव गुम्बर, मुकेश चौधरी, समेत कई जनप्रतिनिधि व अधिकारीगण मौजूद रहे।

दुर्भाग्यपूर्ण मौत पर पीड़ित परिवार को चार लाख रुपये का मुआवजा : मुख्यमंत्री

सीएम योगी ने कहा कि यूपी में बरसात के समय अगर कोई जंगली जानवर, सांप या बिच्छू किसी व्यक्ति को काटता है और दुर्भाग्यपूर्ण मौत होती है, तो पीड़ित परिवार को सरकार चार लाख रुपये का मुआवजा तत्काल उपलब्ध करवाती है। आपदा से अगर किसी गरीब का मकान गिर गया, तो नया आवास बनाने के लिए धन उपलब्ध कराया जाता है। अगर जमीन और मकान नदी में विलीन हो गया या कटान की चपेट में आ गया, तो परिवार को जमीन का पट्टा और मकान बनाने के लिए धनराशि उपलब्ध कराई जाती है।

सीएम योगी ने हिमाचल और उत्तराखंड राज्य को दी 5 करोड़ रुपये की अतिरिक्त सहायता

सीएम योगी ने कहा कि जो सामग्री उत्तर प्रदेश में वितरित की जाती है, उसी को आज इन 48 ट्रकों के माध्यम से उत्तराखंड, हिमाचल और पंजाब के बहनों-भाइयों के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा पर जोर देते हुए कहा कि अगर कहीं आपदा आएगी, उत्तर प्रदेश सहायता के लिए तैयार रहेगा।

चुनाव आयोग मतदाता पंजीकरण के लिए 'आधार' को स्वीकार करे: सुप्रीम कोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को चुनाव आयोग से कहा कि वह इस साल नवंबर में होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले बिहार की मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान मतदाताओं के लिए 'आधार' को 12वें दस्तावेज़ के रूप में स्वीकार करे।

न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने संबंधित पक्षों की दलीलें सुनने के बाद पहचान के प्रमाण के रूप में आधार को स्वीकार करने का निर्देश दिया। चुनाव आयोग ने पहले पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान मतदाताओं को शामिल करने के लिए 11 दस्तावेज़ों की सूची बनाई थी। शीर्ष अदालत ने चुनाव आयोग को बूथ स्तर के अधिकारियों को आधार स्वीकार करने के निर्देश जारी करने का आदेश दिया, जिसमें स्पष्ट किया गया कि अधिकारी इसकी प्रामाणिकता और वास्तविकता की पुष्टि करने के हकदार होंगे। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए पीठ ने माना कि आधार कार्ड नागरिकता का प्रमाण नहीं है।

पीठ ने यह भी कहा कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 23(4) को ध्यान में रखते हुए आधार किसी भी व्यक्ति की पहचान स्थापित करने के उद्देश्य से एक दस्तावेज़ है।

सोशल मीडिया बैन तो GEN-Z की संसद पर चढ़ाई

सुरक्षा बलों की गोलीबारी में 20 से अधिक की मौत, सैंकड़ों घायल

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल की राजधानी काठमांडू में भ्रष्टाचार के विरोध और सरकार के सोशल मीडिया पर प्रतिबंध के खिलाफ सोमवार को भारी संख्या में लोगों ने प्रदर्शन किया और उनके उग्र होने पर सुरक्षा बलों ने गोलीबारी की जिसमें कम से कम 20 प्रदर्शनकारियों की मौत हो गयी और 200 से अधिक घायल हो गये ।

नेपाली मीडिया के अनुसार प्रदर्शनकारी भ्रष्टाचार के विरोध में और सोशल मीडिया पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाये जाने के खिलाफ सुबह ही सड़कों पर निकल पड़े और बड़ी संख्या में लोग संघीय संसद परिसर में घुस गये। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस बैरिकेड तोड़कर और गेट फांदकर संघीय संसद परिसर में धावा बोल दिया। इससे पहले प्रदर्शनकारियों ने शांतिपूर्ण रहने की बात कही थी लेकिन मौके पर हालात बिगड़ गये। पुलिस ने उन्हें तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस और पानी की बौछारों का इस्तेमाल किया। जब प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षा एजेंसियों की चेतावनियों को अनसुना कर दिया तो पुलिस को उन पर गोली चलानी पड़ी जिसमें कम से कम 20 प्रदर्शनकारियों की मौत हो गयी है। इसके अलावा 200 से अधिक प्रदर्शनकारियों के घायल होने की सूचना है। घायलों का विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है।

काठमांडू में मामले की गंभीरता को देखते हुये संसद भवन, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आवास के पास के इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया गया है। सिर्फ़ काठमांडू ही नहीं अन्य शहरों में भी प्रदर्शन हो रहे हैं।

पंजाब ने केंद्र सरकार से मांगे 25 हजार करोड़

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब के जल संसाधन मंत्री बरिंदर कुमार गोयल ने सोमवार को प्रदेश के बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से उदारता दिखाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री बाढ़ से हुए नुकसान के मुआवजे के रूप में कम से कम 25 हज़ार करोड़ रुपये तत्काल जारी करने की घोषणा करें। इसके अलावा केंद्र सरकार के पास पहले से बकाया 60 हज़ार करोड़ रुपये भी तुरंत जारी किए जाएं। उन्होंने कहा कि निसंदेह प्रधानमंत्री बाढ़ आने के 25 दिन बाद पंजाब का दौरा करने वाले हैं, लेकिन इस संबंध में अब तक उन्होंने एक भी शब्द नहीं कहा। पंजाब भवन में आज पत्रकारों से गोयल ने बाढ़ की स्थिति के मद्देनज़र देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संभावित पंजाब दौरे के लिए उनका स्वागत करते हुए कहा कि प्रारंभिक आकलनों के अनुसार लगभग 4 लाख एकड़ की फ़सलें पूरी तरह से तबाह हो गई हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि जल संसाधन विभाग के धुसी बांध कहीं नहीं टूटे, लेकिन पानी के ओवरफ्लो होने के कारण नुकसान वाले बांधों और अन्य नुकसान को ठीक करने के लिए पानी उतरने के बाद बड़े प्रोजेक्ट शुरू किए जाने हैं, उनके लिए भी फंड की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि सड़कों के टूटने के कारण मंडी बोर्ड को भी भारी नुकसान हुआ है। इसी तरह स्कूलों और कॉलेजों की लगभग 3300 इमारतें प्रभावित हुई हैं। इसके अलावा बिजली के हज़ारों खंभे गिर गए व ट्रांसफॉर्मर पानी में डूब गए हैं, इन नुकसानों की भरपाई के लिए तुरंत फंड की ज़रूरत है।

● जल संसाधन मंत्री ने कहा, केंद्र सरकार 60 हज़ार करोड़ रुपये का बकाया भी तुरंत जारी करे

उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार के साथ केंद्र सरकार द्वारा लगातार भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि देश के अन्य राज्यों को प्राकृतिक आपदाओं के समय तुरंत विशेष पैकेज की घोषणा की जाती है, लेकिन पंजाब के संबंध में केंद्र सरकार अब तक सिर्फ टीमों के जरिये रिपोर्टें ही हासिल कर रही है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने अफ़ग़ानिस्तान के भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए तो राहत सामग्री तुरंत भेज दी, लेकिन पंजाब के लिए अब तक केंद्र सरकार ने कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा पिछले दिनों बाढ़ का जायज़ा लेने के लिए पंजाब दौरे के बाद बाढ़ के लिए माइनिंग को कारण बताने संबंधी दिए गए बेबुनियाद बयान से प्रदेश के जख्मों पर नमक ही छिड़का गया है। एक सवाल के जवाब में बरिंदर कुमार गोयल ने बताया कि पंजाब सरकार के पास इस समय आपदा प्रबंधन फंड में 13 हज़ार करोड़ रुपये हैं, लेकिन केंद्र सरकार की शर्तों के कारण प्रदेश सरकार को यह पैसा खर्च करने की अनुमति नहीं है। उन्होंने केंद्र सरकार से अपील की कि वह आपदा प्रबंधन फंड संबंधी नियमों में ढील दे, ताकि प्रदेशवासियों का भला हो सके।

न्यायालय के बार बार के आदेश को भी नहीं मान रहा है चुनाव आयोग : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि आधार को मतदाता के पहचान के प्रमाण के तौर पर एक दस्तावेज मानने के उच्चतम न्यायालय के बार बार के आदेश को चुनाव आयोग मानने के लिए तैयार नहीं जो एक गैरजिम्मेदाराना और शर्मनाक हरकत है।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने सोमवार को यहां जारी एक बयान में कहा कि आधार को चुनाव का अधिकार पाने के लिए पहचान का दस्तावेज मानने का उच्चतम न्यायालय तीसरी बार निर्देश दे चुका है लेकिन चुनाव आयोग न्यायालय के आदेश को मानने को तैयार नहीं है।

श्री रमेश ने कहा कि उच्चतम न्यायालय के आधार को पहचान के प्रमाण के रूप में स्वीकार करने के निर्देश का चुनाव आयोग पालन नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि न्यायालय के आदेश का पालन जरूरी है।

उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि न्यायालय ने तीसरी बार कहा है कि आधार को वोटर पंजीकरण के लिए एक वैध पहचान प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए लेकिन बार बार की हिदायत को आयोग नकार रहा है।

'ख़्वाबों का ताना-बाना' का विमोचन

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। प्रसिद्ध ग़ज़लकार और उत्तर प्रदेश सचिवालय में निजी सचिव के पद पर कार्यरत रतन कुमार श्रीवास्तव 'रतन' की लिखी पुस्तक 'ख़्वाबों का ताना-बाना' के द्वितीय-संस्करण का विमोचन बलरामपुर गार्डेन में चल रहे राष्ट्रीय पुस्तक मेले के मंच पर वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली की मुख्य कार्यकारी अधिकारी अदिति माहेश्वरी द्वारा किया गया। कम समय में ही पाठकों के बीच पुस्तक 'ख़्वाबों का ताना-बाना' इतनी पसंद की गई और खरीदी गई कि प्रकाशक को किताब का दूसरा संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। किसी भी रचनाकार के लिए यह बड़ी उपलब्धि है। वाणी प्रकाशन के सर्वेसर्वा अतुल माहेश्वरी ने बताया कि ऐसा कभी-कभी ही होता है, जब किसी रचनाकार की लिखी किताब का दूसरा संस्करण इतने कम समय में निकालने की आवश्यकता महसूस होने लगे। निःसंदेह यह रचनाकार, पाठक एवं प्रकाशक सभी के लिए प्रसन्नता एवं गौरव की बात तो है ही, हिंदी की ग़ज़लों के लिए भी एक शुभ संकेत है। इस अवसर पर प्रख्यात गायिका मालिनी अवस्थी भी मौजूद थीं।

नोएडा में अवैध पटाखा फैक्ट्री पकड़ी, तीन आरोपी गिरफ्तार

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

नोएडा। गौतमबुद्ध नगर जिले की दादरी थाना पुलिस ने एक अवैध पटाखा फैक्ट्री का पर्दाफाश करते हुए 3 तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से करीब 1500 किलो सामग्री जिसमें निर्मित, अर्धनिर्मित पटाखे, पटाखे बनाने की सामग्री व उपकरण बरामद किया है। जानकारी के अनुसार पुलिस को सोमवार को इस बाबत गोपनीय सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर पुलिस ने थाने के ग्राम बोडाकी में एक निर्माणाधीन मकान में पटाखे की अवैध फैक्ट्री का पर्दाफाश किया।

पुलिस ने मौके से 3 अभियुक्तों रामलखन पुत्र रामकुमार, आजाद पुत्र शौकीन और राजेन्द्र पुत्र डेहुगा को गिरफ्तार किया है।

● 1500 किलो निर्मित और अर्ध निर्मित पटाखे भी बरामद किए गए

● गिरफ्तार आरोपियों में दो गाजियाबाद और एक बहराइच का निवासी

उनके के कब्जे से 1004 किलोग्राम निर्मित पटाखा (अनार), 100 बोरी (नलकी) पटाखा (अनार बनाने की), 53.6 किलोग्राम मैग्नीशियम पाउडर, 74.8 किलोग्राम स्मैक लेस पाउडर, 68.4 किलोग्राम कटन पाउडर, 37.9 किलोग्राम टीआई पाउडर, 29.4 किलोग्राम द्रव्य पदार्थ (सिल्लीकेट एक कैन), 28.3 किलोग्राम गोंद (एक छोटा ड्रम), 12.6 किलोग्राम डब्ल्यू पाउडर, 10 किलोग्राम पीओपी पाउडर, 10 किलोग्राम फ़ेविकॉल (02 बाल्टी), 6 दाब मशीन (तली में रेत व फ़ेविकॉल का दवाब बनाकर पैक करने वाली), एक इलेक्ट्रॉनिक दाब मशीन मय मोटर, एक स्प्रे मशीन, एक इलेक्ट्रिक कांटा, 5 टेप कटर, 7 हथौड़ी, 2 मिसल, एक धुरमुट, 3 बण्डल डेटोनेटर तार, एक कार्टून सफ़ेद टेप, एक कार्टून पारदर्शी टेप, 9 कट्टे/बोरी लाल मिट्टी, 5 बोरी गत्ता (पैकिंग के लिए), 2 कार्टून लेवल (पटाखा पर लगाने के लिए), 2 खाली ड्रम प्लास्टिक, 2 ड्रम गत्ता, 3 छोटे ड्रम गत्ता, 3 टब प्लास्टिक, 2 क्रेट प्लास्टिक, एक मूढा (बैठने का) व एक पटली (बैठने की) बरामद की गई है।

गिरफ्तार अभियुक्तों में रामलखन पुत्र रामकुमार निवासी ग्राम भनैडा खुर्द, थाना टीला मोड़, गाजियाबाद, उम्र 33 वर्ष, आजाद पुत्र शौकीन निवासी ग्राम फरकनगर, थाना टीला मोड़, गाजियाबाद उम्र 20 वर्ष और राजेन्द्र पुत्र डेहुगा निवासी ग्राम चकरिया, थाना बेहडा, बहराइच, उम्र 19 वर्ष शामिल हैं। उनके खिलाफ क्राइम नम्बर 477/2025, धारा 5/9उ विस्फोटक अधिनियम में अपराध पंजीकृत किया गया है।

आमजन से व्यवहार ठीक रखें जनसेवक, दुर्व्यवहार बर्दाश्त नहीं : सीएम

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

- जनता दर्शन में प्रदेश भर से आये पीड़ितों की समस्याओं से मुखातिब हुए सीएम योगी, निस्तारण के दिए निर्देश

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को 'जनता दर्शन' किया। इस दौरान उन्होंने प्रदेश भर से आये पीड़ितों की शिकायतें सुनीं और उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। जनता दर्शन में 50 से अधिक पीड़ित पहुंचे। सहारनपुर से आई महिला ने बताया कि उनके पास राशन कार्ड नहीं है। जब वे राशन लेने गईं तो राशन डीलर अभद्रता किया। इस पर मुख्यमंत्री ने कार्रवाई के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर जनसेवक आमजन से व्यवहार ठीक रखें। किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार बर्दाश्त नहीं होगा। 'जनता दर्शन' में सर्वाधिक मामले जमीनी विवाद से जुड़े आए। प्रयागराज से आए सीआरपीएफ के जवान ने भी जमीन से जुड़े मामले को लेकर मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी बात रखी। इस पर मुख्यमंत्री ने स्थानीय प्रशासन को इस प्रकरण के शीघ्र निस्तारण का निर्देश दिया। शामली से भी एक महिला अपनी शिकायत लेकर आईं। उन्होंने बताया कि उनके पति असम में तैनात हैं। उन्होंने प्रयागराज में जमीन ली है लेकिन कब्जा लेने में परेशानी आ रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पत्र लेकर कार्रवाई का निर्देश दिया। 'जनता दर्शन' में आईं मंजू देवी त्रिपाठी ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बताया कि अपोलो में इलाज चल रहा है। इलाज के लिए आर्थिक सहायता की मांग की। आर्थिक सहायता उपलब्ध करा रही है। आप भी अस्पताल से एस्टिमेट बनवाकर भिजवाएं। आपके इलाज में खर्च की चिंता सरकार करेगी। गाजीपुर से दिव्यांग उधम यादव ने पेंशन बढ़ाने, आयुष्मान कार्ड, हैंडपंप व आवास दिलाने को लेकर मुख्यमंत्री को प्रार्थना पत्र दिया। उन्होंने तत्काल उनकी समस्या के समाधान और सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए अफसरों को निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने उधम यादव को इलेक्ट्रॉनिक वॉकिंग स्टिक भी प्रदान की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'जनता दर्शन' में अभिभावकों के साथ आए बच्चों को दुलारा-पुचकारा। नन्हें-मुन्नों के सिर पर हाथ फ़ेर अपनत्व का अहसास कराया। कुछ बच्चों की पढ़ाई के बारे में भी जानकारी ली। मुख्यमंत्री योगी ने बच्चों को चॉकलेट-टॉफी दिया और पढ़-लिखकर उनको उज्ज्वल भविष्य बनाने का आशीर्वाद दिया।

इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार हर जरूरतमंद मरीज को

स्कूल से लौट रहे छात्र के ऊपर से थार गुजरी, बाल-बाल बचा

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में स्कूल से लौट रहे क्लास-2 के छात्र को तेज रफ्तार थार ने टक्कर मार दिया। छात्र सड़क पर गिर गया। थार उसके ऊपर से गुजर गई। गनीमत रही कि छात्र थार के पहियों के नीचे नहीं आया, वर्ना बड़ा हादसा हो जाता। थार ड्राइवर मौके से गाड़ी सहित फरार हो गया। थार के नंबर के आधार पर पुलिस उसकी पहचान करने की कोशिश कर रही है। घटना सोमवार दोपहर करीब 1.30 बजे हजरतगंज में साहू सिनेमा के सामने हुई। घटना में छात्र के पैर में चोट आई है। वह घटना से काफी डरा हुआ है। छात्र की पहचान क्लास-2 का छात्र कुंज के रूप में हुई। वह स्कूल की छुट्टी होने के बाद पैदल ही घर जा रहा था। साहू सिनेमा के पास सड़क पार करने लगा। इस बीच तेज रफ्तार थार (यूपी 32 पीडब्लयू 6978) ने उसे टक्कर मार दी। वह सड़क पर गिर गया। थार उसके ऊपर से गुजर गई। थार का ग्राउंड क्लीयरेंस अधिक होने के कारण वह पहियों की चपेट में आने से बच गया। न ही थार में फंसा। आसपास के लोगों ने कुंज को सड़क से उठाया। वह डर के मारे थर-थर कांप रहा था। उसके पैर में चोट आई है। लोगों ने उसे जनपथ पुलिस चौकी पहुंचाया है। पुलिस ने उसके परिजनों से संपर्क किया है। पुलिस की प्राथमिक जांच में आया है कि, थार ड्राइवर ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए छात्र पर गाड़ी चढ़ा दी। घटना के बाद बिना रुके फरार हो गया। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। घटना के बाद थार ड्राइवर तेजी से हजरतगंज चौराहा होते हुए राजभवन की तरफ भाग गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि थार में पीछे नंबर प्लेट नहीं लगी थी। आगे नंबर प्लेट लगी थी। राहगीरों ने उसका वीडियो बना लिया। उसे पुलिस को दिया है। पुलिस उसके आधार पर थार का विवरण खंगाल रही है।

'शिक्षित बचपन और स्वस्थ परिवार' की नींव पर यूपी बनेगा विकसित

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 'विकसित यूपी अ2047' का विजन सामने रखते हुए साफ कर दिया है कि आने वाले 22 वर्षों में उत्तर प्रदेश का भविष्य 'शिक्षित बचपन और स्वस्थ परिवार' की थीम पर गढ़ा जाएगा। इसका लक्ष्य है कि प्रदेश को न केवल 6 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाया जाए, बल्कि समाज के हर वर्ग को शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं से सशक्त किया जाए। राज्य सरकार के प्रवक्ता ने बताया कि विजन 2030 और 2047 के लक्ष्यों के तहत प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को व्यापक रूप से सुदृढ़ करने की योजना बनाई गई है। 2030 तक 50 प्रतिशत घरों और 2047 तक सभी घरों को मेडिकल इंश्योरेंस से कवर करने का लक्ष्य रखा गया है। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को एसडीजी टारगेट के अनुरूप लाना प्राथमिकता में है। इसके साथ ही प्रदेश में 2 नए एम्स, 3 नए फार्मा पार्क और 2 नए मेडिकल डिवाइस पार्क की स्थापना होगी। स्वास्थ्य कार्यबल की घनत्व को बढ़ाकर 40 प्रति हजार तक ले जाने का रोडमैप तैयार किया गया है। मेडिकल टूरिज्म, बाल पोषण और हेल्थकेयर रिसर्च को रणनीतिक स्तंभ बनाकर प्रदेश को वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य क्षेत्र में नई पहचान दिलाने की दिशा में काम किया जा रहा है। 'ज्ञानदीप व युवा शक्ति' के तहत 2047 तक उत्तर प्रदेश को वैश्विक कार्यबल तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरसी (एफएलएन) को मजबूत किया जाएगा और स्कूलों में डिजिटल क्लासरूम, ई-लर्निंग और एडटेक को बड़े पैमाने पर लागू किया जाएगा। शिक्षकों के प्रशिक्षण और रिसर्च-इनोवेशन को बढ़ावा देने पर विशेष बल रहेगा। साथ ही उद्योग 4.0 की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए युवाओं को स्किलिंग और ड्यूल एजुकेशन सिस्टम के जरिए तैयार किया जाएगा। समावेशी शिक्षा और वैश्विक स्तर की वर्कफोर्स ट्रेनिंग को यूपी की नई पहचान बनाकर प्रदेश को ज्ञान और कौशल के केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएंगे। 2017 से पहले प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों ही क्षेत्रों की स्थिति बेहद चिंताजनक थी। ग्रामीण इलाकों में स्कूलों की पहुंच सीमित थी और अधिकांश संस्थानों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। शिक्षक अनुपस्थिति, किताबों और शिक्षण संसाधनों की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई अधूरी रह जाती थी, जिसके चलते बड़े पैमाने पर छात्र ड्रॉपआउट दर बढ़ रही थी। इसी तरह स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति भी कमजोर थी, जहां पर्याप्त मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों की कमी के कारण आमजन को बुनियादी इलाज तक आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता था। बीते साढ़े आठ वर्षों में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं। स्कूल चलो अभियान और शारदा कार्यक्रम के तहत 40 लाख नए बच्चों का नामांकन हुआ, वहीं आरटीई विस्तार से शिक्षा का अधिकार पाने वाले बच्चों की संख्या 22 हजार से बढ़कर 4.3 लाख तक पहुंच गई और 638 करोड़ रुपये की फीस प्रतिपूर्ति सुनिश्चित की गई। इसके साथ ही ऑपरेशन कायाकल्प के माध्यम से प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 19 मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराया गया, जबकि अटल आवासीय विद्यालय प्रदेश के 18 मंडलों में संचालित होकर गरीब और वंचित बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा रहे हैं। प्रोजेक्ट अलंकार से माध्यमिक स्कूलों में पुस्तकालय, लैब, हॉल, पेयजल, शौचालय और विद्युतिकरण जैसी सुविधाओं को जोड़ा गया। बीते वर्षों में प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की दिशा में बड़े कदम उठाए गए हैं। मेडिकल कॉलेजों और स्वास्थ्य केंद्रों के नेटवर्क का विस्तार किया गया, जबकि जन औषधि केंद्रों और प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना जैसी पहलों ने गरीबों और जरूरतमंदों को बड़ी राहत पहुंचाई।

नोएडा, लखनऊ के घर खरीदार उप्र रेरा शिकायतों में सबसे आगे

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश भू-सम्पदा नियामक प्राधिकरण (यूपी रेरा) के अनुसार गौतम बुद्ध नगर, लखनऊ, गाजियाबाद, वाराणसी और मेरठ में रियल एस्टेट परियोजनाओं से संबंधित उपभोक्ता शिकायतों की संख्या सबसे अधिक हैं। यूपी रेरा को रेरा अधिनियम की धारा 31 के तहत 58,545 शिकायतें मिली हैं। प्राधिकरण ने रविवार को एक बयान में कहा कि इनमें से 50,812 मामलों का निपटारा किया जा चुका है, जो 85.20 प्रतिशत की निपटान दर को दर्शाता है। इसके अनुसार उत्तर प्रदेश में दर्ज की गई शिकायतें देश भर में दर्ज सभी उपभोक्ता शिकायतों का 39 प्रतिशत हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक 2025 में यूपी रेरा में 2,394 शिकायतें दर्ज की गई हैं, जिनमें से 1,810 का निपटारा हो चुका है। प्राधिकरण ने कहा कि ज्यादातर शिकायतें कब्जे में देरी, धन वापसी और प्रवर्तकों के ब्याज भुगतान से संबंधित हैं। बयान में कहा गया, शिकायतों का वितरण राज्य के शहरी केंद्रों के विकास की गति को भी दर्शाता है। उपभोक्ता शिकायतों के मामले में शीर्ष पांच जिले गौतम बुद्ध नगर, लखनऊ, गाजियाबाद, वाराणसी और मेरठ हैं। ये जिले रियल एस्टेट विकास के प्रमुख केंद्र हैं और इस वजह से आवास परियोजनाओं और कब्जे में देरी से संबंधित ज्यादातर शिकायतें भी यही हैं। उप्र रेरा के अध्यक्ष संजय भूसरेड्डी ने कहा कि प्राधिकरण घर खरीदारों के अधिकारों की रक्षा और रियल एस्टेट क्षेत्र में पारदर्शिता लाने के मिशन के साथ काम कर रहा है। उन्होंने कहा, शिकायतों के निपटान की उच्च दर प्राधिकरण की दक्षता और समय पर न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हम प्रवर्तकों की जवाबदेही सुनिश्चित करने और राज्य भर में उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए अपने प्रयासों को और मजबूत करते रहेंगे।

आवारा कुत्तों का बेहतर प्रबंधन करने वाले शहरी निकायों को मिलेगा ईनाम

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार आवारा कुत्तों की नसबंदी, टीकाकरण और भोजन कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन करने वाले शहरी स्थानीय निकायों और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को पुरस्कृत करेगी। अधिकारिक सूत्रों ने सोमवार को बताया कि सरकार ने कुत्तों के जीवन के स्थानीय पहलू को ध्यान में रखते हुए ''उपयुक्त भोजन स्थलों'' की पहचान करने और उन्हें चिह्नित करने के निर्देश दिये हैं। अधिकारियों ने बताया कि उच्चतम न्यायालय के 22 अगस्त के आदेश के अनुरूप राज्य के व्यापक निर्णय के तहत 4 सितंबर को जारी इस कदम का उद्देश्य पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) कार्यक्रम के प्रभावी और वैज्ञानिक कार्यान्वयन को बढ़ावा देना है, साथ ही जमीनी स्तर पर उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देना भी है। दरअसल राज्य सरकार के इस आदेश का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के प्रत्येक नगरपालिका वार्ड में आवारा कुत्तों के लिए सुरक्षित और ज़िम्मेदार भोजन स्थलों का निर्धारण करना है। इस कदम से यह सुनिश्चित होगा कि कुत्तों को उनके क्षेत्र में ही भोजन दिया जाए ताकि संघर्ष कम हो, सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा हो और सहानुभूतिपूर्ण देखभाल को बढ़ावा मिले। राज्य सरकार के आदेश में कहा गया है, ''नसबंदी, टीकाकरण और आहार प्रबंधन में अच्छे परिणाम प्राप्त करने वाले शहरी स्थानीय निकायों और संगठनों को राज्य सरकार द्वारा प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत किया जाएगा। इस आदेश का उद्देश्य सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना, करुणामयी देखभाल को बढ़ावा देना, जन सुरक्षा सुनिश्चित करना और सामुदायिक भागीदारी को मज़बूत करना है। उत्तर प्रदेश पशु जन्म नियंत्रण निगरानी समिति की सदस्य गौरी मौलेखी ने कहा, ''करुणा और दया की भावना शासन का एक स्तंभ और राष्ट्र की विरासत है। वैज्ञानिक और विचारशील नीतियों के माध्यम से लोगों और पशुओं, दोनों की रक्षा करके, उत्तर प्रदेश यह दर्शाता है कि प्रगति केवल बुनियादी ढाँचे और आँकड़ों से नहीं, बल्कि उस सम्मान से मापी जाती है जिसके साथ हम अपने बीच सबसे कमज़ोर लोगों के साथ व्यवहार करते हैं।

राज्य सरकार आदेश में कहा गया है, ''ऐसे स्थानों का चयन करते समय यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कुत्ते स्वभाव से ही क्षेत्रीय होते हैं। उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर जाने के लिए मजबूर करने से संघर्ष होता है।

राजधानी के कई इलाकों में तेज बारिश, बादल छाए

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के हुसैनगंज, हजरतगंज और जानकीपुरम इलाके में तेज बारिश हुई। तेज हवाएं चलीं। गोमती नगर में बूंदाबांदी हुई। चिनहट में बादल छाए हैं। अन्य इलाकों में सुबह से धूप छांव की स्थिति बनी हुई है। दिन में एक से दो बार बारिश की संभावना है। मौसम विभाग का अनुमान है कि आज दिन का अधिकतम तापमान 35 डिग्री और न्यूनतम तापमान 27 डिग्री रह सकता है। दिन में उमसभरी गर्मी का दौर भी बना रहेगा। मौसम विभाग का कहना है कि इस दौरान 20-30 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा भी चलेगी। लखनऊ में सोमवार को अधिकतम तापमान 34.8 डिग्री डिग्री दर्ज किया गया। यह सामान्य से 2.6 डिग्री अधिक रहा है। न्यूनतम तापमान 26.6 डिग्री दर्ज किया गया। यह सामान्य से 1.7 डिग्री अधिक रहा है। यहां अधिकतम आर्द्रता 92 फीसदी और न्यूनतम 60 फीसदी दर्ज किया गया।

सेवा भारती ने मार्टिनपुरवा में लगाया नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। सेवा भारती की ओर से सोमवार को मार्टिनपुरवा में निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित कंयिा गया। इस अवसर पर स्थानीय निवासियों को चिकित्सकीय परामर्श के साथ ही दवाएं भी वितरित की गयीं। शिविर में एलोपैथ और आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं। जिला प्रचारक दौलत ने चिकित्सा शिविर का शुभारम्भ किया। डॉ. उमेश राय ने बताया कि वायरल फीवर के मरीज सबसे अधिक देखे गये। सबको दवाएं दी गयी हैं। शिविर में डॉ. सौरभ श्रीवास्तव, डॉ. विजय जायसवाल, डॉ. विवेक, डॉ. अनुराग शर्मा और डॉ. अभिषेक मौर्या ने अपनी टीम के साथ सेवाएं दीं। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ता सुमित रावत, संघ के नगर व्यवस्था प्रमुख शशिकांत, नगर बौद्धिक प्रमुख अवधेश पाण्डेय, सामाजिक समरसता संयोजक अरविन्द पाण्डेय एडवोकेट समेत कई कार्यकर्ता भी व्यवस्था में लगे रहे।

कुली सर्वे को मिल रहा व्यापक समर्थन, सर्वे की रिपोर्ट रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को भेजी जाएगी

लखनऊ। कुलियों के रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के संबंध में राष्ट्रीय कुली मोर्चा द्वारा चलाए जा रहे सर्वे अभियान को पूरे देश में व्यापक समर्थन मिल रहा है। सुदूर उत्तर पूर्व के त्रिपुरा, मिजोरम, असम से लेकर पश्चिम के भुसावल, मुंबई सेंट्रल स्टेशन समेत जम्मू कश्मीर और केरल के स्टेशनों तक यह अभियान जारी है। हर स्टेशन पर कुली अपना सर्वे फॉर्म भर रहे हैं। राष्ट्रीय कुली मोर्चा की कल हुई वर्चुअल बैठक में पूरे देश के कुली प्रतिनिधियों की रिपोर्ट को सुना गया और अभियान को व्यापक बनाने का निर्णय लिया गया। बैठक में यह भी तय किया गया कि कुलियों के सर्वे के पश्चात रिपोर्ट बनाकर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव एवं राजनीतिक दलों के प्रमुखों व सांसदों को भेजी जाएगी। ताकि कुलियों को रेलवे में नौकरी मिल सके और सामाजिक सुरक्षा का सवाल हल हो सके। बैठक के बारे में जानकारी देते हुए राष्ट्रीय कुली मोर्चा की कोऑर्डिनेटर राम सुरेश यादव ने बताया कि मोर्चा के अभियान के बाद रेल मंत्रालय द्वारा भी देशभर के कुलियों की स्थितियों की जांच पड़ताल करने का आदेश दिया गया है।

हिस्ट्रीशीटर ने पंचायत भवन की जमीन पर फिर कब्जा किया, समाधान दिवस में हंगामा

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। मोहनलालगंज तहसील में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस में अधिकारियों ने फरियादियों की शिकायतें सुनीं। इस दौरान अपर जिलाधिकारी आपूर्ति ज्योति गौतम, एसडीएम पवन पटेल और एसीपी रजनीश वर्मा मौजूद रहे। कार्यक्रम में अब तक 60 शिकायतें दर्ज की गई हैं। निगोहां क्षेत्र के नंदौली गांव में हिस्ट्रीशीटर द्वारा पंचायत भवन की जमीन पर दोबारा कब्जा किए जाने से नाराज ग्रामीणों ने समाधान दिवस में पहुंचकर नारेबाजी की। ग्रामीणों ने तहसील प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।ग्रामीणों का आरोप है कि पूर्व में तहसील प्रशासन और पुलिस की संयुक्त टीम ने मौके पर पहुंचकर कब्जा हटवाया था, लेकिन हिस्ट्रीशीटर ने दोबारा पंचायत भवन की जमीन पर गुमटी रख दी। महिला प्रधान ने आरोप लगाया कि तहसील प्रशासन की शह पर हिस्ट्रीशीटर ने दोबारा कब्जा करने की हिम्मत की है। प्रधान समेत दर्जनों ग्रामीणों ने एडीए से शिकायत दर्ज कराई। एडीएम ने राजस्व व पुलिस टीम को मौके पर भेजकर गुमटी हटवाने का आश्वासन दिया। प्रधान का आरोप है कि हिस्ट्रीशीटर द्वारा रखवाई गई गुमटी में गांजा व स्मैक बेचा जाता है। इस गुमटी पर अराजकतत्व एकत्रित होकर गांजा व स्मैक पीते हैं। अराजकता फैलाते हैं। गुमटी के पास ही स्कूल का भी गेट है। स्कूल की शिक्षिकाएं व स्कूल के बच्चे जाते हैं, तो उन पर ये अराजकतत्व टिप्पणी करते हैं, जिसकी शिकायत स्कूल की शिक्षिकाओं ने कई बार किया है। ग्राम धरमंगत खेड़ा के निवासी श्रीभगवान और निरंकार ने ग्राम समाज की भूमि पर अतिक्रमण की शिकायत दर्ज कराई। यह जमीन गाटा संख्या 224, 22, 221, 210, 206, 194, 198, 199 और 200 में स्थित है। यह भूमि पशुचर, ऊसर, नवीन परती, तालाब और खाद के गड्ढों के लिए आरक्षित है। शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि ग्राम वासियों ने इस जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है। इससे ग्राम समाज की संपत्ति को नुकसान पहुंच रहा है। अतिक्रमण के कारण किसानों को अपने खेतों तक कृषि यंत्र ले जाने में परेशानी हो रही है। इस समस्या से क्षेत्र के लोगों में नाराजगी है। राष्ट्रीय किसान मजदूर संगठन (रजि.) से जुड़े किसान समाधान दिवस में पहुंचे। उन्होंने कहा कि गांव सभा समेसी में रामबली की दुकान से त्रिभुवन जायसवाल के घर तक कई वर्षों पूर्व सड़क बनी थी। मरम्मत नहीं कराई गई। सड़क पर जलभराव हो गया है। सड़क किनारे नाली बनी है, लेकिन गांव में सफाई कर्मचारी नहीं आता है। गंदा पानी सड़क पर बहता है। गांव के लोगों को गन्दे पानी और कीचड़ से आना जाना पड़ता है।खुजौली नगराम मार्ग से इस्माइल नगर का खड़ंजा 300 मीटर नहीं बना है।नगराम गंगा गंज रोड़ ग्रामीण अभियंत्रण विभाग द्वारा बनाया गया है, जिसमें कटरा पुलिया से नगराम थाना तिराहे तक एक किलोमीटर निर्माण नहीं हुआ है। राहगीरों और स्कूली बच्चों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा अन्य समस्याएं भी किसानों ने अधिकारियों के सामने रखीं।

विज्ञान और तकनीक के प्रसार हेतु इं. हेमन्त को शिक्षक सम्मान मिला

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। सिंचाई विभाग कार्यरत अभियंता हेमन्त कुमार को एक बार फिर सम्मानित किया गया है। जिला बिजनौर के गाँव फीना निवासी इं. हेमन्त कुमार को समाज में विज्ञान तथा जनोपयोगी तकनीक के प्रसार और भवन निर्माण तकनीक जन जागरण अभियान के संचालन हेतु जिला चित्रकूट में शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। इस सम्मान पर उनके इष्टमित्रों ने उन्हें बधाई दी। शिक्षा तथा सामाजिक जनजागरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों और व्यक्तियों को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सम्मानित करने के लिए वृंदावन गार्डन अमानपुर कर्वी जिला चित्रकूट में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया, जिसमें हेमन्त कुमार भी सम्मानित किये गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉव बाबूलाल तिवारी शिक्षक विधायक झांसी प्रयागराज खण्ड सदस्य विधान परिषद, तथा कार्यक्रम आयोजक पण्डित जगदीश प्रसाद गौतम सामाजिक कार्यकर्ता एवं आपदा-राहत सहयोग भाजपा कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्र डी आई ओ एस तथा शिक्षक विधायक प्रतिनिधि विवेक कुमार श्रीवास्तव ने आंमत्रितगण को सम्मान पत्र एवं डॉव सर्वपल्ली राधाकृष्ण का चित्र भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के सूत्रधार पंडित जगदीश प्रसाद गौतम रहे। हेमन्त कुमार न तो अध्यापक हैं और न ही आपकी आजीविका अध्यापन कार्य हैं। परन्तु समाज में भवन निर्माण तकनीक हरियाली विस्तार इतिहास संवर्धन और विज्ञान के प्रसार में आपने बहुत बड़ा कार्य किया है। भवन निर्माण क्षेत्र में जन जागरण के लिए हेमन्त कुमार ने भवन निर्माण तकनीक जनजागरण अभियान की शुरुआत 2000 के आसपास जिला चित्रकूट में की थी। इस अभियान के अंतर्गत इन्होने चार जनोपयोगी पुस्तकों का लेखन कर निःशुल्क वितरण कराया। इस अभियान के अंतर्गत अनेक जन जागरण गोष्ठीयां आयोजित की जा चुकी हैं। साथ ही टेलीफोनिक मार्गदर्शन भी दिया गया। भवन तकनीक से जुड़ी इनकी चारों पुस्तक इंटरनेट पर निःशुल्क पढ़ी जा सकती हैं। हेमन्त कुमार ने विज्ञान विषयों पर अनेक लेख लिखे जो पत्र पत्रिकाओं में छपे।इनकी मंदिर निर्माण तकनीक से जुड़ी पुस्तक चित्रों के झरोखे से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण ने इण्डिया बुक ऑफ रिकाड्र्स में नाम दर्ज कराया। जनोपयोगी तकनीकी लेखन के लिए आपको उत्तर प्रदेश सरकार ने डॉव सम्पूर्णानंद नामित पुरस्कार और पचहत्तर हजार की धनराशि देकर सम्मानित किया जा चुका है। हेमन्त कुमार के सात आविष्कारों को भारत सरकार से पेटेंट मिल चुका है।

राज्य विधान परिषद में गूंजेगें कार्यकर्ताओं के मुद्दे: अशोक अग्रवाल

राष्ट्रीय प्रस्तावना

कछौना (हरदोई)। भाजपा के निर्विरोध निर्वाचित स्थानीय निकाय क्षेत्र हरदोई से विधान परिषद के सदस्य अशोक अग्रवाल को अभी कुछ दिनों पूर्व ही विधान परिषद में याचिका समिति का सभापति बनाया गया है! जिस पर जिले के सभी कार्यकर्ताओं व शुभचिंतकों ने हर्ष व्यक्त कर बधाइयां दी।

सभापति के प्रथम जनपद आगमन पर कार्यकर्ताओं ने सुबह से ही जगह.जगह स्वागत द्वार बना रखे थे। सभापति अशोक अग्रवाल व प्रदेश कार्य समिति सदस्य युवा मोर्चा संचित अग्रवाल की गाड़ियों के काफिले का जनपद की सीमा में पहुंचते ही स्वागतों का दौर शुरू हो गया, जहां कार्यकर्ताओं ने फूल, माला, स्मृति चिन्ह भेंट कर बैंड बाजों के साथ दर्जनों जगह जबरदस्त स्वागत किया। स्वागत के क्रम में इंडस्ट्रियल एरिया में राधारमण शुक्ला पंकज, रवि गुप्ता, हर्ष द्विवेदी, रामेंद्र सिंह, विजय सिंह सहित कई लोगों ने स्वागत किया। नगर सीमा पर व्यापार मंडल अध्यक्ष

■ नवनियुक्त सभापति का कार्यकर्ताओं ने किया जोरदार स्वागत

व प्रमुख व्यवसायी अचल अग्रवाल, शिवम सिंह, विकास शुक्ला, गौरव गुप्ता, आयुष सिंह, राहुल अग्रवाल, बबलू गुप्ता, सूर्य गुप्ता, प्रतीक गुप्ता मो० शानू आदि कई लोगों ने स्वागत किया। बसंत सिंह मार्केट में प्रधान प्रतिनिधि कामीपुर ओमवीर सिंह, क्षेत्र पंचायत सदस्य राम लखन, दुष्यंत सिंह, रविंद्र सिंह, बिजनेस पाल, प्रेम पाल, अमित चौरसिया, राम अवतार आदि कई कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। सभापति ने नगर में कार्यकर्ताओं संग पैदल चलकर लोगों का अभिवादन भी किया। कार्यक्रम का समापन बड़े ही भव्य तरीके से सभापति के आवास पर हुआ, जहाँ सभी आगंतुको के जलपान की उचित व्यवस्था रही। अपने संबोधन में उन्होंने इस नवनियुक्त पद के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, नेता सदन केशव प्रसाद मौर्य व विधान परिषद के सभापति कुं मानवेन्द्र सिंह का आभार प्रकट किया। उन्होंने आए हुए सभी आगंतुकों का स्वागत व आभार प्रकट करते हुए याचिका समिति के बारे में विस्तार से बताया तथा लगभग तीन साल विधायक व बीस साल के विकासखंड में नेतृत्व के लिए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद भी किया। अपने ओजस्वी भाषण में उन्होंने कहा कि जो मेरे कार्यकर्ताओं का सम्मान नहीं करेगा वह मेरा सबसे बड़ा दुश्मन होगा। कार्यकर्ताओं के मुद्दे जोरदार तरीके से सदन में उठाने का भी आश्वासन दिया, जिसका कार्यकर्ताओं ने तालियां बजाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर प्रदेश कार्य समिति सदस्य भाजयुमो संचित अग्रवाल, जिला उपाध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा डॉक्टर शिवराज सिंह पटेल, चिकित्सा प्रकोष्ठ संयोजक डॉक्टर प्रत्युष कुमार विपुल, प्रधान संघ अध्यक्ष मो० नसीम, ब्लॉक प्रमुख प्रति० अमरनाथ, मंडल अध्यक्ष मयंक सिंह, शिरीष मिश्रा, बबलू सिंह, गौतम कनौजिया, मदन मिश्रा, देवी शंकर शुक्ला, कौशलेंद्र सिंह, अभय सिंह, प्रधान पवन सिंह, अनिल सिंह, अवधेश गुप्ता, अजय बाजपेई, अरुण वर्मा, वारिस मियां, बसंत सिंह, चंदू सिंह, शेरू एवं जनपद के दर्जनों प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य सहित सैकड़ो कार्यकर्ताओं व शुभचिंतकों ने स्वागत किया।

बाढ़ पीड़ितों तक भोजन, पानी आदि सभी व्यवस्थायें पहुंचायी जायेगी: जिलाधिकारी

राष्ट्रीय प्रस्तावना

हरदोई। सम्पूर्ण समाधान दिवस के उपरान्त जिलाधिकारी ने पुलिस अधीक्षक के साथ तहसील शाहाबाद क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित ग्राम भीरमपुर व पचदेवरा तथा उमारिया का मोटर वोट से निरीक्षण किया तथा बीडीओ को निर्देश दिये कि बाढ़ प्रभावित लोगों तक प्रत्येक दिन दोनों समय भोजन पहुंचायें। उन्होने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि बाढ़ प्रभावित गांवों के बीमार लोगों की जांच एवं उपलब्ध कराने हेतु कैम्प लगवायें। डीएम ने पशु अधिकारी को निर्देश दिये कि बाढ़ प्रभावित गांव के जानवरों के लिए भूसा एवं हरे चारे आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। उन्होने बाढ़ प्रभावित लोगों को आश्वासन किसी प्रशासन द्वारा बाढ़ पीड़ितों तक भोजन, पानी आदि सभी सम्भव व्यवस्थायें पहुंचायी जायेगी। निरीक्षण के समय उप जिलाधिकारी एवं तहसीलदार शाहाबाद आदि अधिकारी उपस्थित रहे।

समर्थ उत्तर प्रदेश विकसित उत्तर प्रदेश अभियान के तहत प्रबुद्धजनों ने किया निरीक्षण

■ कृषि विभाग के कैट सेन्टर कस्तूरबा स्कूल और AI लैब का किया निरीक्षण, ग्राम वासियों से किया संवाद

राष्ट्रीय प्रस्तावना

हरदोई। समर्थ उत्तर प्रदेश.विकसित उत्तर प्रदेश अभियान के तहत शासन स्तर से नामित प्रदेश स्तर टीम के के0 रविन्द्र नायक, राकेश कुमार सूद, नरेश चन्द्र शुक्ला, डा0 राघवेन्द्र प्रताप सिंह तथा ,अरविन्द कुमार जैन ने जनपद भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान प्रबुद्धजनों ने विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों का निरीक्षण किया और स्थानीय लोगों से संवाद किया। जिसमें समर्थ कर कोड को स्कैन कर के ग्रामवासी कैसे अपना सुझाव दे सकते हैं, उसके बारे में बताया गया। उन्होंने सबसे पहले, प्रबुद्धजनों ने एक प्लांट का निरीक्षण किया, जहां उन्हें उत्पादन प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस दौरान समूह की महिलाओं के साथ बातचीत की गई और उन्हें अपने अनुभव साझा करने का अवसर मिला। प्रबुद्धजनों ने समूह से प्रॉफिट के बारे में पूछा और बच्चों को पढ़ाने के बारे में निर्देश दिया। इसके बाद, प्रबुद्धजनों ने बेगम गंज पंचायत भवन में ग्राम वासियों से संवाद किया। इस दौरान सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से बातचीत की गई और उनके सुझाव लिए गए। प्रबुद्धजनों ने सभी लोगों से शिक्षा प्रदान करने और कौशल विकास की ट्रेनिंग लेकर रोजगार के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। प्रबुद्धजनों ने ग्राम पंचायत बेगम गंज के स्कूल और आंगनवाड़ी का भी भ्रमण किया। यहां उन्होंने सुपरवाइजर, सीडीपीओ और आंगनवाड़ी के बच्चों से संवाद किया। बच्चों का वजन कराया गया और कमजोर बच्चों पर ज्यादा ध्यान देने का निर्देश दिया गया। इसके बादए प्रबुद्धजनों ने कस्तूरबा स्कूल का भ्रमण कियाए जहां उन्होंने AI लैब का निरीक्षण किया और बच्चों के साथ संवाद किया। उन्हें नई तकनीक को अपनाने के बारे में जानकारी दी गई। अंत मेंए प्रबुद्धजनों ने कृषि विभाग के कैट सेंटर का भ्रमण किया। यहां उन्होंने किसानों से संवाद किया और विभिन्न फसलों के बारे में जानकारी प्राप्त की। प्रबुद्धजनों ने फूलों की खेती और केले की खेती करने के लिए निर्देश दिए। इस भ्रमण के दौरान ग्राम वासियों ने अपनी विभिन्न समस्याएं रखीं, जैसे कि स्टेडियम बनाने, पार्क बनाने, जल निकासी और बस स्टॉप पर शौचालय बनाने के लिए अनुरोध किया। प्रबुद्धजनों ने सभी की बात को ध्यान से सुना और जिला स्तरीय/ब्लॉक स्तर के अधिकारियों को इन समस्याओं का समाधान करने के लिए निर्देश दिए।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सान्या छाबड़ा, उप जिलाधिकारी सण्डीला नारायणी भाटिया, उपायुक्त मनरेगा रवि प्रकाश सिहं, उप निदेशक कृषि डॉ0 सतीश चन्द्र पाण्डेय, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी डॉ0 राम प्रकाश, डीपीआरओं विनय कुमार सिंह, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका सण्डीला, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, विजय प्रताप सिंह, एचसीएल की प्रतिनिधि निधि सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहें।

प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन करते हुए लाभान्वित करायें: डीएम

राष्ट्रीय प्रस्तावना

हरदोई। तहसील शाहाबाद सभागार में आहूत सम्पूर्ण समाधान दिवस की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी अनुनय झा ने उपस्थित जिलास्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि आम जनमानस की शिकायतों के निस्तारण कराने एवं पात्र गरीबों तक प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन करते हुए लाभान्वित करायें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में सरकारी एवं गरीबों की भूमि पर अवैध कब्जों की शिकायतों पर डीएम ने राजस्व विभाग के कानूनगों एवं लेखपालों को निर्देश दिये कि तहसील क्षेत्र में जिन स्थानों पर सरकारी व गरीबों की भूमि पर अवैध कब्जे की शिकायतें प्राप्त हुई उन सभी शिकायतों के निस्तारण के लिए भूमि का चिन्हिांन करें और अपने उच्च अधिकारियों को सूचित करते हुए नायब तहसीलदार व पुलिस बल के सहयोग से सभी अवैध कब्जों को त्वरित कब्जा मुक्त कराना सुनिश्चित करें।

■ पुलिस बल के सहयोग से अवैध कब्जों को त्वरित कब्जा मुक्त करायें: अनुनय झा

■ अपराधी, आराजक तत्वों, भूमाफियों की गतिविधियों पर नजर रखें: नीरज कुमार जादौन

खाद्यान्न वितरण की शिकायतों पर जिलाधिकारी ने जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देश दिये कि राशन का वितरण नामित क्षेत्रीय पूर्ति अधिकारियों की देखरेख में वितरण कराना सुनिश्चित करने के साथ राशन वितरण में अनियमियता करने वाले कोटेदारों के खिलाफ कार्यवाही करें। वृद्धावस्था, निराश्रित एवं दिव्यांग पेंशन न मिलने की शिकायत पर जिलाधिकारी ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जिन पेंशनरों किसी कारण बन्द हो गयी हैं उनकी जांच कराकर पात्र लोगों की पेंशन बहाल करायें। विद्युत विभाग की शिकायतों पर डीएम ने विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि बरसात या किसी अन्य कारण से जिन गांवों में ट्रांसफार्मर खराब है उन्हें तत्काल प्रभाव बदलवायें और जर्जर लाइनों को ठीक करायें। उन्होने उप जिलाधिकारी शाहाबाद से कहा कि तहसील क्षेत्र के बाढ़ एवं जल भराव वाले स्थानों पर लेखपालों के माध्यम से निगरानी करायें तथा बाढ़ चौकियों को सक्रिय बनाये रखें। अन्य विभागों की प्राप्त शिकायतों के संबंध में जिलाधिकारी ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि सभी प्रकार की प्राप्त शिकायतों का निस्तारण निष्पक्ष एवं गुणवत्तापरक समय सीमा में करायें तथा शिकायत निस्तारण की प्रति शिकायतकर्ता को भी उपलब्ध करायें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने थाना प्रभारियों को निर्देश दिये कि क्षेत्र में अपराध की रोकथाम के लिए अपराधी, आराजक तत्वों, भूमाफियों द्वारा क्षेत्र में की जा रही समस्त गतिविधियों की जानकारी सम्बन्ध में गांव के चौकीदार एवं बीट सिपाहियों के माध्यम से प्रतिदिन लें तथा सरकारी एवं गरीबों की भूमि अवैध कब्जा मुक्त कराने में राजस्व टीमों के साथ सहयोग करें। समाधान दिवस में सीएमओ, डीएफओ, एसडीएम व तहसीलदार शाहाबाद, डीपीआरओ व अन्य सभी जिलास्तरीय अधिकारी, बीडीओ, सीडीपीओ आदि उपस्थित रहें।

भाजपा नेता के निधन पर शोक

हरपालपुर (हरदोई) (राष्ट्रीय प्रस्तावना)। क्षेत्र के भूसेहरा गांव निवासी अखिल भारतीय लोधी राजपूत कल्याण महासभा के जिला अध्यक्ष तथा भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला मंत्री तथा क्षेत्र पंचायत सदस्य जितेंद्र राजपूत डब्लू का लंबी बीमारी के बाद सोमवार की सुबह लखनऊ के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया है। पिछले पंचायत चुनाव में दिवंगत डब्लू राजपूत भाजपा से ब्लॉक प्रमुख प्रत्याशी भी रहे थे। डब्लू के परिवार में उसकी पत्नी के अलावा चार बेटियां हैं। क्षेत्रीय भाजपा विधायक माधवेन्द्र प्रताप सिंह रानू, रजनीश त्रिपाठी, अश्वनी श्रीवास्तव, अभिराम सिंह, ब्लॉक प्रमुख अनोखेलाल कश्यप ने निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। परिजनों ने बताया मंगलवार को पैत्रक गांव भूसेहरा में ही उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

प्रदेश स्तर टीम का भ्रमण कार्यक्रम 09 सितम्बर को: जिलाधिकारी

हरदोई (राष्ट्रीय प्रस्तावना)। जिलाधिकारी अनुनय झा ने बताया है कि समर्थ उत्तर प्रदेश-विकसित उत्तर प्रदेश अभियान के तहत प्रदेश स्तर टीम के के0 रविन्द्र नायक, राकेश कुमार सूद, नरेशा चन्द्र शुक्ला, डा0 राघवेन्द्र प्रताप सिंह तथा अरविन्द कुमार जैन का 09 सितम्बर 2025 को भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। उन्होने बताया कि भ्रमण के दौरान 08 सितम्बर को प्रदेश स्तरीय टीम द्वारा प्रात: 10 बजे नगर पालिका परिषद सण्डीला तथा 11 बजे ग्राम पंचायत बेगमगंज का निरीक्षण तथा अपरान्ह 04 बजे स्वामी विवेकानन्द सभागार कलेक्ट्रेट में जिला स्तरीय अधिकारियों के बैठक करेगें। जिलाधिकारी ने बताया कि 09 सितम्बर 2025 को स्वामी विवेकानन्द सभागार कलेक्ट्रेट में प्रात: 10 बजे से जनपद स्तरीय एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा जिसमें प्रदेश स्तरीय टीम द्वारा प्रबुद्धजनो द्वारा विभिन्न लक्षि समूहों, छात्र, शिक्षक, व्यवसायी, उद्यमी, कृषक, स्वयं सेवा व स्वयं सहायता समूह, श्रमिक संगठन, मीडिया, कृषि वैज्ञानिक, एफपीओ, राष्ट्रीय राज्य स्तरीय पुरूषकार प्राप्त महानुभावों इत्यादि के साथ विगत 08 वर्षो में प्रदेश की विकास यात्रा के सम्बन्ध में अवगत कराते हुए राज्य के विकास हेतु रोड मैप पर चर्चा की जायेगी। डीएम ने प्रदेश स्तरीय टीम के कार्यक्रम के लिए जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी को नोडल अधिकारी नामित करते हुए टीम के निरीक्षण आदि कार्यक्रम की सफलता के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दियें है कि स्वयं उपस्थित रहकर निरीक्षण करायें तथा कार्यशाला में होने वाली सभी व्यवस्थायें समय पर पूर्ण करायें तथा निर्धारित प्रतिभागियों की उपस्थित भी सुनिश्चित करें।

लापता किशोर पारस संदिग्ध परिस्थितियों में किशोर लापता, अनहोनी घटना की आशंका से परिजन परेशान

कछौना (हरदोई) (राष्ट्रीय प्रस्तावना)। कोतवाली कछौना की ग्राम सभा लोन्हारा निवासी विष्णु के 15 वर्षीय पुत्र पारस के रविवार दोपहर 12:00 बजे घर से अचानक गायब होने का मामला प्रकाश में आया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पारस अपनी दादी से रूपये 500 खुले कराने के लिए घर से निकला था लेकिन काफी देर होने के बाद वापस न लौटने पर परिजनों को चिंता हुई तो घर वालों ने उसे ढूंढना शुरू किया। देर रात तक जब किशोर का पता न चल सका तो घर वालों ने इसकी सूचना का कछौना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक अपनी टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। गांव व आसपास के लोगों से पूछताछ कर परिजनों के साथ किशोर की तलाश की लेकिन कोई सफलता हाथ न लगी। इधर किसी अनहोनी घटना की आशंका के चलते परिजन काफी परेशान है। प्रभारी निरीक्षक प्रेम सागर सिंह ने बताया कि परिजनों की सूचना पर अभियोग पंजीकृत कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि किशोर के बरामदगी के लिए टीम गठित कर कार्यवाही की जा रही है और जल्द ही सफलता हाथ लगने की संभावना है।

निःशुल्क विद्युत चालित चाक मशीन पाने के लिये करे आवेदन: सुष्मिता सिंह

राष्ट्रीय प्रस्तावना

हरदोई। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी सुष्मिता सिंह ने बताया है कि उ0प्र0 सरकार द्वारा माटीकला एवं माटी शिल्पकला को बढ़ावा देने हेतु उ0प्र0 माटीकला बोर्ड का गठन किया जा चुका है। उक्त के अतिरिक्त पर्यावरण को सत्त हो रहे नुकसान के दृष्टिगत प्लास्टिक से निर्मित कपए प्लेटए गिलासए थाली आदि के उपयोग को प्रदेश में प्रतिबन्धित कर दिया गया है। उ0प्र0 सरकार की मंशा के अनुसार मिट्टी के बर्तनों एवं खिलौनों, मूर्तियों आदि को बनाकर जीविकोपार्जन करने वाले ऐसे कुम्हारों एवं परम्परागत करीगरों जिनकी आयु 18 वर्ष से 50 वर्ष के बीच होए को नि:शुल्क विद्युत चालित चाक (इलेक्ट्रिक पाटर व्हील) मशीन उपलब्ध कराया जाना है। अत: उक्त कार्य से जुड़े कारीगर विभागीय वेबसाइड पर जाकर टूल किट्स आवंटन हेतु ऑनलाइन पंजीकरण कर आवेदन 25 सितम्बर 2025 तक कर सकते है और हार्ड कॉपी कार्यालय जमा करना अनिवार्य है। आवेदन फार्म के साथ आधार कार्ड, शैक्षिक योग्यता, फोटो, जाति प्रमाण.पत्र, आय प्रमाण-पत्र, निवास प्रमाण-पत्र एवं राशनकार्ड की प्रति संलग्न करना अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही व्यक्ति को फार्म जमा करना है। पूर्व में खादी ग्रामोद्योग बोर्ड खादी ग्रामोद्योग आयोग एवं जिला उद्योग केन्द्र तथा अन्य शासकीय विभागों के माध्यम से जिस परिवार में यदि कुम्हारी चाक का लाभ मिल चुका है, उस परिवार का कोई भी लाभार्थी योजना के अन्तर्गत पात्र नहीं होगा। अधिक जानकारी हेतु जिला ग्रामोद्योग कार्यालय, सिनेमा चौराहा, हरदोई से किसी भी कार्यालय दिवस में प्राप्त की जा सकती है।

10 सितम्बर तक करे आवेदन: उप निदेशक

राष्ट्रीय प्रस्तावना

हरदोई। उप निदेशक कृषि सतीश कुमार ने बताया है कि प्रदेश में स्थापित सी0बी0जी0 प्लान्ट तथा अन्य सम्बन्धित इकाईयों को फसल अवशेष उपलब्ध कराये जाने हेतु इन.सीटू एवं एस0एम0ए0एम0 योजनान्तर्गत एफ0पी0ओ0 एवं एफ0पी0ओ0 के सदस्य कृषकों को एग्रीगेटर के रूप में अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध कराये जाने हैं। जनपद में एफ0पी0ओ0 एवं एफ0पी0ओ0 के सदस्य कृषकों को एग्रीगेटर के रुप में चयनित करने हेतु कुल 01 भौतिक लक्ष्य प्राप्त हुआ है। जिस हेतु कृषि विभाग द्वारा आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। एफ0पी0ओ0 चयन हेतु कृषक उत्पादक संगठन का सोसाइटी पंजीकरण एक्ट कम्पनी एक्ट में इस योजना में चयन की तिथि से कम से कम एक वर्ष पूर्व पंजीकृत होना अनिवार्य होगा तथा एफ0पी0ओ0 के सक्रिय सदस्यों की न्यूनतम संख्या 100 होने पर ही एफ0पी0ओ0 इस योजना का लाभ हेतु पात्र होंगे। कस्टम हॉयरिंग सेन्टर की स्थापना हेतु कृषक उत्पादक संगठन (एफ0पी0 ओ0) का नचचिवेींाजपण्बवउ पोर्टल पर पंजीकृत एवं सक्रिय होना अनिवार्य होगा। जनपद हेतु नामित सी0बी0जी0 प्लान्ट रिलांयस बॉयो एनर्जी लि0 उन्नावए रिलांयस बॉयो एनर्जी लि0 बाराबंकी से अनुबंध प्राप्त करने वाले ही कृषक उत्पादक संगठन (एफ0पी0ओ0) तथा एफ0पी0ओ0 के शेयर होल्डर सदस्य कृषक (व्यक्तिगत कृषक के रुप में) एग्रीगेटर के रुप में चयनित होकर इस योजना के लाभार्थी होंगे। अत: उक्त पात्रता वाले एफ0पी0ओ0 10 सितम्बर 2025 तक अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं।

एक दुकान एवं कैन्टीन की नीलामी 10 सितम्बर को: तहसीलदार, शाहाबाद

हरदोई (राष्ट्रीय प्रस्तावना)। तहसीलदार शाहाबाद ने सूचित किया है कि तहसील परिसर में स्थित एक दुकान एवं कैन्टीन की ठेका पर नीलामी 10 सितम्बर 2025 को दोपहर बाद तहसील शाहाबाद सभागार में की जायेगी। उन्होने कहा है कि दुकान व कैन्टीन लेने के इच्छुक व्यक्ति निर्धारित तिथि एवं समय पर पहुंच कर नीलामी में भाग ले सकते है।

10 सितम्बर से होगा खाद्यान्न वितरण

हरदोई (राष्ट्रीय प्रस्तावना)। जिला पूर्ती अधिकारी ने बताया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के अन्तर्गत माह सितम्बर, 2025 के सापेक्ष आवंटित खाद्यान्न, का नि:शुल्क वितरण तथा अन्त्योदय कार्डधारकों को त्रैमास जुलाई, अगस्तए सितम्बर, 2025 के सापेक्ष चीनी का वितरण माह सितम्बर, 2025 में 10 सितम्बर से 25 सितम्बर 2025 के मध्य वितरण कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि अन्त्योदय अन्न योजना के अन्तर्गत अन्त्योदय कार्डधारकों के मध्य प्रति कार्ड 14 कि0ग्रा0 गेहूँ व 21 कि0ग्रा0 फोर्टिफाइड चावल (कुल 35 कि0ग्रा0 खाद्यान्न) का वितरण कराया जायेगा। अन्त्योदय राशन कार्ड धारकों को त्रैमास जुलाई, अगस्त, सितम्बर, 2025 के सापेक्ष 03 कि0ग्रा0 चीनी प्रति कार्ड रु0.18/- प्रति कि0ग्रा0 की दर से रु0.54/- में वितरण सुनिश्चित कराया जाएगा। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत पात्र गृहस्थी योजना के लाभार्थियों को प्रति यूनिट 02 कि0ग्रा0 गेहूँ व 03 कि0ग्रा0 फोर्टिफाइड चावल (कुल 05 कि0ग्रा0) का वितरण कराया जायेगा। खाद्यान्न के वितरण में पोर्टेबिलिटी ट्रान्जेक्शन की सुबिधा उपलब्ध रहेगीए खाद्यान्न का निर्बाध रूप से वितरण का कार्य प्रात: 08:00 बजे से 12:00 बजे तक एवं दोपहर 02:00 बजे से सांय 06:00 बजे तक सुनिश्चित किया जायेगा। उक्त योजनान्तर्गत वितरण की अन्तिम तिथि 25 सितम्बर 2025 होगीए जिस दिन आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त न कर सकने वाले उपभोक्ताओं हेतु मोबाईल ओ0टी0पी0 वेरीफिकेशन के माध्यम से वितरण सम्पन्न किया जायेगा। वितरण के दौरान समस्त क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी/ पूर्ति निरीक्षक यह सुनिश्चित करें कि समस्त विक्रेता अन्त्योदय कार्डधारकों को समस्त सदस्यों सहित आयुष्मान कार्ड बनवाने हेतु आवश्यक रूप से प्रेरित करें। यह भी सुनिश्चित करें कि उक्त कार्य में स्वास्थ्य विभाग व पंचायत विभाग के कर्मियों का सहयोग करें।

समाजसेवी संस्था अंजुमन इमदादिया के अध्यक्ष पहुंचे कालागाड़ा

राष्ट्रीय प्रस्तावना

शाहाबाद (हरदोई)। अंजुमन इमदादिया समिति के अध्यक्ष शारिब हुसैन खान और अंजुमन की टीम ने विगत 6 सितंबर को ग्राम कालागडा तहसील शाहाबाद में सुनील कुमार कश्यप की डूब कर हुई मौत पर मृतक के घर जाकर अंजुमन इमदादिया के अध्यक्ष शरीफ हुसैन खां ने ग्रतक के परिवार से भेंट कर उनको सांत्वना दी एवं अपनी अंजुमन की ओर से कुछ आर्थिक सहायता देकर उनके बच्चों का दुख दर्द बांटने का प्रयास किया शाहाबाद कोतवाली के ग्राम कालागड़ा निवासी सुनील कुमार 42 वर्ष पुत्र रामचंद्र 6 सितंबर को दोपहर ०2:00 बजे चारा काटने के लिए गया था। चारा काट कर वापस गांव आते समय बाढ़ के पानी में वह खाई नहीं देख पाया और उसमें डूब कर उसकी मौत हो गई। परिजनों को जब पता चला तो उसे सीएचसी ले गए जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मृतक के भतीजे विक्रांत ने बताया कि उसके चाचा चारा काटने गए थे वापस आते समय गहरी खाई में चले गए जिससे उनकी मौत हो गई वही आज अध्यक्ष शारिब हुसैन खान अंजुमन इमदादिया की टीम के साथ मृतक के परिवार जनों से मिलकर दुख बांटने का प्रयास किया और कहा अंजुमन की ओर से जो भी मदद हो सकती है वह की जाएगी।

देवभूमि और दानवी हसरतें

देवभूमि में हाल की अभूतपूर्व त्रासदी ने हमें आत्ममंथन को बाध्य किया कि हमें पहाड़ों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह भी कि संसार में कुछ स्थान आध्यात्मिक व धार्मिक निमित्त ही होते हैं। जब उसे देवभूमि कहते हैं तो उसे देवी-देवताओं के लिये संवारना भी जरूरी है। उसी के अनुरूप कारोबार, बाजार व व्यवहार की व्यवस्था होनी चाहिए। होटल हों या रिट्रीट सेंटर- उस संस्कृति के अनुरूप ही बनें। सारी दुनिया में विभिन्न धर्मावलंबियों ने ऐसा ही किया है। उदाहरण के लिये वेटीकन सिटी को लें तो उसका परिवेश एक आध्यात्मिक नगरी के रूप में तैयार किया गया है। इसी तरह मक्का-मदीना को देखिए वहां पर लोग सिर्फ धार्मिक कार्यों के लिये ही जाते हैं। वहां सीमेंट फैक्ट्री, लिकर या क्लब का लाइसेंस मांगने कोई नहीं जाता। इतना सब कुछ होने के बावजूद एक रिच इंड्रस्टी की आधारभूमि भी बनी हुई है वेटीकन सिटी। आम आदमी सोचता है कि कहां आ गया मैं स्वर्ग में। हमारा हिमाचल बहुत ज्यादा बड़ा नहीं है, लेकिन विकृत व्यावसायिक पर्यटन ने इसके मूल-स्वरूप से खिलवाड़ किया है। जिसकी अनुमति पहाड़ का परिवेश नहीं देता है। देवभूमि, विशेषकर इसके पहाड़ी इलाके सिर्फ अध्यात्म की राजधानी बनने योग्य ही हैं। अब मनाली को ही लें, करीब चार हजार होटल हमने बना दिए हैं। अंदाजा लगाना कठिन नहीं है कि चार हजार होटल बनाने के लिये प्राकृतिक व्यवस्था का कितना अतिक्रमण किया गया होगा। कहने को कोई कह सकता है कि ये मेरी जमीन है। लेकिन जब होटल बनाओगे तो मिट्टी की स्थिति बदलेगी और पेड़ काटे जाएंगे। पहाड़ का स्ट्रक्चर हिलेगा। एक पहाड़ की संवेदनशील स्थिति में चार हजार होटल होना एक बड़ा नंबर है। वहीं दूसरी तरफ दया का तर्क है कि प्राकृतिक आपदा से होटल उद्योग ठप हो गया है। उनसे जुड़े बीस-तीस हजार लोगों की रोजी-रोटी का संकट है। लेकिन सवाल पर्यटकों के पहाड़ की संस्कृति के विरुद्ध आचरण का भी है। उसका व्यवहार सीखा-सिखाया तो नहीं होता जो पहाड की कल्चर व मर्यादा के अनुरूप हो। कुछ दिन मौज-मस्ती के लिये आया व्यक्ति प्रकृति के मूल व्यवहार में हस्तक्षेप तो करता है लेकिन आपदा के वक्त खिसक लेता है। जैसा कि हम मानते हैं कि देवभूमि है तो देवता है... तो जब हमारा आचरण प्रकृति के विरुद्ध होता है तो देवता की भी किसी बात पर नाराजगी तो हो सकती है। जो किसी बड़ी परेशानी का कारण बन सकता है। हमें एक सांकेतिक कथा सुनायी जाती है- शिवजी द्वारा गणेश जी को उद्दंडता का दंड देने की। यह महज एक सांकेतिक कथा है। कोई पिता अपने पुत्र के साथ ऐसा नहीं कर सकते, खासकर देव तो बिल्कुल नहीं। सांकेतिक निहितार्थ यह हैं कि कोई भी मर्यादा से परे जाएगा तो फिर उसका नुकसान होगा ही। कमोबेश यह स्थिति हिमाचल और उत्तराखंड की है। ऐसी स्थिति हरिद्वार-ऋषिकेश से लेकर चारधाम तक की है। ये देवभूमि देवताओं की भूमि। इस 140 करोड़ के पूरे देश में इन दोनों राज्यों के पहाड़ी क्षेत्र के लोगों की आबादी एक करोड़ के आसपास होगी। एक जैसे ही चार-पांच पहाड़ होंगे। इस पूरे इलाके को स्प्रीचुअल राजधानी को डेडिकेट कर दिया जाए। इसके विपरीत यदि अन्य कार्य होंगे तो नुकसान होगा। यहां समृद्ध मिनरल का खजाना है। प्राकृतिक खेती हो सकती है। हर्ब्स जीविका का आधार बन सकते हैं। उसके अनुरूप जीवन से ही ये पहाड़ संरक्षित रहेंगे। यहां पब व डिस्को कल्चर अवॉइड किया जाना चाहिए। अब देखिए चंडीगढ़ इतना सुंदर सिटी है। इसे आप डांस की सिटी बना दें। यूथ की सिटी बना दें। ऐसे में देवी-देवताओं के स्थान को डिस्को का केंद्र बनाने की कोई सेंस नहीं बनती। आगे मर्यादा की बात करें और पीछे से विलासिता, तो यह नहीं चलेगा। आम आदमी सरकार सारा दोष सरकार को दे देता है। उसने ये नहीं किया, वो नहीं किया। फिर यह राजनीति का मुद्दा बन जाता है। लेकिन हमने पहाड़ की अस्मिता को बचाने के लिये क्या किया...। पहाड़ों में विकास के गणित की विडंबना देखिए कि हमने कथित विकास में हजार करोड़ का इनवेस्टमेंट किया और चार हजार करोड़ का नुकसान हो गया। तो ये कैसा विकास हुआ... कुदरत का संदेश यही है कि जो जगह आपने मंदिर को दे दी, उस जगह में कॉमर्शियल बिल्डिंग मत बनाओ।

संसार में कुछ स्थान आध्यात्मिक व धार्मिक निमित्त ही होते हैं। जब उसे देवभूमि कहते हैं तो उसे देवी-देवताओं के लिये संवारना भी जरूरी है। उसी के अनुरूप कारोबार, बाजार व व्यवहार की व्यवस्था होनी चाहिए। होटल हों या रिट्रीट सेंटर- उस संस्कृति के अनुरूप ही बनें। सारी दुनिया में विभिन्न धर्मावलंबियों ने ऐसा ही किया है। उदाहरण के लिये वेटीकन सिटी को लें तो उसका परिवेश एक आध्यात्मिक नगरी के रूप में तैयार किया गया है। इसी तरह मक्का-मदीना को देखिए वहां पर लोग सिर्फ धार्मिक कार्यों के लिये ही जाते हैं।

राजनीति को स्वच्छ बनाने का साहस कौन दिखाएगा?

मनोज कुमार अग्रवाल

हाल ही में एडीआर ने 27 राज्य विधानसभाओं, तीन केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्रीय मंत्रिपरिषद के 643 मंत्रियों के हलफनामों का अध्ययन किया और पाया कि 302 मंत्रियों, यानी कुल मंत्रियों के 47 प्रतिशत के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन 302 मंत्रियों में से 174 पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। विश्लेषण के अनुसार भाजपा के 336 मंत्रियों में से 136 यानी 40 प्रतिशत ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है और 88 यानी 26 प्रतिशत पर गंभीर आरोप हैं।

एक ताजा रिपोर्ट ने भारतीय राजनीति की हकीकत को बेपर्दा कर दिया है। इस रिपोर्ट में बताया गया कि देश के 643 मंत्रियों में से 302 (47%) ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले लगे होने की घोषिणा की हैं। इनमें से 174 मंत्री गंभीर अपराधों जैसे हत्या, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध में आरोपित हैं। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में राजनीति के अपराधीकरण को रोकने की बात लंबे अरसे से हो रही है। चुनाव आयोग से लेकर सुप्रीम कोर्ट के तमाम प्रयासों के बावजूद देश की राजनीति में अपराधीकरण कम होने के बजाए बढ़ता ही जा रहा है। हालांकि राजनीति में अपराधी तत्वों की घुसपैठ कोई नया मुद्दा नहीं है, लेकिन जिस पैमाने पर यह बढ़ा है, वह लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स की ताज़ा रिपोर्ट इस सच्चाई को बयान करती है कि देश के लगभग आधे मंत्री ऐसे हैं, जिन पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें हत्या, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे गंभीर मामले भी शामिल हैं। अब सवाल यह आता है कि जब कानून बनाने और उसे लागू कराने वाले ही दागी होंगे तो क्या वे सचमुच न्याय और निष्पक्ष शासन की रक्षा कर पाएंगे? एडीआर के एक विश्लेषण के अनुसार देश के लगभग 47 प्रतिशत मंत्रियों ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है, जिनमें हत्या, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे गंभीर आरोप शामिल हैं। यह रिपोर्ट केंद्र सरकार द्वारा उन तीन विधेयकों को संसद में पेश किए जाने के कुछ दिन बाद आई है, जिनमें गंभीर आपराधिक आरोपों में गिरफ्तारी के बाद 30 दिन तक हिरासत में रहने पर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को पद से हटाने का प्रावधान है। हाल ही में एडीआर ने 27 राज्य विधानसभाओं, तीन केंद्रशासित प्रदेशों और केंद्रीय मंत्रिपरिषद के 643 मंत्रियों के हलफनामों का अध्ययन किया और पाया कि 302 मंत्रियों, यानी कुल मंत्रियों के 47 प्रतिशत के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन 302 मंत्रियों में से 174 पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। विश्लेषण के अनुसार भाजपा के 336 मंत्रियों में से 136 यानी 40 प्रतिशत ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज होने की घोषणा की है और 88 यानी 26 प्रतिशत पर गंभीर आरोप हैं। कांग्रेस शासित चार राज्यों में पार्टी के 45 मंत्रियों यानी 74 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें से 18 यानी 30 प्रतिशत के खिलाफ गंभीर अपराध दर्ज हैं। द्रमुक के 31 मंत्रियों में से 27 यानी लगभग 87 प्रतिशत पर आपराधिक आरोप हैं, जबकि 14 यानी 45 प्रतिशत पर गंभीर मामले दर्ज हैं। तृणमूल कांग्रेस के भी 40 में से 13 मंत्रियों यानी 33 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जिनमें से 8 वानी 20 प्रतिशत पर गंभीर आरोप हैं। तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) का अनुपात सबसे ज्यादा है, जिसके 23 में से 22 मंत्रियों यानी 96 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं और 13 यानी 57 प्रतिशत पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। आप के 16 में से 11 यानी 69 प्रतिशत पर आपराधिक मामले दर्ज हैं, जबकि पांच यानी 31 प्रतिशत पर गंभीर मामले दर्ज हैं। राष्ट्रीय स्तर पर 72 केंद्रीय मंत्रियों में से 29 यानी 40 प्रतिशत ने अपने हलफनामों में आपराधिक मामले घोषित किए हैं। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब, तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और पुडुचेरी में 60 प्रतिशत से ज्यादा मंत्रियों पर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इसके विपरीत हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, नागालैंड और उत्तराखंड के मंत्रियों ने अपने खिलाफ कोई आपराधिक मामला दर्ज नहीं होने की सूचना दी है। देखा जाए तो सभी पार्टियों में दागी नेता है, जबकि देश के सभी दल अपराध मुक्त राजनीति की बात करते हैं। आंकड़ों को देखने के बाद साफ है कि हिंदुस्तान की सियासत आज जिस रास्ते पर चल रही है वह भ्रष्टाचार और अपराध से लबालब है। चुनाव में बढ़ता धनबल, बाहुबल और अपराधीकरण लोकतंत्र को अंदर ही अंदर खा रहा है। जब कानून के निर्माता और रखवाले ही अपराध में सने होंगे तो उनसे कैसे उम्मीद की जा सकती है कि लोकतंत्र को स्वस्थ रख सकेंगे। पहले तो बिहार और उत्तर प्रदेश को ही आपराधिक राजनीति का गढ़ कहा जाता था, लेकिन पिछले दो-तीन दशकों से सभी राज्यों में ऐसी प्रवृत्ति के नेताओं की संख्या में इजाफा हुआ है। आज नेताओं का उद्देश्य चुनाव जीतकर देश सेवा करना नहीं, बल्कि सत्ता हासिल कर हुकूमत करना है। कालेजियम व्यवस्था के रहते हमारी न्यायपालिका को भी पूर्ण पवित्र नहीं कहा जा सकता है। राजनीति का अपराधीकरण केवल संसद और विधानसभाओं को ही प्रभावित नहीं करता, वरन समाज और लोकतंत्र की जड़ें खोखली कर देता है। लेकिन चिंता की बात यह है कि राजनीतिक पार्टियों के द्वारा चुनाव जीतने के लिए दागी उम्मीदवारों को टिकट देने में कोई परहेज नहीं किया जाता है। 'हमाम में सभी नंगे हैं' की तर्ज पर सभी राजनीतिक पार्टियों की गोद में ऐसे अनेक नेताओं की किलकारियां गूंजती हैं, जो अपराध में आकंठ डूबे हैं। चुनावों में अपराधीकरण बढ़ने का बड़ा कारण चुनावी व्यवस्था की खामियां हैं। चुनाव लड़ने के लिए अपार धन की जरूरत होती है, और यही धनबल राजनीति में अपराधियों के लिए रास्ता खोल देता है। अपराध से अर्जित धन चुनावी मैदान में खर्च होता है और उसके बदले सत्ता का संरक्षण अपराधियों को मिलता है। बाहुबल और धनबल के सहारे चुनाव जीतने वाले जनप्रतिनिधि जनता के प्रति कम और अपने अपराधी गिरोह के प्रति ज्यादा जवाबदेह हो जाते हैं। हालांकि इस दिशा में पिछले कुछ समय में सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग की तरफ से कई कदम उठाए गए हैं, इनके भी हाथ बंधे हुए हैं। शीर्ष न्यायालय बार-बार कह चुका है कि गंभीर आपराधिक मामलों में फंसे व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से रोका जाना चाहिए। लेकिन राजनीतिक दल वोट बैंक की मजबूरी में ऐसे उम्मीदवारों को टिकट देने से बाज नहीं आते हैं। राजनीति में अपराध को रोकने के लिए निर्वाचन आयोग को अधिक अधिकार दिए जाने चाहिए ताकि वह ऐसे उम्मीदवारों को चुनाव मैदान से बाहर कर सके। साथ ही चुनावी खर्च की सीमा का कड़ाई से पालन और पारदर्शी फंडिंग व्यवस्था भी जरूरी है। कानून से ज्यादा जरूरी है राजनीतिक दलों का आत्मसंयम और नैतिकता। यदि दल अपराधियों को टिकट न दें तो यह समस्या स्वतः कम हो जाएगी। लेकिन आज की राजनीति में सत्ता की लालसा इतनी प्रबल है कि दल अपराधियों को भी सिर-आंखों पर बिठाने से हिचकते नहीं। जब तक दल खुद यह संकल्प नहीं लेंगे कि वे स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवारों को ही आगे बढ़ाएंगे, तब तक लोकतंत्र में शुचिता की उम्मीद करना व्यर्थ है। भारत का लोकतंत्र विश्व के लिए आदर्श माना जाता है, लेकिन यह तभी टिकेगा जब इसकी जड़ें मजबूत हों। अपराधीकरण और भ्रष्टाचार लोकतंत्र की नींव को खोखला कर रहे हैं। यदि आज ठोस कदम नहीं उठाए गए तो कल जनता का भरोसा इस व्यवस्था से पूरी तरह उठ जाएगा। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का नाम नहीं है, बल्कि यह जनता के प्रति जवाबदेही, पारदर्शिता और नैतिकता का प्रतीक है। राजनीति से अपराधियों की सफाई ही लोकतंत्र को बचाने का सबसे बड़ा उपाय है। सवाल है कि क्या हमारे राजनीतिक दल और नेता इस सच्चाई को स्वीकार कर अपनी राजनीति को स्वच्छ बनाने का साहस दिखाएंगे, ऐसा तत्काल तो संभव नहीं दिख रहा है। ऐसे में राजनीति से अपराधीकरण को मुक्त करने की बात सिर्फ छलावा है।

अभी और बदलेंगे ट्रप के बोल

प्रेम शर्मा

टैरिफ को लेकर वह पूरे विश्व में चर्चा में ही नही आए बल्कि इस निर्णय से उन्हें अपने ही देश में भारी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन भारत में भारी भरकम टेरिफ लगाने का खेल उन पर भारी पड़ता नजर आ रहा है। अमरीकी के दादागिरी वाले निर्णय पर भारत की रणनीति के मद्देनजर ट्रप के बोल में बदलाव शुरू हो गया है। सम्भावना यह जताई जा रही है कि भारत को लेकर टैरिफ मामले में जल्द ही डोनाल्ड ट्रम्प बेकफुट पर नजर आएगें। भारी भरकम टैरिफ और रूसी तेल खरीदने के लेकर पिछले दो दशकों के सबसे गहरे तनाव के बीच ट्रंप ने हाल ही में सोशल मीडिया पर पीएम मोदी की रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीन के नेता शी चिनफिंग के साथ तस्वीर पोस्ट हुए कहा था कि लगता है हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है।

अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने बयानों और निर्णय को लेकर शुरू से ही चर्चा में है। हाल में टैरिफ को लेकर वह पूरे विश्व में चर्चा में ही नही आए बल्कि इस निर्णय से उन्हें अपने ही देश में भारी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन भारत में भारी भरकम टेरिफ लगाने का खेल उन पर भारी पड़ता नजर आ रहा है। अमरीकी के दादागिरी वाले निर्णय पर भारत की रणनीति के मद्देनजर ट्रप के बोल में बदलाव शुरू हो गया है। सम्भावना यह जताई जा रही है कि भारत को लेकर टैरिफ मामले में जल्द ही डोनाल्ड ट्रम्प बेकफुट पर नजर आएगें। भारी भरकम टैरिफ और रूसी तेल खरीदने के लेकर पिछले दो दशकों के सबसे गहरे तनाव के बीच ट्रंप ने हाल ही में सोशल मीडिया पर पीएम मोदी की रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीन के नेता शी चिनफिंग के साथ तस्वीर पोस्ट हुए कहा था कि लगता है हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है। इसका कूटनीतिक जबाब देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि हम राष्ट्रपति ट्रंप की भावनाओं और हमारे संबंधों को लेकर उनकी सकारात्मक राय की गहराई से सराहना करते हैं और उसका पूरी तरह से समर्थन करते हैं. उन्होंने आगे कहा कि भारत और अमेरिका के बीच बहुत सकारात्मक, दूरदर्शी, व्यापक और वैश्विक रणनीतिक साझेदारी है। ट्रंप भारत को लेकर अभी और लचीले होगें यह तय है। इसके पीछे एक दो नही बल्कि ऐसे कई निर्णय है जो भारी सरकार द्वारा लिये जा चुके हैं। जैसे ट्रंप के तमाम प्रयासों के बावजूद भारत रूसी तेल पर अपने पुराने रुख पर कायम रहा है। टैरिफ विवाद के बीच पीएम मोदी ने शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में शामिल होकर इशारों में ट्रंप को सख्त संदेश दिया था। प्रधानमंत्री मोदी इस महीने के अंत में होने वाले संयुक्त राष्ट्र महासभा के सालाना उच्चस्तरीय सत्र में शामिल नहीं होंगे। दूसरी तरफ ट्रंप के सख्त रवैये से रिश्तों में तनाव के बावजूद भारत-अमेरिका ट्रेड डील को लेकर पर्दे के पीछे से कोशिशें चल रही हैं। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भी ट्रेड डील नवंबर तक फाइनल होने की हाल ही में उम्मीद जताई थी। इस ट्रेड डील को लेकर लगभग सहमति बन चुकी है। कृषि और डेयरी जैसे कुछ क्षेत्रों पर बात अटकी हुई है. इसे लेकर अमेरिकी दल भारत आने वाला था। लेकिन इसी बीच ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ लगाए जाने के बाद वार्ता थम गई। जाहिर बात है कि ये ट्रेड डील दोनों ही देशों के लिए फायदे का सौदा साबित हो सकती है। ऐसे में ट्रंप ये खतरा उठाने का जोखिम मोल नहीं लेना चाहेंगे। ट्रंप ने जिस तरह से भारत के ऊपर भारी भरकम 50 प्रतिशत टैरिफ लगाए, उसे लेकर उन्हें अपने ही देश में तीखी आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। विदेश मंत्री एस जयशंकर 8 सितंबर को ब्रिक्स के वर्चुअल शिखर सम्मेलन में शामिल होंगे। भारत, चीन, रूस, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया, ईरान और यूएई आदि के 10 सदस्यीय ग्रुप की बैठक में टैरिफ पर चर्चा होने की संभावना है। निश्चित तौर पर यहॉ भी टैरिफ मामले में अमरीकी को लेकर कोई सार्थक रणनीति बन सकती है। यह सच है कि अमेरिका के लिए भारत आर्थिक, रणनीतिक, सामाजिक रूप से काफी अहम है। भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ-साथ सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था भी है। 'एप्पल' ने भारत से 67,000 करोड़ रुपए कमाए हैं। 'अमेजन' ने 40,000 करोड़ रुपए कमाए हैं। 'गूगल' ने 22-23,000 करोड़ रुपए बनाए हैं और 'मेटा' ने भी लगभग इतनी ही कमाई की है। ये सभी अमरीकी कंपनियां हैं और भारत उनका सबसे बड़ा बाजार है। ऐसी कई अमरीकी कंपनियां है जो भारत में व्यापार कर रही हैं और मोटा मुनाफा कमा रही हैं। ट्रंप का पीएम मोदी को लेकर दिया गया बयान यह संकेत दे रहा है कि वह भारत पर टैरिफ पर पुनर्विचार कर अपने फैसले को वापस ले सकते है।, लिहाजा उन्होंने सर्वोच्च अदालत से आग्रह किया है कि वह टैरिफ मामले पर यथाशीघ्र सुनवाई कर उसे 'वैध' करार दे। अदालत नवंबर माह में सुनवाई शुरू करेगी, यह पहले से ही तय है। अब राष्ट्रपति ट्रंप इसलिए भी चिंतित हैं, क्योंकि दुनिया दो ध्रुवों के बीच बंटती जा रही है और अमरीका को 'शीत युद्ध' एक बार फिर शुरू होने की आशंका है। अमरीका की ताकत भी बंटती जा रही है। अमरीकी विशेषज्ञ भी मानते हैं कि देश के राष्ट्रपतियों ने दशकों की मेहनत, कूटनीति, दूरदर्शिता और देशों की लामबंदी के जरिए जो ताकत अर्जित की थी और अमरीका को सबसे बड़ी 25 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की अर्थव्यवस्था तक पहुंचाया था, राष्ट्रपति ट्रंप उस पर पानी फ़ेर रहे हैं। दूसरी तरफ भारत आगामी दो सालों के भीतर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन सकता है। अमरीकी कंपनियां भारत की सार्वजनिक और निजी कंपनियों से अरबों डॉलर के करार कर रही हैं। अमरीकी राष्ट्रपति के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रहे अधिकारी ने अमरीका में मंदी की संभावनाओं को लेकर राष्ट्रपति को सचेत किया है। ऐसे भी विश्लेषण सामने आए हैं कि एक-तिहाई उद्योग पहले से ही आर्थिक संकट झेल रहे हैं। ऐसे में भारत के साथ कारोबार कम क्यों किया जा रहा है ? टैरिफ का कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि रूस के साथ भारत, चीन के अलावा अमरीका और यूरोपीय देश भी तेल और गैस का धंधा कर रहे हैं। ऐसे वैश्विक परिदृश्य में अमरीका अकेला पड़ता जा रहा है। ऐसे में भारत को लेकर ट्रंप निश्चित तौर पर जल्द ही भारत के प्रति अपने बोल बदलेगें।

प्रकृति की नाराजगी को नहीं समझा तो मानव अस्तित्व खतरे में

ललित गर्ग

आज की बाढ़ और जल प्रलय केवल पानी का उफान नहीं, बल्कि हमारी गलतियों का आईना है। यह प्रकृति का प्रतिशोध है, उसकी चेतावनी है कि यदि अब भी नहीं चेते तो भविष्य और भी विकराल होगा। महात्मा गांधी ने कहा था-ल्लप्रकृति हर किसी की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी के लालच को नहीं। यही सच्चाई है। यदि हमने संतुलन नहीं सीखा, तो यह विनाशकारी दृश्य आने वाले वर्षों में और भयावह होंगे।

प्रकृति अपनी उदारता में जितनी समृद्ध है, अपनी प्रतिशोधी प्रवृत्ति में उतनी ही कठोर है। जब तक मनुष्य उसके साथ तालमेल में रहता है, तब तक वह जीवन को वरदान देती है, जल, जंगल और जमीन के रूप में। लेकिन जैसे ही मनुष्य अपनी स्वार्थपूर्ण महत्वाकांक्षाओं और तथाकथित आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति की उपेक्षा करने लगता है, यही प्रकृति विनाश का रूप धारण कर लेती है। आज पूरे भारत में जो बाढ़, जल प्रलय और मौसम के अनियंत्रित बदलाव के दृश्य दिखाई दे रहे हैं, वे केवल प्राकृतिक आपदा नहीं हैं, बल्कि हमारी गलतियों का सीधा परिणाम हैं। प्रकृति के इस रौद्र रूप के पीछे महज संयोग या 'कुदरत की नाराज़गी' को जिम्मेदार ठहराना पर्याप्त नहीं है। यह आपदाएं सीधे-सीधे जलवायु परिवर्तन, वनों की अंधाधुंध कटाई और अनियंत्रित विकास मॉडल का परिणाम हैं। पहाड़ों का पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील होता है, लेकिन नीतिनिर्माताओं ने पहाड़ों के विकास को मैदानी मॉडल पर ढालने की कोशिश की। बड़े-बड़े होटल, अव्यवस्थित सड़कें, बांध, खनन और निर्माण ने पहाड़ों की नाजुक संरचना को हिला दिया। जब जंगल काटे जाते हैं तो वर्षा का पानी भूमि में समाने के बजाय सीधे तेज धाराओं के रूप में बहने लगता है। यही बाढ़ और भूस्खलन का बड़ा कारण बनता है, इसी से भारी तबाही का मंजर देखने को मिल रहा है, देश के बड़े हिस्से में जन-जीवन अस्त-व्यस्त है, लाखों हेक्टेयर फसलें जनमग्न है, जान-माल का नुकसान भी बड़ा हुआ है, भारी आर्थिक नुकसान ने घना अंधेरा बिखेर दिया है। चारों ओर चिन्ताओं एवं परेशानियों के बादल मंडरा रहे हैं। आज की बाढ़ और जल प्रलय केवल पानी का उफान नहीं, बल्कि हमारी गलतियों का आईना है। यह प्रकृति का प्रतिशोध है, उसकी चेतावनी है कि यदि अब भी नहीं चेते तो भविष्य और भी विकराल होगा। महात्मा गांधी ने कहा था-ल्लप्रकृति हर किसी की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी के लालच को नहीं।ङ्क यही सच्चाई है। यदि हमने संतुलन नहीं सीखा, तो यह विनाशकारी दृश्य आने वाले वर्षों में और भयावह होंगे। लेकिन यदि हमने चेतावनी को अवसर माना, तो प्रकृति फिर से मां की तरह हमें संभाल लेगी। जीवनदायी पानी जब अपने विकराल रूप में सामने आता है तो उसका प्रकोप कितना घातक और विनाशकारी हो सकता है, यह इस वर्ष की मूसलाधार मानसूनी बारिश एवं बादल फटने की घटनाओं ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है। सामान्यतः जल जीवन का आधार है, लेकिन जब वही जल अपनी मर्यादा तोड़कर प्रलयंकारी रूप में आता है तो घर, खेत, सड़क, पुल, मंदिर-मस्जिद और मानवीय जीवन तक बहाकर ले जाता है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के पहाड़ी राज्य इस समय प्रकृति के ऐसे ही कहर का दंश झेल रहे हैं। बादल फटने की अप्रत्याशित घटनाएं, पहाड़ों से टूटते हिमखंड, अचानक बहते मलबे और बेकाबू नदियों का सैलाब-ये सब मिलकर भयावह परिदृश्य खड़ा कर रहे हैं। वनों की कटाई ने न केवल भूमि की जलधारण क्षमता घटाई है, बल्कि स्थानीय जलवायु चक्र को भी प्रभावित किया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण तापमान बढ़ा है, जिससे पहाड़ी इलाकों में ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और अप्रत्याशित समय पर अत्यधिक वर्षा हो रही है। यही कारण है कि बादल फटने जैसी घटनाएं पहले की तुलना में कई गुना बढ़ गई हैं। पहाड़ों की बस्तियां, जो कभी प्राकृतिक संतुलन में जीती थीं, अब मानवजनित गतिविधियों की मार झेल रही हैं। दरअसल, समस्या का मूल यह है कि हमने विकास की परिभाषा को केवल कंक्रीट और मशीनों से जोड़ दिया है। पर्यावरणीय संतुलन और पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता को दरकिनार कर योजनाएं बनाई गईं। इसी का परिणाम है कि जब आपदा आती है तो न तो हमारी चेतावनी प्रणाली पर्याप्त साबित होती है और न ही प्रशासन की तैयारियां। सर्वोच्च न्यायालय में हिमाचल सरकार ने यह स्वीकार भी किया है कि अब तक अपनाए गए उपाय अपर्याप्त हैं। यह स्वीकारोक्ति बताती है कि समस्या कितनी गंभीर है। भारत की नदियाँ कभी जीवन का स्रोत मानी जाती थीं। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, गोदावरी जैसी नदियों के किनारे सभ्यताएँ पली-बढ़ीं। लेकिन आज वही नदियाँ मौत का पैगाम बनकर आती हैं। कारण है उनके प्राकृतिक प्रवाह में मानवीय हस्तक्षेप-बेतरतीब बांध, अतिक्रमण, नालों में बदल चुकी धारा और किनारों पर बसी बस्तियाँ। भारत में हर साल औसतन 1,600 लोग बाढ़ से मारे जाते हैं और लगभग 75 लाख लोग प्रभावित होते हैं। फसलें तबाह होती हैं, पशुधन मरता है और अरबों रुपए की आर्थिक क्षति होती है। केवल 2023 में उत्तराखंड, हिमाचल और दिल्ली में आई बाढ़ से 60,000 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ। पिछले कुछ दशकों में मौसम का पैटर्न पूरी तरह बिगड़ चुका है। मानसून जो पहले जून से सितंबर तक नियमित हुआ करता था, अब अनिश्चित और असमान हो गया है। कभी 24 घंटे में महीनों की बारिश हो जाती है, तो कभी लंबे सूखे का दौर देखने को मिलता है। 2013 की केदारनाथ त्रासदी ने पहाड़ों में अंधाधुंध निर्माण की पोल खोल दी। 2023 में दिल्ली में यमुना का 45 साल का रिकॉर्ड टूटना इस बात का संकेत है कि शहर जलवायु परिवर्तन और अव्यवस्थित शहरीकरण के सामने पूरी तरह असुरक्षित हो चुके हैं। देश के लगभग हर हिस्से में जल प्रलय की कहानियाँ देखी जा सकती हैं। उत्तराखंड और हिमाचल में पहाड़ टूट रहे हैं, भूस्खलन से गांव उजड़ रहे हैं। बिहार और असम में बाढ़ हर साल लाखों लोगों को बेघर कर देती है। दिल्ली और मुंबई जैसे आधुनिक महानगर भी जलजमाव से पंगु हो जाते हैं। राजस्थान जैसे रेगिस्तानी राज्य में भी अनियंत्रित बारिश और बाढ़ का नया खतरा मंडरा रहा है। सड़कों पर नावें चल रही हैं, पुल बह गए हैं, खेत-खलिहान जलमग्न हैं। यह नजारा केवल विनाश का नहीं, बल्कि हमारी नासमझी का प्रमाण है। प्रकृति बार-बार संकेत देती है कि संतुलन ही जीवन का आधार है, लेकिन हमने उसकी सीमाओं को लांघ दिया है। पहाड़ों को खोखला कर सुरंगें और सड़कें बनाई गईं। जंगलों को काटकर कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए गए। नदियों को उनके मार्ग से हटाकर कृत्रिम रास्तों में बांध दिया गया। आज जब बादल फटते हैं या नदियाँ बेकाबू होती हैं, तो यह केवल आपदा नहीं बल्कि प्रकृति का प्रतिशोध है। अब सवाल यह है कि इस संकट से निपटें कैसे। केवल राहत और मुआवजा देना समाधान नहीं है। आवश्यकता है दीर्घकालिक और ठोस कदम उठाने की। हमें जंगल बचाने होंगे, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बहाल करना होगा, शहरी योजनाओं में जलनिकासी और हरियाली को महत्व देना होगा, पर्वतीय विकास में संयम लाना होगा और सबसे बढ़कर जनजागरूकता फैलानी होगी ताकि लोग समझ सकें कि पर्यावरण की रक्षा ही उनके जीवन की रक्षा है। जरूरत है कि आपदाओं को केवल 'प्राकृतिक' न मानकर उन्हें 'मानव निर्मित' एवं सरकार की गलत नीतियों की आपदाएं' भी समझा जाए। इसका अर्थ है कि इनका समाधान केवल राहत और बचाव तक सीमित न रहकर दीर्घकालिक रणनीति से जुड़ा होना चाहिए। विशेषज्ञों की राय, वैज्ञानिक अध्ययन और स्थानीय समुदायों के अनुभवों को मिलाकर ऐसी नीतियां बननी चाहिएं, जो पहाड़ों की प्राकृतिक संरचना और पारिस्थितिकी को ध्यान में रखें। प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति हमें चेतावनी दे रही है कि यदि हमने समय रहते संतुलित विकास का मार्ग नहीं चुना तो भविष्य और अधिक भयावह होगा। पूर्व चेतावनी प्रणाली को सशक्त बनाना, पहाड़ी राज्यों के बीच आपसी समन्वय बढ़ाना, आपदा प्रबंधन तंत्र को त्वरित और प्रभावी बनाना, और सबसे बढ़कर-वनों एवं प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना, यह सब आज की सबसे बड़ी जरूरत है। दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भारत प्राकृतिक आपदाओं से होने वाली भारी जन-धन हानि को बर्दाश्त नहीं कर सकता। इस वर्ष की बाढ़ और बादल फटने की घटनाएं केवल त्रासदी नहीं, बल्कि एक स्पष्ट संदेश हैं-कि प्रकृति के साथ असंतुलन की कीमत हमें अपने अस्तित्व से चुकानी पड़ सकती है। इसलिए विकास की नीतियों को पर्यावरण की दृष्टि से पुनर्परिभाषित करना ही इस संकट से उबरने का वास्तविक मार्ग है।

अधिकारी बनकर डिजिटल अरेस्ट करने वाले अंतरराज्यीय गैंग के चार सदस्य गिरफ्तार

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

कौशाम्बी। कौशाम्बी की साइबर क्राइम थाना पुलिस ने एक बड़ी सफलता प्राप्त करते हुए पोर्न वीडियो देखने व फर्जी मकदमें में फसाने की धमकी के नाम पर सी बी आई व सी आई डी अधिकारी बनकर डिजिटल अरेस्ट करने वाले अंतर्राज्यीय गैंग के 4 सदस्यों को गिरफ्तार कर कई फर्जी सिम बरामद किये। सराय अकिल थाना क्षेत्र के ग्राम अकबराबाद निवासी सुनील कुमार गुप्ता पुत्र लल्लू गुप्ता ने साइबर क्राइम थाना में शिकायत दर्ज करायी थी कि 15.08.2025 से 25.08.2025 तक उनके साथ सी बी आई व सी आई डी अधिकारी बनकर पोर्न वीडियो देखने व फर्जी मुकदमें में फसाने की धमकी देकर 31500 रुपये अलग अलग तिथियों में विभिन्न खातों में ऑनलाइन ट्रांसफर कराया गया। तहरीर के आधार पर साइबर क्राइम थाना द्वारा रिपोर्ट दर्ज की गयी थी। घटना की गम्भीरता को देखते हुये एसपी राजेश कुमार ने घटना के अनावरण व आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु साइबर क्राइम थाना व जनपदीय साइबर क्राइम सेल को निर्देशित किया था। एसपी राजेश कुमार ने घटना का खुलासा करते हुए घटना की साइबर क्राइम थाना पुलिस टीम ने तकनीकी संसाधनों व इलेक्ट्रानिक अभिलेखों के आधार पर तत्काल कार्यवाही करते हुये म0प्र0 में संचालित साइबर क्राइम हॉट स्पॉट के अंतर्राज्यीय गैंग के 04 सक्रिय आरोपियों शोभित उर्फ बाबूलाल पटेल पुत्र भैयाराम निवासी ग्राम मंगेला पोस्ट पटोरी थाना बाकल जिला-कटनी म0प्र0, सुरेन्द्र पटेल उर्फ मलंगी पुत्र केशव पटेल निवासी ग्राम मंगेला पोस्ट पटोरी थाना बाकल जिला कटनी म0प्र0 , सोनू सेन पुत्र परषोत्तम सेन निवासी ग्राम बगवार कला थाना रैपुरा जिला पन्ना म0प्र0, अरविन्द लोधी पुत्र रोहिणी प्रसाद लोधी निवासी ग्राम खैरो पोस्ट गंज थाना रैपुरा जिला पन्ना म0प्र0 को थाना बाकल क्षेत्र जिला कटनी म0प्र0 से गिरफ्तार के ट्रान्जिट रिमांड पर जनपद कौशाम्बी लाया गया। पूंछतांछ करने पर आरोपियों ने बताया कि हम लोग कूट रचना करके फर्जी नाम पते पर सिम खरीद कर एवं बैंक में खाता खुलवाकर उसका एटीएम कार्ड, पासबुक, चेकबुक प्राप्त करते है और फर्जी तरीके से फाइनेंस पर मोबाइल खरीद कर अपने गैंग के सरगना राशिद को दे देते थे जिससे राशिद लोगो को फोन करके स्वंय को सी बी आई व सी आई डी का अधिकारी बताकर पोर्न बीडियो देखने व फर्जी मुकदमें में फंसाने की धमकी देकर टीम भेजकर उठवा लेने की धमकी देता है और पैसा की मांग करता है। हम लोग गूगल से किसी अधिकारी की वर्दी में फोटो डाउनलोड कर व्हाट्सएप की डीपी पर लगा लेते हैं जिससे लोगो को डरा धमका सके। लोगों से पैसों की मांग करके मोटी रकम ऑनलाइन खाते में ट्रान्सफर करवा लेते है। इसी तरह से जनपद कौशाम्बी से सुनील गुप्ता से 31500 रुपये की धोखाधड़ी कर अपने खाते में ट्रान्सफर करवा लिये थे। अपराधियों द्वारा राजस्थान, दिल्ली, पंजाब एवं देश के अन्य स्थानों से भी धोखाधडी कर कुल लगभग 43 लाख रुपये का वित्तीय लेन-देन किया गया है।

नव चयनित कनिष्ठ सहायकों को वितरित हुआ नियुक्ति पत्र

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

कौशाम्बी। कलेक्ट्रेट स्थित उदयन सभागार में सोमवार को नियुक्ति पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ जिला पंचायत की अध्यक्ष कल्पना सोनकर, भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मराज मौर्य, पूर्व विधायक लाल बहादुर, व भरवारी नगर पालिका की अध्यक्ष कविता पासी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह में अध्यक्ष जिला पंचायत, भाजपा जिलाध्यक्ष व पूर्व विधायक ने जनपद कौशांबी से नव चयनित कनिष्ठ सहायक अजय कुमार, विजय बहादुर, निखिल कुमार, शिव कुमार, अमन कुमार, अमित विश्वकर्मा, रोहित साहू व अरविंद कुमार को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। जिला पंचायत कल्पना सोनकर ने नव चयनित कनिष्ठ सहायकों को बधायी एवं उज्जवल कार्यकाल की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप लोग निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए अपने दायित्वों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें। केंद्र व प्रदेश सरकार, गरीबों के कल्याण के साथ ही समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए संकल्पित है। भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मराज मौर्य ने नवचयनित कनिष्ठ सहायकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने वर्ष 2047 तक देश को विकसित देश बनाने का संकल्प लिया है। देश को विकसित देश बनाने में उत्तर प्रदेश की बहुत बड़ी अहम भूमिका है। हम सबको देश को विकसित देश बनाने के लिए अपना योगदान करना चाहिए। अगर हम लोग संकल्प लेकर कार्य करेंगे तो जो परिणाम आयेगा वह संकल्प को अवश्य पूर्ण करेगा। उन्होंने कहा कि आप लोग अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक संपादित करें। मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाएं बहुत ही बेहतर एवं सुदृढ़ हुई हैं। प्रदेश के जिला चिकित्सालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों व मेडिकल कॉलेज आदि में मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं आमजन का विश्वास बहुत बढ़ा है।

संक्षिप्त समाचार

साहित्य, संस्कृति और समाजसेवा के सशक्त स्तम्भ रहे 'आलोक' जी की स्मृति में आयोजन

उन्नाव। जनपद की विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले प्रखर कवि, ओजस्वी वक्ता धर्मेन्द्र शुक्ल 'आलोक' जी की 25वीं पुण्यतिथि पर उनके निवास स्थान 160/7 आवास विकास कॉलोनी, उन्नाव में धर्मेन्द्र आलोक स्मृति सेवा संस्थान द्वारा श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में नर सेवा नारायण सेवा के संस्थापक एवं भाजपा नेता विमल द्विवेदी ने पुष्प अर्पित कर 'आलोक' जी को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सीता शुक्ला तथा पुत्रियाँ श्रीमती प्रतिभा मिश्रा, सुरभि शुक्ला, प्राची मिश्रा भी उपस्थित रहीं और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में हिन्दू जागरण मंच के जिला संयोजक अजय त्रिवेदी, विनय द्विवेदी, अखिल मिश्रा सहित कई अन्य सामाजिक कार्यकर्ता एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।कार्यक्रम के समापन पर 'आलोक' जी के पारिवारिक सदस्य योगेन्द्र तिवारी ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया और श्रद्धासुमन अर्पित किए।

परियर में विकराल हुई गंगा की बाढ़

परियर (उन्नाव)। सदर तहसील के परियर क्षेत्र में गंगा नदी का जलस्तर लगातार बढ़ने से बाढ़ ने विकराल रूप धारण कर लिया है। उन्नावऽकानपुर को जोड़ने वाले परियरऽबिठूर मार्ग पर कई जगह एक से दो फीट तक पानी भर गया है। अगर जलस्तर इसी तरह बढ़ता रहा तो यह महत्वपूर्ण मार्ग पूरी तरह से प्रभावित हो जाएगा। गंगा के उफान से परियर क्षेत्र के करीब एक दर्जन गांवों का संपर्क मुख्य मार्ग से कट गया है। इन गांवों में मानाबांग्ला, ललतूपुरवा, महानंदा पुरवा, टपरा, अतरी, बहरौला, पनपथा, जुड़ापुरवा, बाबूबंगला और वंदनपुरवा शामिल हैं। लोगों की आवाजाही का एकमात्र साधन अब नाव रह गया है। लेखपाल संघ के अध्यक्ष दीपचंद्र ने बताया कि बाढ़ का पानी पहले की तुलना में और अधिक हो गया है। कटरी क्षेत्र में राहत और बचाव कार्यों के लिए सभी नावें तैनात कर दी गई हैं। वहीं, स्थानीय लोग ऊंचे स्थानों और बाढ़ राहत शिविरों में शरण लेने को मजबूर हो रहे हैं।

थोड़ी सी बरसात में खुली नगर पंचायत की सफाई व्यवस्था की पोल

पुरवा (उन्नाव)। नगर पंचायत की सफाई व्यवस्था की हकीकत सोमवार की अपरान्ह सामने आ गई, जब थोड़ी सी बरसात में ही नालियां चोक हो गईं और कई घरों में पानी घुस गया। हालात बिगड़ने पर मोहल्लावासियों ने एसडीएम से शिकायत की, जिसके बाद जलनिकास दुरुस्त कराया गया। कस्बा और आसपास के क्षेत्रों में अपरान्ह तेज बारिश होते ही नगर पंचायत क्षेत्र के मिर्री चौराहा और मझिगवां तिराहे के बीच की नाली चोक हो गई। नतीजतन घरों के भीतर बरसाती पानी भर गया। पानी के साथ-साथ कीड़े-मकोड़े भी घरों में घुसने लगे, जिससे लोगों को भारी परेशानी उठानी पड़ी। शुरुआत में नगर पंचायत प्रशासन ने शिकायत पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद मोहल्लावासियों ने एसडीएम प्रमेश श्रीवास्तव को फोन कर स्थिति से अवगत कराया और मौके का वीडियो भी भेजा। एसडीएम ने तत्काल ईओ को सफाईकर्मी भेजने का निर्देश दिया। कार्रवाई के बाद नालियों का जलनिकास सुचारु हो सका और लोगों को राहत मिली।

मासूम से दुष्कर्म के आरोपी को सजा-ए-मौत

बांदा। जनपद के चिल्ला थाना क्षेत्र के चकला गांव में तीन माह पूर्व घटित मासूम से दुष्कर्म कांड के आरोपी को विशेष न्यायाधीश पाक्सो कोर्ट ने मृत्युदंड की सजा सुनाई है। अदालत ने इसे घ्दुर्लभतम से दुर्लभ अपराध मानते हुए आरोपी को फांसी की सजा दी। फैसले के दौरान अदालत परिसर में पीड़िता के परिजनों और ग्रामीणों की भीड़ मौजूद रही। यह मामला उस समय सुर्खियों में आया था जब गांव की एक मासूम बच्ची के साथ दरिंदगी की वारदात सामने आई थी।

नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय में अध्यक्ष ने आधार संशोधन केंद्र का फीता काटकर किया शुभारंभ

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

कौशाम्बी। अम्बेडकर भवन स्थित नगर पालिका परिषद भरवारी कार्यालय में सोमवार को अध्यक्ष कविता पासी द्वारा आधार कार्ड संशोधन केंद्र का फीता काटकर कार्य की शुरुआत की गयी। इस दौरान अध्यक्ष ने अपने सम्बोधन में कहा कि आधार संशोधन व नये आधार बनवाने के लिए लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही थी जिसे देखकर नगर पालिका कार्यालय में आधार केंद्र खोलकर कार्य की शुरुआत की गयी अब नगर के लोगों को आधार कार्ड संशोधन व नया आधार कार्ड बनवाने के लिए भटकना नही पड़ेगा। केंद्र का संचालन आशीष पटेल द्वारा किया जायेगा। इस दौरान अधिशासी अधिकारी राम सिंह, सभासद विजय पाल, सभासद सादाब सिद्दीकी, सभासद प्रतिनिधि तुषार केसरवानी, प्रतिनिधि पंकज मौर्या, प्रतिनिधि राजू पासी व प्रतिनिधि घनश्याम मौर्या उपस्थित रहे।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आत्मचिंतन एवं स्वनिर्णय की शक्ति होना अत्यन्त आवश्यक

- सदर तहसील में विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

बांदा। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण-नई दिल्ली तथा उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के तत्वावधान में एवं जनपद न्यायाधीश / अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा देवेन्द्र सिंह प्रथम के निर्देशन में जिला प्रोबेशन कार्यालय, बांदा के सहयोग से आज महिलाओं की सुरक्षा व उन्हे आत्मनिर्भर बनाने, महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर होने वाले यौन शोषण से बचाव तथा मध्यस्थता के सम्बंध में विधिक जागरुकता शिविर का आयोजन तहसील सदर बांदा के सभागार में किया गया। शिविर की अध्यक्षता श्रीपाल सिंह, अपर जिला जज / सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा द्वारा की गयी।

श्रीपाल सिंह, अपर जिला जज / सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा ने अपने सम्बोधन में महिलाओं को प्राप्त मुफ्त कानूनी सहायता, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से बचाव, देश की प्रत्येक महिला को सुरक्षा की भावना प्रदान करना, पुरुषो के समान पारिश्रमिक का लाभ आदि के सम्बंध में विस्तार से व्याख्यान किया गया। महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्य हत्या, मानव तस्करी, पीछा करना, यौन शोषण, लिंग के आधार पर परेशान करना, यौन उत्पीड़न और इनमें सबसे भयावह अपराध बलात्कार जैसे अत्याचारों का शिकार होना पड़ता है। ऐसे उत्पीड़न का शिकार असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाएं, घरेलू काम करने वाली महिलाएं, निजी या सरकारी संगठनों में कार्य करने वाली महिलाएं होती है। सचिव महोदय ने बताया कि महिलाओं को ऐसी किसी प्रकार की समस्या होने पर वे अपना प्रार्थना पत्र कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा स्वयं आकर अथवा डाक के माध्यम से भी दे सकती है जिस पर उन्हे मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान की जायेगी। सचिव द्वारा बताया गया कि वर्तमान समय में प्रायः यह देखा जा रहा हैं कि पारिवारिक मामलों की संख्या अत्याधिक बढ़ती जा रही हैं, जिससे न सिर्फ पति-पत्नी और परिवारों का विघटन हो रहा है अपितु उनके बच्चों का जीवन भी अन्धकारमय हो रहा हैं। न्यायालयों में लम्बित वैवाहिक विवाद के अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण कर टूटते परिवारों का बचाना अति आवश्यक हैं, जिसमें मा0 राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली द्वारा सम्पूर्ण देश में संचालित राष्ट्र हेतु मध्यस्थता अभियान अत्याधिक महत्वपूर्ण व आवश्यक हैं। इस अभियान से पक्षकारों के समय व धन की बचत होगी एवं त्वरित न्याय भी मिलेगा तथा न्यायालयों में लम्बित वादों की संख्या में अत्याधिक कमी भी आयेगी।

विकास पाण्डेय-तहसीलदार सदर, बांदा ने कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आत्मचिंतन एवं स्वनिर्णय की शक्ति होना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होने बताया कि महिलाओं को उन नकारात्मक स्थितियों से बचना चाहिए जो उनके सशक्त होने में बाधक है। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के कल्याण हेतु संचालित निराश्रित महिला पेंशन योजना, मुख्यमन्त्री कन्या सुमंगला योजना, जननी सुरक्षा योजना आदि के सम्बंध में जानकारी प्रदान करते हुए धारा-125 सीआरपीसी0 के अन्तर्गत भरण-पोषण के सम्बंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

छात्र-छात्राओं को साइबर ठगी शिकार से बचने के लिए किया जागरूक

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

बबेरू/बांदा। बबेरू तहसील क्षेत्र अंतर्गत कैलाशपति इंटर कालेज बेरांव मे सोमवार की दोपहर बबेरू कोतवाली पुलिस की साइबर टीम ने कालेज पर पहुंचकर मौजूद सभी छात्र छात्राओं को साइबर से ठगी के शिकार से बचने के लिए एवं महिला सशक्तिकरण तहत जागरूक किया गया है। बबेरू कोतवाली में तैनात महिला उप निरीक्षक निक्की पटेल, कंप्यूटर ऑपरेटर पवन कुमार साहू, महिला कांस्टेबल विकल पाल हेड कांस्टेबल सुरेंद्र कुमार कांस्टेबल सुशील कुमार के द्वारा सभी छात्र छात्राओं को ठगी से बचाव को जागर किया, वही इस समय नाना प्रकार के अफवाहों से ड्रोन कैमरे उड़ रहे हैं। चोरियां हो रही हैं, इस विषय में जानकारी दी, और कहा कि कोई सही जानकारी अगर आप लोगों को मिलती है, तो पुलिस को सूचना दे, अपने मोबाइल से अपना अकाउंट ना बताएं, तथा आधार कार्ड व ओटीपी नंबर अनजान व्यक्ति को ना दे, जिससे आप ठगी का शिकार नहीं हो पाएंगे, अगर ओटीपी नंबर कोई फोन से मांगता है,तो उसको अगर आप ओटीपी नंबर दे दिया तो आप ठगी के शिकार हो जाएंगे, इसलिए किसी को ओटीपी नंबर न बताएं, जिसको लेकर सभी छात्र छात्राओं को साइबर अपराध को लेकर जागरूक किया है। इस मौके पर कॉलेज के प्रधानाचार्य कृष्ण अवतार चतुर्वेदी, राजकरण सिंह पटेल, रोहित पांडे, विनय सिंह, सहित विद्यालय के सभी शिक्षक शिक्षिका एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रखें।

जनपद में चलाया गया विशेष सघन बैंक चेकिंग अभियान

बांदा। पुलिस अधीक्षक बांदा पलाश बंसल के निर्देशन में जनपद में अपराध तथा अपराधियों पर नियंत्रण लगाये जाने तथा बैंकों और उसके आसपास के क्षेत्रों से होने वाली घटनाओं- लूट, छिनैती, चोरी तथा टप्पेबाजी को नियंत्रित करने के लिए आज जनपद में सघन बैंक चेकिंग अभियान चलाया गया । अभियान के क्रम में समस्त थाना क्षेत्रों में पुलिस द्वारा एटीएम/बैंक शाखाओं को चेक किया गया । चेकिंग के दौरान एटीएम/बैंकों में लगे सुरक्षा उपकरणों यथा सीसीटीवी कैमरों, आपातकालीन अलार्म तथा अग्निशामक यंत्रों आदि को चेक किया गया एवं 24 घण्टे सीसीटीवी कैमरों को चालू रखने हेतु निर्देशित किया गया । पुलिस द्वारा बैंक अधिकारियों/कर्मचारियों से वार्ता कर उन्हे बैंक का कार्य सुचारू रुप से चलाने के लिए पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था प्रदान करने का आश्वासन दिया गया।

ग्राम रोजगार सेवकों ने प्रदर्शन कर डीएम को सौंपा ज्ञापन

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

बांदा। सोमवार को कृषि विभाग के अन्तर्गत होने वाले सर्वे क्राप सर्वे से कराये जाने सहित अन्य मांगों को लेकर ग्राम रोजगार सेवक पंचायत मित्र वेलफ़ेयर एसोसिएशन ने प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर समस्याओं को समाधान की मांग की है। डीएम को दिये ज्ञापन में बताया है कि वे सभी ग्राम रोजगार सेवक मनरेगा योजना से जुड़े कार्मिक हैं। उनका काई हेल्थ बीमा भी नहीं है और ना ही उच्च गुणवत्ता के मोबाइल उनके पास हैं। घर के मोबाइलों के द्वारा वे किसी तरह से एनएमएमएस और जियो टैगिंग का कार्य किसी प्रकार से कर पाते हैं। इस कार्य को करने में उनको काफी जटिलताओं का सामना करना पड़ता है। मांग की कि उनको क्राप सर्वे से कार्यमुक्त किया जाये। इस कार्य को प्राईवेस सर्वेयरों से लिया जाये। सोशल ऑडिट टीम के द्वारा अपने अधिकारों से हटाकर अनैतिक दबाव बनाया जाये। मानदेय का भुगतान न होने से उनके परिवारों को भरण पोषण व इलाज नहीं मिल पाता। उन्होंने समय से भुगतान दिये जाने की मांग की है।

तहसील दिवस पर एसपी ने की जनसुनवाई

- एसपी दीपक भूकर ने सुनीं शिकायतें, त्वरित कार्रवाई के दिए निर्देश

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

जनसमस्या सुनते एसपी दीपक भूकर

उन्नाव। तहसील दिवस पर सोमवार को सदर तहसील में आयोजित जनसुनवाई में पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर ने आम जनता की समस्याओं को गंभीरता से सुना। उन्होंने पुलिस से जुड़ी शिकायतों पर तुरंत और प्रभावी कार्रवाई के निर्देश दिए।

जनसुनवाई में जिलाधिकारी गौरांग राठी भी मौजूद रहे। उन्होंने प्रशासनिक समस्याओं के निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। वहीं, पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पुलिस का दायित्व है कि हर पीड़ित को न्याय मिले और उनकी समस्याओं का समाधान प्राथमिकता पर किया जाए।

पुलिस अधीक्षक ने अधिकारियों को चेतावनी दी कि जनसुनवाई में प्राप्त शिकायतों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सभी को भरोसा दिलाया कि पुलिस पारदर्शिता और संवेदनशीलता के साथ जनता की समस्याओं का निराकरण करेगी। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी सदर क्षितिज द्विवेदी और क्षेत्राधिकारी नगर दीपक यादव भी मौजूद रहे।

ऑनलाइन बैंकिंग फ्रॉड में पीड़ित को दिलाई गई राहत

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

उन्नाव। साइबर अपराध के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कोतवाली सदर पुलिस ने ऑनलाइन बैंकिंग फ्रॉड का शिकार हुए एक पीड़ित को पूरी रकम वापस दिलाने में सफलता हासिल की है। पुलिस की तत्पर कार्रवाई से पीड़ित के खाते में 5795 रुपये की संपूर्ण धनराशि रिफंड कराई गई। जानकारी के मुताबिक, कब्बाखेड़ा निवासी अनिवेश सिंह ने 29 अगस्त 2025 को ऑनलाइन शॉपिंग के लिए ट्रांजेक्शन किया था। इस दौरान गलती से एक फर्जी वेबसाइट पर भुगतान हो गया और उनके खाते से 5795 रुपये कट गए। घटना की शिकायत उन्होंने साइबर पोर्टल पर दर्ज कराई थी। पुलिस अधीक्षक उन्नाव के कुशल निर्देशन में की गई इस कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक संजीव कुमार कुशवाहा, अपराध निरीक्षक राजेश यादव और महिला आरक्षी सोनिया शर्मा शामिल रहे।

यूनेस्को की 2025 थीम से प्रेरित नई पहल

- औरास में शिक्षक प्रदीप वर्मा ने 25 अभिभावकों के साथ साक्षरता व डिजिटल ज्ञान की पाठशाला शुरू की

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

उन्नाव। विश्व साक्षरता दिवस पर औरास के शिक्षक प्रदीप वर्मा ने 25 अभिभावकों को लेकर नई पाठशाला की शुरुआत की। इस पहल का उद्देश्य न केवल कागज़ पर पढ़ने-लिखने और अंकगणित का ज्ञान देना है, बल्कि डिजिटल युग में सुरक्षित और उचित तरीके से डिजिटल सामग्री तक पहुँचने, समझने और उसका उपयोग करने की क्षमता भी विकसित करना है।

प्रदीप वर्मा ने कहा कि वैश्विक स्तर पर साक्षरता दर में सुधार के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी पढ़ने-लिखने के बुनियादी कौशल का अभाव है। साक्षरता केवल पढ़ने-लिखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र विचार, निर्णय लेने, मानवाधिकारों की समझ, सामाजिक जुड़ाव, व्यक्तिगत विकास और वैश्विक नागरिकता की ओर बढ़ने का प्रवेश द्वार है। यूनेस्को ने अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 2025 की थीम ह्लबहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देनाः पारस्परिक समझ और शांति के लिए साक्षरताङ्क तय की है। इसी से प्रेरणा लेते हुए प्रदीप वर्मा ने पाठशाला की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि बहुभाषी शिक्षा समावेशिता को बढ़ावा देकर विविध समुदायों के बीच संवाद की खाई को कम करेगी और वैश्विक सद्भाव को मजबूत बनाएगी। साथ ही यह हाशिए पर रहने वाले समूहों को उनकी मातृभाषा में सीखने का अधिकार भी सुनिश्चित करेगी, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक उनकी पहुँच बेहतर होगी।

रामपुर गढ़ौवा गांव में किए गए सर्वेक्षण का हवाला देते हुए शिक्षक ने बताया कि यहां ज्यादातर वयस्क निरक्षर हैं, जिनमें दो-तिहाई महिलाएं शामिल हैं। वहीं कई बच्चे बिना पर्याप्त साक्षरता कौशल हासिल किए ही स्कूल की पढ़ाई पूरी कर लेते हैं। इस स्थिति में अभिभावकों को सशक्त बनाना बेहद जरूरी है, ताकि वे न केवल खुद साक्षर बनें बल्कि बच्चों को भी शिक्षा के प्रति प्रेरित कर सकें। कार्यशाला के पहले दिन पढ़ने-लिखने से आगे बढ़कर समानता, गैर-भेदभाव, कानून का शासन, न्याय, विविधता और सहिष्णुता के सम्मान जैसे मूल्यों पर चर्चा हुई। डिजिटल युग की साक्षरता पर विशेष बल देते हुए शिक्षक ने कहा कि अब लोगों को केवल अक्षरज्ञान ही नहीं, बल्कि डिजिटल सामग्री को समझने, उसका मूल्यांकन करने और उससे जुड़ने की क्षमता भी जरूरी है। साक्षरता व्यक्ति को विश्वसनीय जानकारी तक पहुँचने और जटिल सूचना परिवेशों में सही निर्णय लेने में मदद करती है। शिक्षक प्रदीप वर्मा इससे पहले उत्तर प्रदेश नशामुक्ति आंदोलन, ग्रीन एंड क्लीन यूपी अभियान, महिला सशक्तिकरण और बालिका शिक्षा के लिए भी सक्रिय रूप से प्रयास कर चुके हैं। इस बार उन्होंने अभिभावकों को साक्षर बनाने का बीड़ा उठाया है। कार्यक्रम में स्टाफ सदस्य इंद्रपाल और रमनजीत कौर ने भी हिस्सा लिया और अभिभावकों को अक्षरज्ञान करवाया।

लखीमपुर खीरी में समृद्धि के शताब्दी संकल्प पर मंथन, प्रबुद्धजनों ने रखे सुझाव

क्यूआर कोड स्कैन कर बताइए अपना सुझाव, सीधे पहुँचेगा सरकार तक : नोडल अधिकारी

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखीमपुर खीरी। विकसित उत्तर प्रदेश और आत्मनिर्भर भारत का सपना अब केवल सरकार की योजनाओं तक सीमित नहीं, बल्कि हर घर की भागीदारी से जुड़ रहा है। कलेक्ट्रेट के अटल सभागार में आयोजित शताब्दी संकल्प अ2047 कार्यशाला में प्रबुद्धजनों से लेकर किसानों, उद्यमियों, शिक्षकों और श्रमिकों तक सबने अपने विचार साझा किए। किसानों ने आधुनिक, प्राकृतिक खेती की दिशा दिखाई, उद्योग जगत ने निवेश व कनेक्टिविटी की जरूरत बताई, वहीं शिक्षा व श्रमिक संगठनों ने जनहित से जुड़े सुझाव दिए। इस कार्यशाला की अध्यक्षता नोडल अधिकारी मिनिस्ती एस ने की। समिति में शासन से नामित विशेषज्ञों में सेवानिवृत्त आईएएस कुमदलता श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त आईएफएस अजय कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक यूपीसी कॉरपोरेशन डॉ. रामशब्द जैसवारा, सेवानिवृत्त मुख्य

कृषि से उद्योग तक विचारों का संगम, प्रबुद्ध समिति की हुई कार्यशाला

अभियंता पीडब्ल्यूडी सलिल यादव तथा वाईडी कॉलेज से हेमंत पाल शामिल हुए। कार्यशाला में अर्थशक्ति, सृजन शक्ति और जीवन शक्ति विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। कार्यशाला की शुरुआत में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल और सीडीओ अभिषेक कुमार ने नोडल अधिकारी एवं विशेषज्ञों को पुष्पगुच्छ देखकर स्वागत किया।

कार्यशाला की शुरुआत में सीडीओ अभिषेक कुमार ने कार्यशाला की आवश्यकता और प्रासंगिकता बताई। सीडीओ ने कहा कि इस कार्यशाला में पदाधिकारियो ने मा. प्रधानमंत्री की संकल्पना को साकार किए जाने के उद्देश्य से अपने महत्वपूर्ण सारगर्भित सुझाव दिए।आईएमए अध्यक्ष दीपक अग्रवाल ने राजापुर व छाउछ के अलावा एक नए इंडस्ट्रियल एरिया की जरूरत बताई। उन्होंने ओडीओपी में प्लाईवुड उद्योग शामिल करने और मंडी टैक्स में राहत की मांग की। उद्यमी रमेश अग्रवाल ने तकनीकी ग्रेड यूरिया केंद्र की स्थापना पर जोर दिया। व्यापारियों ने दिल्ली से बेहतर ट्रेन कनेक्टिविटी की आवश्यकता जताई।खांडसारी उद्योग के प्रतिनिधियों ने नियमों में शिथिलता की मांग उठाई। श्रमिक संगठन के पदाधिकारी अरविंद मिश्रा और यूसुफ ने मूलभूत सुविधाओं से लैस लेबर अड्डों की स्थापना का मुद्दा रखा। माध्यमिक शिक्षा संगठन के पदाधिकारी राजेंद्र कुमार आर्य, विशाल वर्मा, मीनाक्षी तिवारी ने अपने विचार रखे। बेसिक शिक्षा संगठन से संजय मिश्रा, राकेश मिश्रा, आभा शुक्ला, डॉ. नमिता श्रीवास्तव ने भी सारगर्भित सुझाव दिए।

भारत की उन्नति के लिए अर्थ, सृजन और जीवन शक्ति जरूरी : कुमदलता श्रीवास्तव

सेवानिवृत्त आईएएस कुमदलता श्रीवास्तव ने कहा कि प्रधानमंत्री की संकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से यह पैनल प्रबुद्धजनों से सुझाव प्राप्त करने आया है। भारत की उन्नति के लिए अर्थशक्ति, सृजन शक्ति और जीवन शक्ति को विस्तार देना आवश्यक है। प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपने मन में उठ रहे प्रश्न और सुझाव अवश्य साझा करें, ताकि उन्हें शासन तक पहुँचाकर मूर्त रूप दिया जा सके।

जनभागीदारी से ही सफल होगा शताब्दी संकल्प : सलिल यादव

शताब्दी संकल्प अ2047 कार्यशाला में सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता पीडब्ल्यूडी सलिल यादव ने कहा कि इस संकल्प का उद्देश्य आमजन के सुझाव और सहभागिता को जानना है। जनता की भागीदारी और सारगर्भित विचार ही प्रदेश को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने में मदद करेंगे। कार्यशाला के सफल आयोजन पर जिला प्रशासन को धन्यवाद दिया।

शताब्दी संकल्प को पूरा करने में कृषकों की महती भूमिका : डॉ. जैसवारा

सेनि कृषि अधिकारी यूपीसी कॉरपोरेशन डॉ. रामशब्द जैसवारा ने कहा कि समर्थ और समृद्ध उत्तर प्रदेश बनाने के लिए इस तरह के आयोजन महत्वपूर्ण हैं। शताब्दी संकल्प को पूरा करने में कृषकों की महती भूमिका है, क्योंकि कृषि क्षेत्र ही प्रदेश की अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता की रीढ़ है। किसानों के विचार और सुझाव बेहद अहम हैं, जिन पर अमल कर हम प्रदेश को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं।

प्रगतिशील किसान मुरलीधर, अशोक शुक्ला और रामनरेश सहित बड़ी संख्या में किसानों ने कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने के सुझाव दिए। किसानों ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के लक्ष्य को हासिल करने के लिए खेती-किसानी को आधुनिक तकनीक से जोड़ना बेहद जरूरी है। वही प्राकृतिक खेती को भी बढ़ावा देने की बात कही। साथ ही युवाओं को कृषि से जोड़ने और उन्हें उद्यमिता की दिशा में प्रेरित करने की आवश्यकता बताई। नोडल अधिकारी ने की हर परिवार से जुड़ने की अपील, डट कोड और विशेष पोर्टल से सुझाव देना बेहद आसान नोडल अधिकारी गन्ना आयुक्त मिनिस्ती एस ने जिले के प्रत्येक परिवार से सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया है। अब हर परिवार सीधे सरकार तक अपने सुझाव पहुँचा सकता है।नोडल ने बताया कि डट कोड और विशेष पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन सुझाव देना बेहद सरल है। उन्होंने कहा कि वितरित किया गया फोल्डर केवल जानकारी नहीं, बल्कि एक आमंत्रण है। अपने विचार और संकल्प साझा करने के लिए अभी QR कोड स्कैन करें या विज़िट करें :https://samarthuttarpradesh.up.gov.in&

छोटी काशी गोला कॉरिडोर का एडीएम ने किया निरीक्षण, सुस्त रफ्तार पर जताई नाराज़गी

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखीमपुर खीरी। गोला गोकर्णनाथ कॉरिडोर परियोजना की रफ्तार सुस्त देखकर एडीएम नरेंद्र बहादुर सिंह सख्त हो गए। सोमवार को उन्होंने उप निदेशक पर्यटन कल्याण सिंह, एसडीएम गोला युगांतर त्रिपाठी और यूपी पीसीएल के अभियंताओं के साथ साइट का निरीक्षण किया। इस दौरान एडीएम ने कॉरिडोर निर्माण के प्रत्येक कंपोनेंट की बारीकी से जांच की और निर्माण एजेंसी को कई कड़े निर्देश दिए। निरीक्षण में सामने आया कि कॉरिडोर निर्माण की गति अपेक्षा के अनुरूप नहीं है। जिस पर एडीएम ने नाराज़गी जताते हुए कहा कि यदि समय पर काम नहीं हुआ तो जिम्मेदारों पर कार्यवाही तय है। उन्होंने एजेंसी को साफ निर्देश दिए कि निर्माण में और मजदूर लगाए जाएं ताकि काम की रफ्तार तेज हो। उन्होंने कहा कि यह महत्वाकांक्षी परियोजना सरकार और आमजन दोनों के लिए बेहद अहम है। इसे हर हाल में समयबद्ध पूरा किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि काम की गुणवत्ता पर कोई समझौता नहीं होगा। इसके लिए थर्ड पार्टी से समय-समय पर जांच कराई जाए।

अजान चौकी क्षेत्र में ईंट भट्ठे पर चोरी की वारदात, पुलिस की कार्यशैली पर सवाल

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

अजान खीरी। हैदराबाद थाना की अजान चौकी क्षेत्र के ग्राम सकेथू में स्थित राजा ईंट उद्योग पर बीती शनिवार रात को अज्ञात चोरों ने धावा बोलते हुए जनरेटर से 20 लीटर डीजल और एक बैट्री चोरी कर ली। इस घटना की जानकारी मिलने पर राजा ईंट उद्योग के मुनीम नरेंद्र कुमार ने अजान चौकी पुलिस को लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है, लेकिन अभी तक पुलिस ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की है।

मुनीम नरेंद्र कुमार ने बताया कि सुबह करीब 4:00 बजे ईंट भट्ठे पर काम कर रहे हैं मजदूरों ने उन्हें फोन पर जानकारी दी कि इंटरलॉकिंग मशीन चलाने जा रहे थे लेकिन मशीन नहीं चली जब उन्होंने देखा तो बैटरी गायब थी और डीजल टंकी में 20 लीटर डीजल कम था। मुनीम नरेंद्र कुमार का आरोप है कि घटना के बाद से पुलिस ने अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की है, जिससे क्षेत्र में अपराधियों के हौसले बुलंद हो रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस तरह की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं और पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठ रहे हैं। लोगों का आरोप है कि पुलिस अपनी जिम्मेदारियों से बच रही है और अपराधियों पर लगाम लगाने में असफल हो रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पुलिस की लापरवाही के कारण क्षेत्र में अपराध बढ़ रहा है और लोगों में असुरक्षा की भावना गहराती जा रही है। लोगों ने पुलिस से मांग की है कि जल्द से जल्द चोरों को पकड़कर चोरी की गई सामग्री बरामद की जाए और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

अजान चौकी प्रभारी अशोक सिंह ने कहा कि वह अभी बाहर हैं और उन्हें जानकारी मिली है कि ईंट भट्ठे पर चोरी हुई है। वह जानकारी इकट्ठा कर रहे हैं और जल्द ही कार्रवाई करेंगे, लेकिन लोगों को लगता है कि पुलिस अपनी जिम्मेदारियों से बच रही है और मामले को दबाने की कोशिश कर रही है। अब देखना यह है कि पुलिस इस मामले में क्या कार्रवाई करती है और क्या वह चोरों को पकड़कर चोरी की गई सामग्री बरामद कर पाती है या नहीं। लोगों को उम्मीद है कि पुलिस अपनी जिम्मेदारियों को समझेगी और मामले में ठोस कार्रवाई करेगी, लेकिन अगर पुलिस फिर से लापरवाही बरतती है तो लोगों का आक्रोश और बढ़ सकता है।

गोला गोकर्णनाथ में संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन

गोला गोकर्णनाथ खीरी। तहसील गोला के सभागार में उप जिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस के दौरान विभिन्न विभागों की 59 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें से राजस्व एवं आपदा विभाग की 20 शिकायतें, पुलिस विभाग की 5 शिकायतें, खाद एवं रसद विभाग की 10 शिकायतें और अन्य विभागों की शिकायतें शामिल थीं। संपूर्ण समाधान दिवस में राजस्व एवं आपदा विभाग की 3 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया, जबकि शेष 56 शिकायतों को संबंधित विभागों के अधिकारियों को तुरंत निस्तारण हेतु प्रेषित की गईं। इस अवसर पर तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित इस समाधान दिवस में अधिकारियों ने फरियादियों की शिकायतें सुनीं और उनके निस्तारण के लिए आवश्यक कार्रवाई की।

मत्स्य पालन में आ रही समस्याओं का समाधान करने की मांग: सुरेश चंद्र कनौजिया

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

गोला गोकर्णनाथ खीरी। मत्स्य विभाग कल्याण एसोसिएशन उत्तर प्रदेश की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मत्स्य पालन में आ रही समस्याओं पर चर्चा की गई और इन समस्याओं का समाधान करने के लिए उच्च अधिकारियों से मुलाकात करने का निर्णय लिया गया। बैठक में प्रदेश अध्यक्ष सुरेश चंद्र कनौजिया ने कहा कि मत्स्य पालन के लिए तालाबों की उपलब्धता, जल पूर्ति, बिजली कनेक्शन और अतिक्रमण हटाने जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालकों को शासन स्तर से तालाबों में जल की पूर्ति हेतु बोरिंग और बिजली कनेक्शन की आपूर्ति कराई जानी चाहिए। इसके अलावा, बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि मत्स्य पालकों को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास उपलब्ध कराए जाने चाहिए और तालाबों पर किए गए अतिक्रमण को तत्काल हटाया जाना चाहिए। बैठक में महासचिव गिरजा शंकर कश्यप, कोषाध्यक्ष जितेंद्र कुमार कश्यप और अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

ढकवा चौकी क्षेत्र में कानून व्यवस्था की धज्जियां

चोरी, मारपीट और अवैध शराब का कारोबार बढ़ा

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

अज़ान खीरी। ढकवा चौकी क्षेत्र में कानून व्यवस्था की स्थिति लगातार खराब होती जा रही है। क्षेत्र में चोरी, मारपीट, जुआ और अवैध शराब का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। महिला चौकी इंचार्ज होने के कारण पुलिस सहायता मिलना मुश्किल हो जाता है, जिससे पीड़ितों को थाने या उच्चाधिकारियों के दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। ढकवा चौकी क्षेत्र में चोरी की घटनाएं बढ़ रही हैं। उद्यानपुर, भल्लिया बुजुर्ग और शेरपुर सहित कई गांवों में चोरी की घटनाएं हुई हैं, लेकिन पुलिस ने अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की है। पीड़ितों ने तहरीर दी है, लेकिन मुकदमे नहीं लिखे गए हैं। ढकवा चौकी क्षेत्र में अवैध शराब का कारोबार बड़े पैमाने पर हो रहा है। थाना हैदराबाद की

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 14 अगस्त 2025 को शिवरानी पत्नी श्रीराम निवासी तुलसीपुर 25 लीटर, 20 अगस्त 2025 को उषा देवी पत्नी प्रभू दयाल निवासी सेमरई 25 लीटर, 21 अगस्त 2025 को मुन्नी देवी पत्नी रामू निवासी सेमरई 20 लीटर, 27 अगस्त 2025 को गिरी पुत्र ब्रह्मा गिरि को पीतपुर जो चौकी से महज पांच सौ मीटर की दूरी से पकड़ा गया। इसके अलावा, 29 अगस्त 2025 को सुनीता पत्नी जागेश्वर निवासी भल्लिया बुजुर्ग को 10 लीटर और 7 सितंबर 2025 को जगीस पुत्र श्रीराम निवासी घुघुलपुर को 20 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ पकड़ा गया। ढकवा चौकी क्षेत्र में रात्रि गश्त की कमी है। पुलिस शाम ढलने के बाद दिखाई नहीं देती, जिससे अपराधियों को बढ़ावा मिलता है। ग्रामीणों का कहना है कि पहले पुलिस रात को भी हूटर बजाते हुए गश्त करती थी, लेकिन अब कोई नहीं आता।

ढकवा चौकी क्षेत्र के ग्रामीण परेशान हैं। उन्हें पुलिस की सहायता नहीं मिल रही है, जिससे वे थाने या उच्चाधिकारियों के दफ्तरों के चक्कर लगा रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि पुलिस की लापरवाही के कारण अपराध बढ़ रहा है।

करों की वसूली में तेजी लायें अधिकारीः डीएम

बांदा। जिलाधिकारी श्रीमती जे0रीभा की अध्यक्षता में कलेक्टेझट सभागार में कर-करेत्तर एवं राजस्व कार्यों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने स्टाम्प देयकों, आबकारी, व्यापार कर, परिवहन आदि विभागों की कर-करेत्तर वसूली की समीक्षा करते हुए, व्यापार कर एवं स्टाम्प देयकों तथा परिवहन के करों की वसूली बढाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने मण्डी की वूसली कम पाये जाने पर सम्बन्धित मण्डी सचिव को वसूली बढ़ाए जाने तथा परिवर्तन कार्यों में तेजी लाए जाने के निर्देश दिएस उन्होंने परिवहन एवं आबकारी की वसूली बढाये जाने तथा शराब की दुकानों के आकस्मिक चेकिंग कराए जाने के साथ प्रवर्तन कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने तहसीलदार को बडे बकायेदारों से धनराशि की वसूली किये जाने के के निर्देश दिये। उन्होंने आरसी की वसूली शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश तहसीलदार को दिये। उन्होंने राजस्व कार्यों की समीक्षा करते हुए राजस्व वादों का समय के साथ निस्तारण किए जाने तथा पुराने वादों का तेजी से निस्तारण किये जाने के निर्देश राजस्व विभाग के अधिकारियों को दिये।

लखीमपुर खीरी कांग्रेस कार्यालय पर तोड़फोड़ का मामला

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने एफआईआर दर्ज करने की मांग उठाई

लखीमपुर खीरी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय के निर्देशानुसार लखीमपुर खीरी कांग्रेस मुख्यालय पर सोमवार को एक अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक में हाल ही में भाजपा महिला मोर्चा द्वारा कांग्रेस कार्यालय पर की गई कथित तोड़फोड़ और लूट की घटना पर गहरी नाराज़गी जताई गई। बैठक के बाद कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा से मिला और इस प्रकरण में अब तक प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज न होने पर कड़ा विरोध जताते हुए शीघ्र कार्रवाई की मांग की। एसपी ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि मामले पर जल्द कार्यवाही होगी। बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री नकुल दुबे ने कहा, ल्लपूरे देश और प्रदेश में 'वोट जोर, गद्दी छोड़' का नारा गूंज रहा है। भाजपा द्वारा कांग्रेस कार्यालय पर हमला जनता का ध्यान भटकाने का प्रयास है, लेकिन कांग्रेस कार्यकर्ता हर मोर्चे पर इन ताकतों का डटकर मुकाबला करेंगे। वहीं, पूर्व सांसद रवि प्रकाश वर्मा ने कहा, ल्लआने वाले समय में भाजपा की अराजकता और बढ़ेगी। हमें संघर्ष और सतर्कता के साथ जनता के बीच मजबूती से खड़ा होना होगा। इस मौके पर जिलाध्यक्ष प्रहलाद पटेल, प्रदेश महासचिव सैफ अली नक़वी, नगर अध्यक्ष रियाज अहमद मोनू, जिला प्रवक्ता अमित गुप्ता सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ कांग्रेसजन मौजूद रहे।

नगर पंचायत मैलानी में सौहार्द बिगाड़ने के प्रयास पर प्रतिक्रिया

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

मैलानी खीरी। नगर पंचायत मैलानी में कुछ दलाल तत्वों द्वारा सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास किया गया। किंतु नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री भवानी शंकर माहेश्वरी, पत्रकार बंधुओं, आम नागरिकों तथा दोनों समुदायों के समझदारीपूर्ण निर्णय एवं आपसी सहयोग से यह प्रयास असफल हो गया और नगर में शांति व भाईचारा कायम रहा। यह घटना इस बात का प्रतीक है कि नगरवासी किसी भी प्रकार की अफवाहों व असामाजिक तत्वों को सफल नहीं होने देंगे। ऐसे दलालों का समाज से बहिष्कार ही उनके लिए सबसे बड़ी सजा है। गौरतलब है कि उनकी मंशा लाठीचार्ज एवं मुकदमे दर्ज करवाने की थी, किन्तु जनता के विवेकपूर्ण निर्णय ने उनकी नापाक योजना पर पानी फ़ेर

दिया। इस दौरान किसी भी पक्ष पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं हुई, बल्कि दोनों समुदायों ने आपसी समझौते से मामले को सुलझाया। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री भवानी शंकर माहेश्वरी ने राजनीति का ऊँचा स्तर प्रदर्शित करते हुए प्रशासन को भी सचेत किया कि भविष्य में किसी भी धार्मिक कार्यक्रम से पूर्व शांति समिति की बैठक अनिवार्य रूप से आयोजित की जाए। प्रशासन ने अपनी भूल को स्वीकार किया है तथा अपेक्षा की जाती है कि भविष्य में ऐसी त्रुटि की पुनरावृत्ति नहीं होगी। नगर पंचायत मैलानी का यह उदाहरण पूरे जिले में सौहार्द, एकता और भाईचारे की मिसाल बनकर सामने आया है।

छात्र-छात्राओं को साइबर ठगी शिकार से बचने के लिए किया जागरूक

बबेरू/बांदा। बबेरू तहसील क्षेत्र अंतर्गत कैलाशपति इंटर कॉलेज बेरॉव मे सोमवार की दोपहर बबेरू कोतवाली पुलिस की साइबर टीम ने कालेज पर पहुंचकर मौजूद सभी छात्र छात्राओं को साइबर से ठगी के शिकार से बचने के लिए एवं महिला सशक्तिकरण तहत जागरूक किया गया है। बबेरू कोतवाली में तैनात महिला उप निरीक्षक निक्की पटेल, कंप्यूटर ऑपरेटर पवन कुमार साहू, महिला कांस्टेबल विकल पाल हेड कांस्टेबल सुरेंद्र कुमार कांस्टेबल सुशील कुमार के द्वारा सभी छात्र छात्राओं को ठगी से बचाव को जागर किया, वही इस समय नाना प्रकार के अफवाहों से ड्रोन कैमरे उड़ रहे हैं। चोरियां हो रही हैं, इस विषय में जानकारी दी, और कहा कि कोई सही जानकारी अगर आप लोगों को मिलती है, तो पुलिस को सूचना दे, अपने मोबाइल से अपना अकाउंट ना बताएं, तथा आधार कार्ड व ओटीपी नंबर अनजान व्यक्ति को ना दे, जिससे आप ठगी का शिकार नहीं हो पाएंगे।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर दिनांक 8 सितंबर 2025 को नवयुग कन्या महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन बड़े उत्साह और उल्लास के साथ किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्राओं में साक्षरता के महत्व, शिक्षा के प्रसार और सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफ़ेसर मंजुला उपाध्याय के उद्बोधन से हुआ। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि ल्लसाक्षरता केवल पढ़ना-लिखना जानना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तित्व विकास का मूल आधार है।

इस वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था- क्या डिजिटल शिक्षा पारंपरिक शिक्षा की तुलना में अधिक प्रभावी है? प्रतियोगिता में कला संकाय की छात्राओं ने उत्साहपूर्वक

भाग लिया और अपने सशक्त तर्कों व विचारों से सभी को प्रभावित किया। एक ओर जहां पक्ष रखने वाले प्रतिभागियों ने डिजिटल शिक्षा के लाभ, जैसे कि सुलभता, समय की बचत और आधुनिक संसाधनों का उपयोग बताया, वहीं विपक्ष में बोलने वाले प्रतिभागियों ने पारंपरिक शिक्षा की प्रासंगिकता, नैतिक मूल्यों और शिक्षक-छात्र संबंधों की महत्ता पर जोर दिया।

निर्णायक मंडल में प्रोफ़ेसर सरिता कनौजिया, बी.एड. विभाग तथा डॉ. आभा दुबे, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, समाजशास्त्र विभाग शामिल थे। निर्णायकों ने प्रतिभागियों के अभिव्यक्ति कौशल, तर्क क्षमता और प्रस्तुतीकरण के आधार पर मूल्यांकन किया।

प्रतियोगिता के परिणाम निम्नलिखित रहे- प्रथम स्थानः सना कुरैशी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) द्वितीय स्थानः शुभांगी सिंह (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर) द्वितीय स्थानः आफरीन बानो (बी.ए. पंचम सेमेस्टर) तृतीय स्थानः आशी गुप्ता (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर) सांत्वनाः स्वर्णिमा सैनी (बी.ए. पंचम सेमेस्टर) सांत्वनाः जिज्ञासा तिवारी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) विजेताओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षाशास्त्र की विभागाध्यक्ष ऐश्वर्या सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन शिक्षाशास्त्र विभाग की शिक्षिका नीलम यादव द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विभागीय संकाय सदस्य, छात्राएँ एवं निर्णायक मंडल उपस्थित रहे। प्रतियोगिता ने छात्राओं में शिक्षा और साक्षरता के महत्व के प्रति जागरूकता को और भी सशक्त किया।

गावस्कर, शास्त्री, सहवाग एशिया कप के लिए कमेंट्री पैनल में

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत के दिग्गज खिलाड़ी सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री और वीरेंद्र सहवाग के साथ-साथ पूर्व गेंदबाजी कोच भरत अरुण मंगलवार से यूएई में शुरू हो रहे एशिया कप टी20 टूर्नामेंट के लिए सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क के बहुभाषी कमेंट्री पैनल का हिस्सा होंगे। इस टूर्नामेंट के 17वें सत्र में भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, यूएई, ओमान और हांगकांग अगले साल होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप से पहले महाद्वीपीय वर्चस्व के लिए संघर्ष करेंगे। भारत अपने अभियान की शुरुआत बुधवार को यूएई के खिलाफ करेगा। भारत के पूर्व मुख्य कोच शास्त्री, गावस्कर, संजय मांजरेकर, रॉबिन उथप्पा, बाजिद खान, वकार यूनिस, वसीम अकरम, रसेल अर्नोल्ड और साइमन डूल उन कमेंटेटरों में शामिल हैं जिन्हें प्रसारण के विश्व फीड के लिए चुना गया है। सहवाग, इरफान पठान, अजय जडेजा, पूर्व भारतीय बल्लेबाजी कोच अभिषेक नायर और सबा करीम हिंदी कमेंटेटरों के पैनल में प्रमुख नामों में शामिल हैं। सोनी नेटवर्क के मुख्य राजस्व अधिकारी राजेश कौल ने कहा, ''सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क एशिया कप की वापसी के साथ क्रिकेट प्रसारण को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है। भरत अरुण तमिल पैनल में डब्ल्यूवी रमन जैसे पूर्व खिलाड़ियों के साथ शामिल होंगे, जबकि तेलुगु पैनल में वेंकटपति राजू और वेणुगोपाल राव जैसे अन्य लोग शामिल होंगे। सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क की विज्ञप्ति में गावस्कर ने कहा, ''सूर्यकुमार यादव के गतिशील नेतृत्व में टीम इंडिया एशिया कप के मंच पर कदम रख रही है। हम दृढ़ता और अनुभव के मिश्रण को टीम का नेतृत्व करते हुए देख रहे हैं। यह विविधतापूर्ण, बहुमुखी और जुझारू टीम भारतीय क्रिकेट के भविष्य का प्रतीक है। शास्त्री ने भी इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सूर्यकुमार यादव की अगुवाई और शुभमन गिल की उप-कप्तान के रूप में यह भारतीय टीम अनुभव और युवा का एक आदर्श मिश्रण प्रस्तुत करती है। उन्होंने कहा, ''जसप्रीत बुमराह, अभिषेक शर्मा और हार्दिक पांड्या जैसे खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रदर्शन करते रहे हैं, जबकि तिलक वर्मा और हर्षित राणा जैसी प्रतिभाएं टीम में जोश और विकल्प लाती हैं।

गुरदित बाल्कन ओपन में बने सर्वश्रेष्ठ पावरलिफ्टर

नयी दिल्ली। द्रोणाचार्य भूपेंद्र धवन के शिष्य गुरदित सिंह ने बाल्कन ओपन क्लासिक एंड इक्विप्ड (बेंच प्रेस/स्क्वाट/डेडलिफ्ट) चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ पावरलिफ्टर बनकर एक बार फिर इतिहास रच दिया। इससे पहले, 2024 में, उन्होंने इंग्लैंड में इंग्लिश ओपन में भी सर्वश्रेष्ठ पावरलिफ्टर का खिताब जीता था। गुरदित ने जूनियर 110 किलोग्राम वर्ग में सर्वश्रेष्ठ पावरलिफ्टर का पुरस्कार जीता, जबकि सुमित दास ने सीनियर 110 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता और जगदीश सिंह जस्सा ने सीनियर 100 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। 6-7 सितंबर को बेलग्रेड, सर्बिया में आयोजित हुई बाल्कन ओपन पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में, भारत के गुरदित सिंह ने कुल 667.5 किलोग्राम (क्लासिक रॉ) भार उठाकर सर्वश्रेष्ठ पावरलिफ्टर (जूनियर वर्ग) का खिताब जीता। सुमित दास और जगदीश सिंह जस्सा दोनों ने फुल पावरलिफ्टिंग रॉ वर्ग में स्वर्ण पदक जीते।

अफगानिस्तान को हराकर पाकिस्तान ने जीती त्रिकोणीय श्रृंखला

एजेंसी

शारजाह। मोहम्मद नवाज (पांच विकेट) की शानदार गेंदबाजी प्रदर्शन के दम पर पाकिस्तान ने फाइनल मुकाबले में अफगानिस्तान को 75 रनों से हराकर टी-20 त्रिकोणीय श्रृंखला अपने नाम कर ली। 142 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान की टीम पाकिस्तान के गेंदबाजी आक्रमण के आगे लडखड़ाई और एक के बाद एक उसके विकेट गिरते चले गये। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान की पूरी टीम 15.5 ओवर में 66 रन पर ढ़ेर कर मुकाबला 75 रनों से जीत लिया। अफगानिस्तान के केवल दो बल्लेबाज कप्तान राशीद खान (17) और सेदिक़ुल्लाह अटल (13) ही दहाई आंकड़े तक पहुंच सके। नवाज को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' और प्लेयर ऑफ द सीरीज से नवाजा गया। उन्होंने पहले दरविश रसूली और अजमतुल्लाह ओमरजई को लगातार गेंदों पर बिना खाता खोले आउट किया और फिर अपने अगले ओवर की पहली ही गेंद पर इब्राहिम जादरान (नौ) को स्टंप आउट कराकर अपनी हैट्रिक पूरी की। नवाज पाकिस्तान के तीसरे गेंदबाज है जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय टी-20 में हैट्रिक बनाई। उनसे पहले फहीम अशरफ और मोहम्मद हसनैन यह कारनामा कर चुके हैं। मोहम्मद नवाज ने चार ओवर में 19 रन देकर पांच विकेट लिये। अबरार अहमद और सुफियान मकीम को दो-दो विकेट मिले। शाहीन शाह अफरीदी ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले पाकिस्तान ने रविवार रात खेले गये फाइनल मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत खराब रही और उसने पहले ही ओवर में साहिबजादा फरहान (शून्य) का विकेट गंवा दिया।

राज्य स्तरीय सीनियर तीरंदाजी चैंपियनशिप में श्रीगंगानगर ने लहराया परचम

एजेंसी

श्रीगंगानगर। राजस्थान में अलवर जिले के नीमराना में पांच से सात सितम्बर तक आयोजित प्रतिष्ठित राजस्थान सीनियर तीरंदाजी चैंपियनशिप में श्रीगंगानगर के तीरंदाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 13 स्वर्ण, चार सिल्वर और एक कांस्य पदक जीतकर जिले का नाम गौरवान्वित किया है। श्रीगंगानगर तीरंदाजी संघ की अध्यक्ष मंजू बाला ने सोमवार को बताया कि जिले के तीरंदाजों ने विभिन्न श्रेणियों में अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया। पुरुष कंपाउंड टीम में पुलकित काजला, प्रबलप्रताप, यश नेण और जसमीतसिंह की चौकड़ी ने शानदार समन्वय के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इंडियन राउंड इंडिविजुअल स्पर्धा में गुरजीतसिंह ने अपनी सटीक निशानेबाजी से रजत पदक हासिल किया। रिकर्व महिला इंडिविजुअल में अमनदीपकौर ने रजत जीता। वहीं रिकर्व मिक्स टीम में दिलीप रेगर और सुश्री अमनदीपकौर की जोड़ी ने भी रजत पदक पर कब्जा जमाया। उन्होंने बताया कि इसके अलावा, रिकर्व महिला टीम में अमनदीपकौर, कल्पना और हरप्रीतकौर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। इंडियन राउंड पुरुष टीम में गुरजीतसिंह, देवेंद्रसिंह, विक्की और जसदीपसिंह ने एकजुटता और कौशल का प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया। रिकर्व रैंकिंग राउंड में अमनदीपकौर ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। वहीं, इंडियन एलिमिनेशन राउंड में रेखा ने कांस्य पदक जीतकर जिले की उपलब्धियों में एक और तमगा जोड़ा। उन्होंने बताया कि इस चैंपियनशिप में श्रीगंगानगर की जिला टीम ने कुल 18 पदक जीते जिनमें 13 स्वर्ण, चार रजत और एक कांस्य पदक है।

फिडे ग्रां प्री स्विस 2025: महिला वर्ग में वैशाली संयुक्त बढ़त पर, गुकेश-एरिगैसी की बाजी ड्रॉ

एजेंसी

नई दिल्ली। उज़्बेकिस्तान के समरकंद में चल रहे फिडे ग्रां प्री स्विस शतरंज टूर्नामेंट के चौथे दौर के बाद भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. वैशाली महिला वर्ग में संयुक्त रूप से शीर्ष पर बनी हुई हैं। जर्मनी की डिनारा वैगनर के खिलाफ ड्रा खेलने के बाद वैशाली के साथ अब रूस की कैटेरिना लाग्नो भी अंकों में बराबरी पर आ गईं। लाग्नो ने चीन की युक्सिन सॉन्ग को सफ़ेद मोहरों से हराकर संयुक्त बढ़त हासिल की। अब पांचवें दौर में वैशाली और लाग्नो के बीच अहम भिड़ंत होगी, जिसमें वैशाली सफ़ेद मोहरों से खेलेंगी। डिनारा के खिलाफ खेल में वैशाली ने काले मोहरों से ग्रुनफ़ेल्ड डिफेंस अपनाया, लेकिन जर्मन खिलाड़ी की सटीक तैयारी और शुरुआती दौर में किए गए त्याग (रूक के बदले ऊँट) ने बाजी संतुलित कर दी। मध्य खेल में क्वीन अदला-बदली के बाद वैशाली के पास जीत का कोई ठोस मौका नहीं बचा और मुकाबला ड्रा हो गया। ओपन सेक्शन में भारत की दिव्या देशमुख ने शानदार वापसी करते हुए अपनी पहली जीत दर्ज की। उन्होंने मिस्र के जीएम बासेम अमीन को पराजित किया। शीर्ष वरीयता प्राप्त आर. प्रज्ञानानंद को अमेरिका के सबसे कम उम्र के ग्रैंडमास्टर अभिमन्यु मिश्रा ने ड्रा पर रोक दिया। प्रज्ञानानंद के पास एक अतिरिक्त प्यादा था लेकिन मिश्रा ने मजबूत रक्षात्मक चालों से मुकाबला बराबरी पर समाप्त कराया। यह खेल 57 चालों तक चला। विश्व चैंपियन डी. गुकेश और अर्जुन एरिगैसी के बीच ऑल-इंडियन मुकाबला भी ड्रॉ पर समाप्त हुआ। गुकेश के पास हल्का बढ़त का आभास था लेकिन एरिगैसी ने बेहतरीन तैयारी और सही समय पर अदला-बदली करके स्थिति को बराबर कर दिया। खेल 46 चालों के बाद समाप्त हुआ। दुनिया के सबसे मजबूत स्विस टूर्नामेंट में अभी सात दौर शेष हैं। ईरान के परहम मघसूदलू 3.5 अंक लेकर आधे अंक की बढ़त पर हैं। उन्होंने मेजबान खिलाड़ी नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव से कड़ा मुकाबला ड्रा खेला। पिछले संस्करण के ओपन चैंपियन विदित गुजराती ने वापसी करते हुए यूक्रेन के दिग्गज वासिल इवानचुक को हराया। विदित, एरिगैसी, गुकेश और प्रज्ञानानंद 3 अंकों के साथ संयुक्त दूसरे स्थान पर हैं। इनके साथ उज़्बेकिस्तान के अब्दुसत्तोरोव व नादिरबेक याकुबबोएव, हंगरी के रिचर्ड रापोर्ट, जर्मनी के मैथियास ब्लूबाम, स्विट्ज़रलैंड के निकिता वितियोगोव और तुर्की के युवा खिलाड़ी यागिज़ कान एरडोगमस भी बराबरी पर हैं।

संक्षिप्त समाचार

एशिया कप में संजू तोड़ सकते हैं धोनी का रिकॉर्ड

नयी दिल्ली। सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में खेले जाने वाले आगामी एशिया कप 2025 में संजू सैमसन पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के टी-20 में विकेटकीपर बल्लेबाज के रूप में सर्वाधिक छक्के लगाने का रिकार्ड तोड़ सकते है। हाल ही में संजू सैमसन के 'नो लुक सिक्स' की भी काफी चर्चा हुई। जब वो फॉर्म में होते हैं तो उनके बल्ले को रोकना नामुमकिन होता है, केरल लीग में उन्होंने पांच मैचों में ही 30 छक्के लगाकर साबित कर दिया कि वो अंतरराष्ट्रीय टी-20 के सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में से एक हैं और एशिया कप में उन्हें प्लेइंग इलेवन में रखना फायदेमंद साबित होगा। हालांकि अभी यह तय नहीं है कि वे किस नंबर पर खेलने वाले हैं। संजू इस एशिया कप में धोनी का रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं। दरअसल धोनी के नाम किसी विकेटकीपर के द्वारा अंतरराष्ट्रीय टी-20 में सबसे ज्यादा छक्के जड़ने का रिकॉर्ड है। उन्होंने 85 मैचों में 52 छक्के मारे हैं। उनका ये रिकॉर्ड फिलहाल कोई विकेट कीपर बल्लेबाज नहीं तोड़ पाया। लेकिन संजू सैमसन इसके बहुत करीब हैं और मजे की बात है कि वो फुल फॉर्म में भी हैं। संजू फिलहाल 36 छक्के जड़ चुके हैं और धोनी से केवल 17 छक्के दूर हैं। ऐसे में बहुत संभावनाएं हैं कि संजू सैमसन एशिया कप में ही धोनी का ये रिकॉर्ड तोड़ दे। संजू के बाद ऋषभ पंत का नंबर है जो 35 छक्कों के दूसरे साथ नंबर पर हैं। भारतीय टीम अभ्यास के लिए दुबई रवाना हो चुकी है। संजू भी टीम में शामिल हैं और इसीलिए केरल लीग को उन्होंने बीच में ही छोड़ दिया। अबतक खेले मैचों में ही उनका तूफानी अवतार किसी से छिपा नहीं है। केरल लीग में उन्होंने केवल पांच मैच खेले जिसमें उन्होंने 368 रन बनाएं जिसमें 24 चौके और 30 छक्के शामिल हैं। इसी दौरान उन्होंने चार अर्धशतक और एक शतक भी जड़ा। उनका एक गेंद पर 13 रन बनाना भी काफी चर्चा में रहा था। इसी लीग में संजू का स्ट्राइक रेट 186 रहा था जो काबिल ए तारीफ है। पिछले एक साल में ही संजू ने भारतीय टीम के लिए अंतरराष्ट्रीय टी-20 में खेलते हुए 12 मैचों में तीन शतक जड़े हैं, हाल में वो फुल फॉर्म में भी चल रहे हैं ऐसे में देखना है कि उन्हें किस नंबर पर खेलने भेजा जाता है साथ ही वो धोनी का सबसे ज्यादा छक्के का रिकार्ड तोड़ पाते हैं या नहीं।

सिनर को हराकर अल्काराज ने जीता यूएस ओपन पुरुष एकल खिताब

न्यूयॉर्क। स्पेन के दिग्गज कार्लोस अल्काराज ने अपने एथलेटिक कौशल और शॉट-मेकिंग का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए इटली के स्टार जैनिक सिनर को हराकर पुरुष एकल का खिताब अपने नाम किया। दूसरी वरीयता प्राप्त 22 वर्षीय खिलाड़ी ने आर्थर ऐश स्टेडियम में रविवार रात खेले गये फाइनल मुकाबले में सिनर को 6-2, 3-6, 6-1, 6-4 से हराकर यूएस ओपन पुरुष एकल खिताब फिर से हासिल किया और विश्व टेनिस के शिखर पर पहुंच गये है। इस जीत के साथ अल्काराज़ ने 2022 में यूएस ओपन और 2023 में विंबलडन में जीत के बाद अपना तीसरा ग्रैंड स्लैम खिताब हासिल किया और उन्होंने इस साल की शुरुआत में विंबलडन फाइनल में सिनर से मिली हार का बदला भी लिया। अल्काराज ने शुरुआती सेट 6-2 से जीत लिया, दोनों ओर से विजयी शॉट लगाए और सिनर की शुरुआती सर्विस ब्रेक कर लगातार दबाव में रखा। हालांकि, इतालवी खिलाड़ी ने दूसरे सेट में अपनी लय पकड़ी, अपनी सर्विस में सुधार किया और अल्काराज के बैकहैंड को निशाना बनाकर मुकाबला 6-3 से बराबर कर दिया। तीसरा सेट में अल्काराज ने सटीक सर्विस की और शानदार शॉट लगाकर 6-1 से जीत हासिल की। चौथे सेट में सिनर ने डटकर मुकाबला किया, लेकिन अल्काराज ने 6-4 चौथा सेट जीतकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ, अल्काराज़ नोवाक जोकोविच के बाद तीन ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बन गए हैं। उनकी फिटनेस, सामरिक बहुमुखी प्रतिभा और बड़े मंचों पर उभरने की क्षमता ने उन्हें पुरुष टेनिस में एक नए युग की शुरुआत में अग्रणी बना दिया है। विश्लेषकों का मानना है कि सिनर के साथ उनकी प्रतिद्वंद्विता अगले दशक को परिभाषित कर सकती है, ठीक उसी तरह जैसे फ़ेडरर, नडाल और जोकोविच के बीच हुए शानदार मुकाबलों ने किया था।

मनप्रीत ने एशिया कप की जीत को बाढ़ पीड़ित पंजाब के लोगों को समर्पित किया

राजगीर (बिहार)। भारतीय हॉकी टीम के खिलाड़ी मनप्रीत सिंह ने हीरो एशिया कप 2025 की जीत को पंजाब के बाढ़ पीड़ित लोगों को समर्पित किया। मैच जीतने के बाद मनप्रीत ने कहा, मैं इस जीत को पंजाब के लोगों को समर्पित करना चाहता हूं, जो अकल्पनीय शक्ति और लचीलेपन के साथ विनाशकारी बाढ़ का सामना कर रहे हैं। यह जीत हर उस पीड़ित के लिए है जो अपना जीवन फिर से बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है, और उन निस्वार्थ स्वयंसेवकों के लिए है जो जरूरतमंदों को बचाने, उनका समर्थन करने और उनके पुनर्वास के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। आपका जज्बा ही हमारी सच्ची प्रेरणा है, और यह जीत पंजाब के साहस को श्रद्धांजलि है। उल्लेखनीय है कि हरमनप्रीत सिंह की अगुवाई वाली भारतीय हॉकी टीम ने रविवार को फाइनल मुकाबल में पांच बार की विजेता दक्षिण कोरिया को 4-1 से हराकर एशिया कप का खिताब अपने नाम करते हुए अगले साल बेल्जियम और नीदरलैंड की संयुक्त मेजबानी में होने वाले विश्वकप के लिए क्वालिफाई कर लिया था।

अमेरिकी शुल्क, व्यापार तनाव के कारण अगस्त में चीन की निर्यात वृद्धि हुई धीमी

बीजिंग। अमेरिकी शुल्क और व्यापार तनाव के कारण अगस्त में चीन के निर्यात में वृद्धि की रफ्तार धीमी हो गई। चीन की सीमा शुल्क एजेंसी ने सोमवार को बताया कि अगस्त में निर्यात 321.8 अरब डॉलर रहा, जो पिछले साल इसी महीने की तुलना में 4.4 प्रतिशत अधिक है। यह जुलाई में 7.2 प्रतिशत की वृद्धि से कम है। समीक्षाधीन अवधि में कुल आयात 219.5 अरब डॉलर रहा, जो 1.8 प्रतिशत की वृद्धि है।

ऑडी ने 7.8 लाख रुपये तक घटाये वाहनों के दाम, नई कीमतें 22 सितंबर से होगीं लागू

एजेंसी

नई दिल्ली। जर्मन लग्जरी कार निर्माता कंपनी ऑडी इंडिया ने सोमवार को भारत में अपने सभी मॉडलों की कीमतों में 2.6 लाख रुपये से लेकर 7.8 लाख रुपये तक कटौती का ऐलान किया है। नई कीमतें नवरात्रि के पहले दिन 22 सितंबर से लागू होगीं। ऑडी इंडिया ने एक बयान में कहा कि जीएसटी की दरों में बदलाव के बाद उसने अपने सभी उत्पाद पोर्टफोलियो की कीमतों में संशोधन किया है, ताकि ऑटोमोबाइल पर जीएसटी कटौती का लाभ ग्राहकों तक पहुंचाया जा सके। अब ग्राहकों को मॉडल के आधार पर 2.6 लाख रुपये से लेकर 7.8 लाख रुपये तक का लाभ मिलेगा। कंपनी के मुताबिक नई कीमतों के तहत कंपनी की एंट्री-लेवल एसयूवी क्यू3 की शुरुआती कीमत 43.07 लाख रुपये हो जाएगी, जो पहले 46.14 लाख रुपये थी। इसी तरह टॉप-एंड एसयूवी क्यू8 की शुरुआती कीमत 1.18 करोड़ रुपये से घटकर अब 1.1 करोड़ रुपये हो जाएगी। इसके अलावा एसयूवी क्यू5 और क्यू7 जैसे अन्य मॉडलों के साथ-साथ सेडान ए4 और ए6 की कीमतों में भी कमी की गई है। कंपनी ने कहा कि संशोधित कीमतें लागू होने के बाद ऑडी की लक्जरी कारों और एसयूवी रेंज को और अधिक सुलभ बनाएगी, जिससे त्योहारी सीजन से पहले ग्राहकों की मांग में तेजी आएगी। ग्राहक अपनी पसंदीदा कार की सटीक कीमत जानने के लिए ऑडी इंडिया के नजदीकी डीलरशिप पर जा सकते हैं या कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट पर विजिट कर सकते हैं।

अगस्त में सुस्त रही वाहनों की खुदरा बिक्री

नयी दिल्ली। त्योहारी मौसम और जीएसटी में राहत के इंतजार में अगस्त में ग्राहकों ने अपनी खरीद टाल दी जिससे वाहनों की खुदरा बिक्री में सुस्ती देखी गयी। वाहन डीलरों के महासंघ (फाडा) के सोमवार को जारी आंकड़ों में बताया गया है कि अगस्त में यात्री वाहनों (कार, एसयूवी और वैन) की बिक्री अगस्त 2024 के मुकाबले मात्र 0.93 प्रतिशत बढ़ी और कुल बिक्री 3,23,256 इकाई रही। दुपहिया वाहनों में भी 2.18 फीसदी की मामूली तेजी देखी गयी और कुल 13,73,775 वाहन बिके। वाहनों की कुल बिक्री 2.84 फीसदी बढ़कर 19,64,547 इकाई रही। फाडा के अध्यक्ष सी.एस. विघ्नेश्वर बताया कि 15 अगस्त को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) सुधारों की प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी खरीद टाल दी। हालांकि डीलरों के पास पूछताछ काफी आयी, लेकिन वह बिक्री में पूरी तरह से नहीं बदल सकी। उन्होंने उम्मीद जतायी कि 22 सितंबर को जीएसटी सुधारों के लागू होने के बाद बड़ी संख्या में ग्राहक खरीद करेंगे।

स्पाइसजेट ने क्रेडिट सुइस को किया 2.4 करोड़ डॉलर का पूरा भुगतान

नयी दिल्ली। किफायती विमान सेवा कंपनी स्पाइसजेट ने मई 2022 में दोनों पक्षों के बीच हस्ताक्षरित समझौते की शर्तों के अनुरूप स्विटजरलैंड के निवेश बैंक क्रेडिट सुइस को 2.4 करोड़ डॉलर का पूरा भुगतान कर दिया है। एयरलाइंस ने सोमवार को बताया कि यह एयरलाइन के वर्तमान प्रवर्तक के कार्यकाल से पहले की एक दीर्घकालिक देनदारी थी। स्पाइसजेट के मुख्य व्यवसाय अधिकारी देबोजो महर्षि ने कहा, ह्लइस भुगतान का पूरा होना विरासत में मिली समस्याओं को पूरी तरह से पीछे छोड़ने के हमारे निरंतर प्रयासों में एक और महत्वपूर्ण कदम है। यह समझौता न केवल एक पुरानी देनदारी को समाप्त करता है, बल्कि चुनौतीपूर्ण परिचालन वातावरण के बावजूद प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के हमारे संकल्प और क्षमता को भी प्रदर्शित करता है। स्पाइसजेट आज वित्तीय रूप से अधिक मजबूत, अधिक लचीली और विकास एवं लाभप्रदता पर पूरी तरह केंद्रित है। मई 2022 में निपटान समझौते के निष्पादन की तिथि पर क्रेडिट सुइस/एसआर टेक्निक्स का कुल दावा 4.177 करोड़ अमेरिकी डॉलर था, जिसे दोनों पक्षों ने एक संरचित भुगतान योजना के तहत 2.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर में निपटाने पर सहमति व्यक्त की। यह देनदारी वर्तमान प्रवर्तक द्वारा एयरलाइन का अधिग्रहण करने से पहले उत्पन्न हुयी थी। अब पूर्ण निपटान पूरा होने के साथ स्पाइसजेट ने लंबे समय से चली आ रही वित्तीय तंगी को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया है, जिससे कंपनी के कायाकल्प की यात्रा और भी मजबूत हुयी है।

वनप्लस ने भारत में पेश किया नॉर्ड बड्स 3आर ईयरबड

बेंगलुरु। चीन की प्रौद्योगिकी कंपनी वनप्लस ने सोमवार को नॉर्ड बड्स 3आर ईयरबड भारतीय बाजार में पेश करने की घोषणा की। इस ईयरबड को औरा ब्लू और ऐश ब्लैक रंगों में उतारा गया है, जिनकी कीमत 1,799 रुपये रखी गयी है। इनकी बिक्री आज से वनप्लस.इन, वनप्लस स्टोर ऐप और वनप्लस एक्सपेरियंस स्टोर के अलावा अमेजन, फ्लिपकार्ट, मिंत्रा, क्रोमा, रिलायंस, विजय सेल्स, बजाज इलेक्ट्रॉनिक्स और दूसरे सहयोगी प्लेटफॉर्मों तथा स्टोर पर उपलब्ध होंगे। कंपनी ने बताया कि फिलहाल आमंत्रण कीमत 1,599 रुपये रखी गयी है और कुछ चुनिंदा बैंकों के क्रेडिट कार्ड से खरीदारी करने पर 100 रुपये की अतिरिक्त छूट मिलेगी। नॉर्ड बड्स 3आर का प्लेटाइम 54 घंटे है। इसमें दो माइक हैं, जो एआई नॉइज कैंसिलेशन के साथ आता है।

सर्राफा बाजार में नई ऊंचाई पर सोना, चांदी की भी बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज तेजी का रुख बना हुआ है। आज की तेजी के कारण सोना ने आज एक बार फिर मजबूती के नए शिखर पर अपनी जगह बना ली है। बाजार में आई तेजी के कारण 24 कैरेट सोना 1.08 लाख रुपये के स्तर को पार कर गया है, वहीं 22 कैरेट सोना 1 लाख रुपये के स्तर के काफी करीब पहुंच गया है। सोने की तरह ही चांदी भी आज 1,000 रुपये प्रति किलोग्राम तक महंगा हो गया है।

कीमत में तेजी आने के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज प्रति 10 ग्राम 1,08,460 रुपये से लेकर 1,08,610 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। दूसरी ओर, 22 कैरेट सोना आज 99,350 रुपये से लेकर 99,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी उछाल आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज 1,27,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1,08,610 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 99,500 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,08,460 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 99,350 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,08,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 99,400 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 1,08,460 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 99,350 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 1,08,460 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 99,350 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 1,08,610 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 99,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,08,510 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 99,400 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,08,610 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 99,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं सम्पादक हरिनाथ सिंह * द्वारा टिनटिन प्रिन्टेक प्राइवेट लिमिटेड डी-33 अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया, नादरगंज, लखनऊ से मुद्रित एवं 1/39 प्रथम तल करामत मार्केट निशातगंज, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पर्क-522-4064242
Email: noidarp@gmail.com, therptimes@yahoo.com, 9918735329 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.पी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

सूचना

पाठकों को सुझाव दिया जाता है, कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले स्वयं उचित जाँच-पड़ताल कर लें। समाचार पत्र या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावें की साईं का आश्वासन नहीं देता तथा ऐसे विज्ञापनों पर विश्वास करके किसी भी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि, परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

नवोदय विद्यालय सेवानिवृत्त शिक्षक एवं कर्मचारी सम्मान समारोह- 2025

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। नवोदय परिवार के तत्वावधान में आज होटल लिनेज, गोमती नगर, लखनऊ में 'नवोदय विद्यालय सेवानिवृत्त शिक्षक एवं कर्मचारी सम्मान समारोह- 2025' का भव्य एवं अविस्मरणीय आयोजन संपन्न हुआ। यह आयोजन अपने आप में गौरवशाली रहा, जिसने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता और नवोदय परिवार की एकता को जीवंत किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा नवोदय का प्रेरणादायी गीत हम नवयुग की नई भारती... सामूहिक स्वर में गाकर हुआ। इस मनोहारी शुरुआत ने पूरे समारोह में अनुशासन, ऊर्जा और आत्मीयता का अद्वितीय वातावरण निर्मित किया। यह आयोजन नवोदय विद्यालय परिवार के लिए एक ऐतिहासिक और गरिमामय अवसर रहा, जिसमें नवोदय विद्यालय के सेवानिवृत्त डिप्टी कमिश्नर, असिस्टेंट कमिश्नर, प्राचार्य, पीजीटी-टीजीटी शिक्षक एवं कर्मचारीगण को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से शिक्षक संयोजक जी.पी. मिश्रा (पूर्व उप-प्रधानाचार्य, जेएनवी रायबरेली), उमेश चंद्र बाजपेई (पूर्व उपायुक्त एनवीएस लखनऊ), अशोक कुमार शुक्ला (पूर्व डिप्टी कमिश्नर, एनवीएस लखनऊ), एम.डी. मिश्रा (पूर्व उपायुक्त, एनवीएस लखनऊ), यश कुमार महेश्वरी (पूर्व उपायुक्त, एनवीएस जयपुर), एस.एन. पाठक (पूर्व सहायक उपायुक्त, एनवीएस पटना), डॉ जनार्दन उपाध्याय (सहायक उपयुक्त एनवीएस लखनऊ), अमरनाथ राय (पूर्व प्राचार्य, जेएनवी रायबरेली) सहित अनेक सेवानिवृत्त प्राचार्य, शिक्षक एवं कर्मचारीगण को सम्मानित किया गया। साथ ही, एनवीएस लखनऊ के वर्तमान उपयुक्त बी.के. सिन्हा , सहायक उपयुक्त सुमन कुमार, अर्चना सिंह एवं विमला देवी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे और आयोजन की गरिमा को बढ़ाया। वरिष्ठ शिक्षक संयोजक जी.पी. मिश्रा (पूर्व उप-प्रधानाचार्य, जेएनवी रायबरेली) ने स्वागत भाषण दिया और गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। तत्पश्चात पूर्व उपायुक्त अशोक कुमार शुक्ला ने नवोदय की गौरवशाली यात्रा पर विस्तृत विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्ष की भाषण सभागार में सबसे वरिष्ठतम सम्मानित सदस्य डिप्टी कमिश्नर उमेश चंद्र बाजपेई जी के द्वारा संबोधन किया गया। पूर्व छात्रों की ओर से मा. मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के सचिव सूर्यपाल गंगवार (आईएएस) एवं उत्तर प्रदेश एटीएस के मुखिया पुलिस महानिरीक्षक प्रेम कुमार गौतम (आईपीएस) ने अपने प्रेरक विचार रखे। वहीं डीआईजी/जॉइंट कमिश्नर लॉ एंड ऑर्डर, लखनऊ बबलू कुमार (आईपीएस) ने अपने बचपन से लेकर अब तक की संघर्ष गाथा साझा की और भावुक होकर कहा– आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसका पूरा श्रेय नवोदय विद्यालय और अपने गुरुजनों को देता हूँ। लखनऊ में रियल एस्टेट जगत में विशेष पहचान बनाने वाले अमरावती ग्रुप के श्रीकांत मिश्रा ने कहा कि नवोदय परिवार के साथ उनका भावनात्मक जुड़ाव है और जब भी आवश्यकता होगी वे हर संभव सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में देश-विदेश में नाम कमा चुके पूर्व छात्र-छात्राएँ भी उपस्थित रहे। विशेष रूप से प्रशांत कुमार (आईएएस) (निदेशक, समाज कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश), रईस अख्तर (आईपीएस), अमोल मुकुट (आईपीएस, एसीपी बक्शी का तालाब), विकास पांडेय (एसीपी कृष्णा नगर), राजकुमार सिंह (एसीपी चौक), अनिल कुमार सरोज (एसडीएम), पवन कुमार (एसडीएम), सर्वेश कुमार श्रीवास्तव (सहायक आयुक्त जीएसटी उत्तर प्रदेश), प्रो. डॉ. वीरेंद्र प्रसाद (केजीएमयू), प्रो. डॉ. अविनाश कुमार (केजीएमयू), प्रवीण यादव (सहायक आयुक्त स्टांप), डॉ. मधुसूदन मिश्रा (असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, केजीएमयू लखनऊ), डॉ. तूलिका साहू (प्रोफ़ेसर, एनआईएफटी रायबरेली), अनामिका सिंह (डीजीएम, एसबीआई), सरोज कुमार (डायरेक्टर, मंडी परिषद गोरखपुर), डॉ. उमेश चंद्र (वरिष्ठ फिजिशियन, लखनऊ), पूर्णेन्दु शुक्ला (वरिष्ठ करियर काउंसलर, गोरखपुर) सहित अनेक पूर्ववर्ती छात्र इस अवसर पर उपस्थित रहे। जो पूर्व छात्र समारोह में सम्मिलित नहीं हो पाए, उन्होंने वीडियो संदेशों के माध्यम से अपनी भावनाएँ प्रकट कीं। इनमें प्रमुख रूप से कृष्ण कुमार यादव (पोस्ट मास्टर जनरल, अहमदाबाद), रणविजय वर्मा (महाप्रबंधक, भारतीय रेलवे, नई दिल्ली) और विवेक तिवारी (प्रबंध निदेशक, सत्या माइक्रोफाइनेंस कैपिटल लिमिटेड, नई दिल्ली) शामिल रहे। नवोदय फैमिली वर्ल्डवाइड के संस्थापक सीताराम नारोलिया ने नवोदय परिवार की वैश्विक गतिविधियों एवं आगामी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। समारोह की भावी रूपरेखा और दिशा पर श्री वेद प्रकाश राय ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन बीबीएयू, लखनऊ की आईटी विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. राजश्री पांडेय ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन बॉम्बे हॉट नमकीन के प्रबंध निदेशक अनिल दीप आनंद ने दिया। इस आयोजन को सफल और भव्य बनाने में वेद प्रकाश राय, अनिल दीप आनंद, डॉ. राजश्री पांडेय, हरिशंकर गुप्ता, डॉ. नित्या वर्मा, प्रज्ञा पांडेय, शिवनारायण पाठक, डॉ. अनुराग मिश्रा, एहसान अहमद, रत्नेश मौर्य सहित अनेक पूर्व छात्रों का विशेष सहयोग और योगदान रहा। यह आयोजन गुरुजनों की महिमा और उनके ऋण को सर्वोपरि स्थापित करता है। सभी उपस्थित जनों ने संकल्प लिया कि आने वाले वर्षों में यह आयोजन और भी बड़े स्तर पर किया जाएगा और गुरु-शिष्य परंपरा की यह कड़ी आने वाली पीढ़ियों को सतत प्रेरित करती रहेगी।

अनवरगंज स्वास्थ्य केंद्र में आठ कर्मचारी अनुपस्थित, डीएम ने वेतन काटने का दिया निर्देश

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

कानपुर। उत्तर प्रदेश में कानपुर जिले के जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने सोमवार सुबह अनवरगंज स्थित नगरीय स्वास्थ्य केंद्र का औचक निरीक्षण किया। जहां आठ कर्मचारी अनुपस्थित मिले। इस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी जाहिर करते हुए अनुपस्थित कर्मचारियों का एक दिन का वेतन काटने और संविदा कार्मिकों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने बताया कि सोमवार सुबह 9:30 बजे नगरीय स्वास्थ्य केंद्र अनवरगंज का जायजा लेने पहुंचे। जहां स्वास्थ्य सेवाओं में घोर लापरवाही सामने आई। उपस्थिति पंजिका की जांच में एक स्थायी कर्मचारी और सात संविदा स्वास्थ्यकर्मी अनुपस्थित पाए गए। इनमें बीएचडब्ल्यू शिल्पी सक्सेना, स्टाफ नर्स अंजलि, एएनएम रेनू पांडे, मीना देवी, पुष्पा देवी, अरविंद कुमार, अभिनव तिवारी और मोहित शुक्ला शामिल हैं। जिलाधिकारी ने बताया कि इन सभी अनुपस्थित स्वास्थ्यकर्मियों का एक दिन का वेतन काटने और संविदा कार्मिकों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। इस दौरान एमओआईसी डॉ. दीप्ति गुप्ता ने बताया कि सहायक शोध अधिकारी नम्रता वर्मा वर्तमान में सीएमओ कार्यालय में संबद्ध हैं। इस पर जिलाधिकारी ने संबद्धिकरण के औचित्य की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने लैब की कार्यप्रणाली की भी समीक्षा की। लैब टेक्नीशियन अनुज ने जानकारी दी कि सितंबर माह में अब तक मात्र 14 लोगों ने जांच कराई हैं। इस पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की और जांच संख्या बढ़ाने को कहा। साथ ही उन्होंने उपलब्ध दवाओं का भी अवलोकन कर मरीजों को निर्बाध रूप से दवा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि स्वास्थ्य केंद्रों का मुख्य उद्देश्य आमजन को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है। इस कार्य में किसी प्रकार की ढिलाई स्वीकार्य नहीं होगी।

मॉरीशस के प्रधानमंत्री 12 को करेंगे रामलला का दर्शन

अयोध्या। मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. नवीन चंद्र रामगुलाम 12 सितंबर को अयोध्या में रामलला का दर्शन करेंगे। भारत की उनकी यात्रा कल से शुरू होगी, 11 सितंबर को मॉरिशस के प्रधानमंत्री काशी रहेंगे और 12 सितंबर को विशेष विमान से अयोध्या के महर्षि बाल्मिकी अंतराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरेंगे, वहीं से श्रीराम जन्मभूमि राम मंदिर दर्शन पूजन के लिए जायेंगे। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रतिनिधि के तौर पर अयोध्या जनपद के प्रभारी मंत्री प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही अगवानी करेंगे। डॉ रामगुलाम की आठ दिवसीय यात्रा नौ सितंबर मंगलवार से शुरू हो रही है। तीन दिन पूर्व 5 सितंबर को भूटान के प्रधानमंत्री दाशो शेरिंग तोग़बे अयोध्या की धार्मिक यात्रा पर अयोध्या आकर श्रीराम मंदिर में रामलला का परिवार और सहयोगियों के साथ चार घंटे अयोध्या में रुककर रामलला के दर्शन कर चुके हैं। यह दौरा अयोध्या की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय पहचान का संकेत है। इससे पहले ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भी अपनी धर्मपत्नी के साथ राम मंदिर का दर्शन कर चुके हैं।

संपादक मण्डल

संस्थापक/संरक्षक
संजीव श्रीवास्तव

प्रधान संपादक
हरिनाथ सिंह

सलाहकार संपादक
डॉ एमएए खान आईएएस (रि)
डॉ ओम प्रकाश आईएएस (रि)
आशुतोष रंजन
अनिल तिवारी
आर पी शुक्ल आईएएस (रि)
मेजर के किशोर
हरीशंकर शुक्ल पीपीएस (रि)

स्थानीय संपादक
दिनेश कुमार गर्ग

संपादक समन्वय
अभयानंद शुक्ल

आध्यात्मिक संपादक
राम महेश मिश्र

ब्यूरो चीफ
पीयूष त्रिपाठी

स्टेट कोआर्डिनेटर
विपिन सोनी

संपर्क मुख्यालय
कार्यालय फोन नं.: 0522-4643988
www.rashtriyaprastavana.com
ई-मेल: noidarp@gmail.com

संपर्क कार्यालय
प्रधान कार्यालय: 1/39, प्रथम तल करामत मार्केट, निशातगंज, लखनऊ
प्रशासनिक कार्यालय: 61 ए, मानस नगर, जियामऊ, हज़रतगंज, लखनऊ

तटबंध क्षतिग्रस्त होने पर बढ़ा बाढ़ का खतरा, टूटने पर बिजनौर शहर सहित दर्जनों गांव होंगे प्रभावित

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

बिजनौर। गंगा नदी का उफान बढ़ता देख जिला प्रशासन के हाथ पैर फूल गए हैं । रविवार से ही से पूरा प्रशासन गंगा नदी के बैराज के पास अलेक्स बांध के तटबंध को टूटने से बचाने का भरसक प्रयास कर रहा है। गंगा के बढ़ते बहाव को देखकर आसपास के गांव के लोगों की चिंता बढ़ने लगी है, क्योंकि तटबंध का काफी बड़ा भाग गंगा नदी में समा चुका है। तटबंध को टूटने से रोकने के लिए जिला प्रशासन की टीम के साथ कई गांवों के सैकड़ों लोग दिन-रात लगे हैं। जिलाधिकारी जसजीत कौर, एडीएम वन्या सिंह, उप जिलाधिकारी सदर रितु सिंह मौके पर पहुंच गई हैं। तटबंध को बचाने के लिए जेसीबी की मदद से पत्थरों को गंगा की धारा तक डाला जा रहा है। इसके चलते बालावाली में रेल पुल पर भी खतरा बढ़ गया है , यहां भी गंगा की धारा ने हजारों बीघा जमीन पर कटान कर दिया है। बताया जा रहा है कि अगर तटबंध टूटा तो कई दर्जन गांव प्रभावित होंगे। सिंचाई विभाग के अधिकारियों का कहना है कि 50 मीटर क्षेत्र कटान की जद में है। फिलहाल बड़ी संख्या में मजदूर,जेसीबी, एक पोकलेन, 10 डंपर और ट्रैक्टर ट्रालियां लगाई गई हैं। इस काम में सैकड़ों ग्रामीण भी प्रशासन का पूरा सहयोग कर रहे हैं। क्षेत्र के ग्राम शेफपुर खादर, राजारमपुर,चाहड़ वाला, कुंदनपुर टीम आदि गांव की सैकड़ों बीघा फसलें पानी में डूब गई हैं। मंडावर क्षेत्र में गलखा देवी मंदिर स्थित जाहर दीवान मंदिर से गंगा मात्र 2 मीटर दूर है। आसपास के गांवों को बचाने के लिए गंगा के कटान रोकने हेतु पत्थरों के एक जाल के जरिए बंधा लगाया गया था जो गंगा की धारा से क्षतिग्रस्त हो गया जिसके कारण मिर्ज़ापुर खादर के ग्रामीणों में भय का माहौल बना हुआ है म्इस मौके पर जिलाधिकारी जसजीत कौर,सदर विधायक सूची चौधरी, पूर्व सांसद भारतेंदु सिंह ने भी स्थिति का जायजा लिया है।

कायस्थ वाहिनी 'अन्तर्राष्ट्रीय' का जिला व प्रदेश स्तर के पदाधिकारियों का शपथग्रहण समारोह आयोजित

- कायस्थों की एकजुटता और भगवान श्री चित्रगुप्त को सर्वसमाज में स्थापित करना वाहिनी का उद्देश्य: पंकज भइया

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

बस्ती। कायस्थ वाहिनी 'अन्तर्राष्ट्रीय' का जिला व प्रदेश स्तर के पदाधिकारियों का शपथग्रहण समारोह ब्लाक रोड स्थित एक होटल के सभागार में हुआ। इसमें बस्ती जनपद के साथ ही गैर जनपदों व प्रान्तों के कायस्थों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भगवान श्रीचित्रगुप्त के पूजन से हुआ। वाहिनी प्रमुख पंकज भइया ने कहा कायस्थों की एकजुटता और भगवान श्री चित्रगुप्त को सर्वसमाज में स्थापित करना वाहिनी का उद्देश्य है। उन्होने कहा देश की आजादी के बाद से लेकर अब तक लगातार कायस्थों को हाशिये पर करने का षडयंत्र किया गया, यहां तक कि भगवान श्री चित्रगुप्त को सर्वसमाज में स्थापित नही होने दिया गया। वाहिनी इन्ही उद्देश्यों को लेकर आगे बढ़ रही है और भारत के कई राज्यों में यह संदेश पहुचाने में सफल रही है। पंकज भइया ने कहा कायस्थ समाज जागृत हो चुका है। समाज पर होने वाले हर अत्याचार और शोषण का हम जवाब देंगे। उन्होने शपथग्रहण समारोह में आये अतिथियों का स्वागत और अभिनंदन करते हुये उनके प्रति आभार जताया। शपथग्रहण समारोह को प्रमुख रूप से सुरेन्द्र मोहन वर्मा, कौशल किशोर श्रीवास्तव, डा. ए.सी. श्रीवास्तव, मनमोहन श्रीवास्तव काजू, अभिजीत सिन्हा आदि ने सम्बोधित किया। इस अवसर पद वाहिनी की नारीशक्ति, प्रदेश इकाई, मण्डल इकाई, जनपद इकाई, चिकित्सा प्रकोष्ठ, विधि प्रकोष्ठ, व्यापार प्रकोष्ठ, यूथ ब्रिगेड, तहसील इकाई के पदाधिकारियों को पद और दायित्वों की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन कैलाश मोहन श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से कमलेश श्रीवास्तव, मनीष श्रीवास्तव, प्रीती श्रीवास्तव, सारिका श्रीवास्तव, भावना श्रीवास्तव, सुमन श्रीवास्तव, पूर्णिमा श्रीवास्तव, पुष्पा श्रीवास्तव, राजकुमार सिन्हा, वीके श्रीवास्तव, श्रवण कुमार श्रीवास्तव, मुकेश श्रीवास्तव, अशोक श्रीवास्तव, रंजीत श्रीवास्तव, राजेन्द्र श्रीवास्तव, हरीश्याम श्रीवास्तव, रणविजय सिंह, सुबाष श्रीवास्तव, अखिलेन्द्र श्रीवास्तव, अतुल श्रीवास्तव, रत्नेश श्रीवास्तव, आशुतोष श्रीवास्तव, अमित श्रीवास्तव, डा. शरद श्रीवास्तव, कुंवर कुलदीप, सुमित श्रीवास्तव, आलोक अवस्थी, अजय श्रीवास्तव, विनायक श्रीवास्तव, मनीष शंकरहेमन्त श्रीवास्तव, सौरभ कुमार बोस, रणधीर सिंह, उमेश श्रीवास्तव, रसाल श्रीवास्तव, अंकित श्रीवास्तव, अभिजीत सिन्हा आदि मौजूद रहे।

संगीतमय हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और भजन संगीत के साथ मनाई गयी बाबा नीब करोरी जी महाराज की पुण्यतिथि

राष्ट्रीय प्रस्तावना के लिए जयपुर से राजस्थान प्रभारी केदार सिंह की रिपोर्ट....

जयपुर, राजस्थान। वैसे तो आज देश विदेश में अनंत चतुर्दशी के उपलक्ष्य में बाबा नीब करोरी जी महाराज की पुण्य तिथि मनाई जा रही है और जहा पर हनुमान चालीसा, सुन्दर कांड एवं संगीतमय भजनों का आयोजन चल रहा है चाहे वृन्दावन हों,लखनऊ हो, हरदोई हरपाल पुर रानीखेड़ा धाम हों,दिल्ली हो, केची धाम हो या बमनिया गुजरात हो के अलावा अब राजस्थान के एक मात्र मंदिर अनोखी धाम पत्रकार कॉलोनी मानसरोवर में भी बाबा जी की पुण्य तिथि बड़े जोश ओर उल्लास से संगीतमय हनुमान चालीसा, सुंदरकांड और भजन संगीत के साथ मनाई गयी, भक्तों ने तन. मन और धन सै सहयोग कर बाबा जी के चरणों के दर्शन किये जो साल में एक बार होते हो! हर कोई भक्त अपनी अपनी श्रद्धा सै कोई न कोई सेवा देता है , फूल मला की सेवा, टेंट की सेवा, म्यूजिक सिस्टम की सेवा, पोषक की सेवा और भंडारे की, साफ सफाई की सेवा सेवा इत्यादि इत्यादि। आज हमने अनोखी धाम में कई भक्तों सै बात की और उनके अनुभव, और बाबा जी के चमत्कारों के बारे में जाना, कई भक्त तो अपनी श्रद्धा और भाव प्रगट नहीं कर पाए और उनकी आँखों सै अश्रु धारा बहने लगी और भाव विभोर होकर नृत्या करने लगे कहते है कि अब तो बाबा जी ने यहाँ आकर सभी के जीवन में चार चाँद लगा दिए है और हर भक्त बाबा जी कि सेवा में लगा हुआ है अलग अलग टीम बनायीं गयी है, बच्चों कि टीम, पुरुषों की टीम, महिलाओं की टीम जो अलग अलग बाबा जी की सेवा में लगी हुई हैं। धन्य है जयपुर के पत्रकार कॉलोनी के लोग नित्या नया भक्तिमय आनंद लें रहे है....अनोखी धाम में बाबा जी स्वयं के साथ साथ हनुमान जी के विग्रह के रूप में भी विराजमान है और अपनी छवि सै सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रहे है और बहुत सारे भक्तों की जिंदगी ही बदल दी है जो अपनी श्रद्धा सै नाथ मस्तक होकर बाबा जी के दर्शन लाभ लें रहे है जो अपने कर्मो और शोभाग्य सै मिलते है। बाबा जी के परम भक्त श्री विनय शर्मा, गौरव शर्मा, अक्षत माथुर, मुकेश जी, राजीव जी, अंकुर जी, बालकिशन दाधीच एयर पुजारी ज्ञाना नन्द जी और श्री अमोल झालानी जी सै वार्ता कर बाबा जी की पुण्य तिथि में सम्मलित होकर शोभाग्य प्राप्त हुआ।

पितृपक्ष : पूर्वजों की स्मृति में तुलसी घाट पर हुआ पौधा वितरण

- 15 दिवसीय अभियान के पहले दिन प्रो. युगल किशोर मिश्र की स्मृति में किया गया पौधा वितरण

राष्ट्रीय प्रस्तावना न्यूज नेटवर्क

वाराणसी। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर पितृ पक्ष के पहले दिन सोमवार को पूर्वजों की स्मृति में तुलसी घाट पर पौधा वितरण किया गया। सामाजिक संस्था जागृति फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में पहले दिन जगतगुरु रामानंदाचार्य विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान के पूर्व कुलपति एवं संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति प्रो. युगल किशोर मिश्र की स्मृति में पौधा वितरण किया गया। मुख्य अतिथि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के धर्म विज्ञान संकाय में प्रोफ़ेसर एवं वैदिक विज्ञान समाकलन केंद्र के पूर्व निदेशक प्रो. उपेंद्र कुमार त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि लोक भूषण साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश मिश्रा, भारतीय किसान महासंघ के महानगर अध्यक्ष प्रदीप कुमार मिश्रा, समाजसेवी अरविंद मिश्रा, रामेश्वर मठ के प्रबंधक वरुणेश चंद दीक्षित, स्वामीनारायणा नन्द तीर्थ वेद विद्यालय के प्राचार्य डॉ जयंती पति त्रिपाठी की मौजूदगी में तुलसी, बेला, गेंदा, पीपल, बरगद, आम के पेड़ का वितरण गंगा स्नान करने आए लोगों में किया गया। इस अवसर पर डॉ उपेंद्र कुमार त्रिपाठी ने कहा कि पितृ पक्ष में पूर्वजों की स्मृति में पौधा वितरण करना बहुत ही पुनीत कार्य है। पूर्वजों के नाम पर सभी को एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। फाउंडेशन के महासचिव रामयश मिश्र ने बताया कि पूर्वजों की स्मृति में 15 दिवसीय पौधा वितरण एवं पौधारोपण अभियान का शुभारंभ आज से किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि हम कम से कम अपने पूर्वजों की स्मृति में ही एक पौधा लगाए, ताकि हमारी धरती हरी भरी रहे और पर्यावरण सरंक्षित रहे।